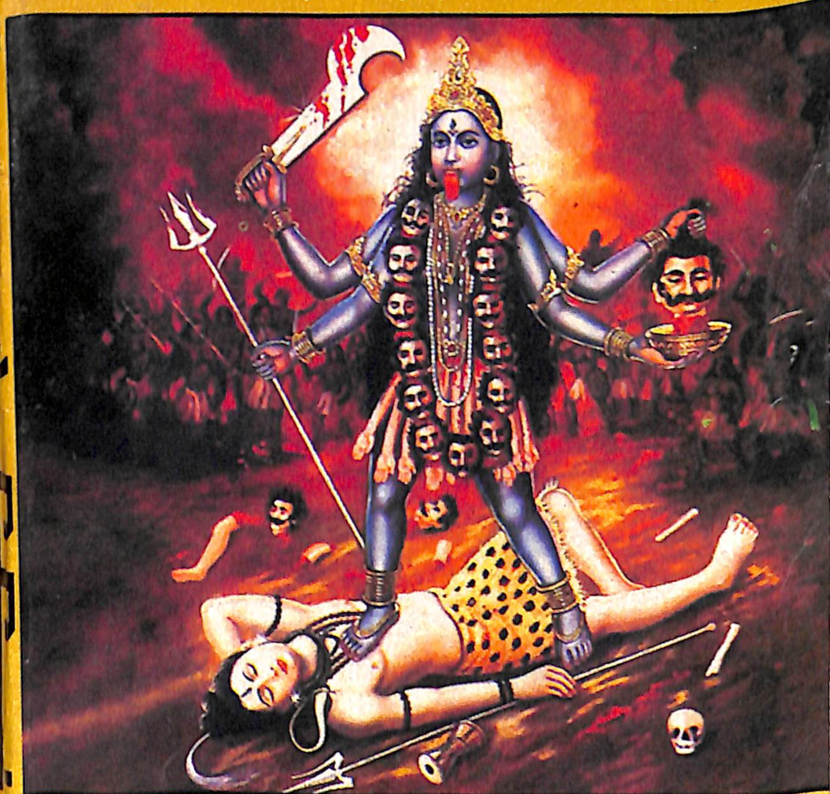
सी०एम०श्रीवास्तव

चमत्कारी मंत्र और सिद्धियां



तंत्र–मंत्र का ज्ञान प्रदान करने वाली सरल भाषा में लिखी गई एक ज्ञानवर्धक पुस्तक

30/-

चमत्कारी मंत्र और सिद्धियां

तंत्र-मंत्र का ज्ञान प्रदान करने वाली
सरल भाषा में लिखी गयी एक
ज्ञानवर्द्धक पुस्तक

लेखक :
सी०एम० श्रीवास्तव

प्रकाशक :
मुन्नू पॉकेट बुक्स
अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला ग्राउण्ड
के सामने, दिल्ली रोड, मेरठ-2

पुस्तक : चमत्कारी मंत्र और सिद्धियाँ

प्रस्तुति : सी०एम० श्रीवास्तव

प्रकाशक :

चुन्नू पॉकेट बुक्स

अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला ग्राउण्ड के सामने,
दिल्ली रोड, मेरठ-2 ✆ (0121) 3257035, 2400092

कम्प्यूटरीकृत पृष्ठसज्जा :

सरस्वती कम्प्यूटर्स, जागृति विहार, मेरठ।

मुद्रक :

चन्द्रा ऑफसैट, मेरठ।

CHAMATKARI MANTRA
AUR SIDDHIYAN

By

C.M. SRIVASTAVA

मूल्य : तीस रुपये मात्र [Rs. 30/-]

विषय सूची

१

रहस्यमय मंत्र विज्ञान

संसार की रचना का पंचतत्त्वों को आधार माना है। इस बात को हम सभी जानते हैं कि हमारे प्राचीन ऋषियों ने इस आधार को ढूंढकर मानव-जीवन को बड़ा सुगम बना दिया था। वेदों का आविर्भाव भी इसी अंतर्दर्शन के कारण हुआ। आज यह विज्ञान सम्मत सत्य है संसार की रचना पंचतत्त्वों से हुई है। इसी का आधार बनाकर हमारी भाषा बनी और विकसित हुई। भाषा में पांच वर्ग हैं और प्रत्येक वर्ग में पांच अक्षर हुए। स्वर भी पांच हैं तथा उन्हें उच्चारण करने के भी पांच स्थान हैं, जैसे— कंठ, तालू, मूर्धा, दंत और होठ! लोक में जिस प्रकार एक तत्त्व का दूसरे तत्त्व में प्रवेश हो जाता है, उसी प्रकार प्रत्येक वर्ग के पांच अक्षरों की संख्या दूसरे तत्त्वों की उपस्थिति का प्रतीक है। प्रधान तत्त्व का प्रतीक वह वर्ग होता है, इसलिए उसकी मुख्यता के साथ अन्य गौण तत्त्वों का प्रतिनिधित्व शेष अक्षरों पर निर्भर करता है, जैसे— हम "ह" कार बनने वाले शब्दों को लें; हस्त, हस्ती, सिंह और महान् आदि। इन शब्दों में "ह" कार का योग है। "ह" आकाश तत्त्व का प्रतीक है, इसी कारण "ह" कार के योग से बने इन शब्दों में आकाश की-सी बुलंदी और महिमा किसी-न-किसी रूप में विद्यमान है।

ऋषियों ने अपने योग-बल-अंतर्दृष्टि से शब्द के महत्त्व को पहचाना और इसे ब्रह्म कहकर, इसकी उपासना विधि निकाली। शब्द अच्छा है या बुरा, उसे ब्रह्म मानकर उसकी उपासना करना ही वहां ध्येय माना है, क्योंकि इससे शब्द मात्र के लिए समबुद्धि बनी रहती है। शब्द को मंत्र का आधार मानने का मुख्य कारण यह भी है कि यह अन्य तत्त्वों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली तथा समर्थ है। संभवतः शास्त्रकारों ने इसकी इसी असीम सामर्थ्य को देखकर ही इसे "ब्रह्म" कहा है। शब्दों के उच्चारण से जो कंपन पैदा होते हैं, वो ईश्वर-तत्त्व के माध्यम से आकाश में परिभ्रमण करके कुछ ही क्षणों में अपना चक्र समाप्त कर लेते हैं और अपने साथ अनुकूल कंपनों को यात्रा करते समय मिला लेते हैं (क्योंकि अनुकूलता में एकता का सिद्धान्त सर्वत्र है)। इन कंपनों का एक पुंज बन जाता है। यात्रा से लौटते-लौटते वह अपनी शक्ति को काफी बढ़ा लेते हैं। यह कार्य इतनी तीव्रता और सूक्ष्मता से होता है कि साधक को यह अनुभव ही नहीं हो पाता है कि शब्द के उच्चारण से यह चमत्कार कैसे उत्पन्न हो रहे हैं।

व्यवहार में भी हम शब्दों के चमत्कार देखते हैं। भारी बूटों को पहन कर चलने से एक प्रकार की ध्वनि उत्पन्न होती है और साथ ही "चर्र-चर्र" के शब्द भी गुंजायमान होते हैं। आज भी सैनिकों को पुल के ऊपर से कदम मिलाकर नहीं चलने दिया जाता है। विज्ञान ने शब्द और ध्वनि के प्रभाव का भिन्न-भिन्न प्रकार से परीक्षण करके देखा है। शब्द की सामर्थ्य सभी भौतिक शक्तियों से बढ़कर सूक्ष्म और विभेदन क्षमता रखती है।

इस बात की निश्चित जानकारी भारतीय तत्त्वदर्शियों ने कर ली थी, तब ही उन्होंने मंत्र का विकास किया था।

हम जो कुछ भी बोलते हैं, उसका प्रभाव व्यक्तिगत तथा समष्टिगत रूप-से सौर-ब्रह्मांड पर पड़ता है। जिस प्रकार जल में फेंके गए कंकर से उत्पन्न लहरें काफी दूर तक जाती हैं, उसी प्रकार हमारे मुख से निकला हुआ शब्द आकाश के सूक्ष्म परमाणुओं में कंपन उत्पन्न करता है। इन्हीं कंपनों से लोगों में अदृश्य प्रेरणाएं जागृत होती हैं तथा मस्तिष्क में विचार न जाने कब आ जाते हैं, हम समझ नहीं पाते; किन्तु मंत्रविद् (मांत्रिक) जानते हैं कि यह सब उन सूक्ष्म कंपनों का चमत्कार है जो मस्तिष्क के ज्ञान कोषों से टकराकर विचार के रूप में प्रकट हो उठते हैं। सहजता की दृष्टि से यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि मंत्र ध्वनि-प्रधान साधना है। इसमें ध्वनि-विज्ञान के गूढ़ और सूक्ष्मतम सिद्धान्त निहित हैं। "नादब्रह्म" की उक्ति का अर्थ यही है कि "नाद" अर्थात् ध्वनि ही "ब्रह्म" है। इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि ईश्वर का अवयक्त रूप ध्वनि है। यही ध्वनि अथवा नाम "ब्रह्म" है, अर्थात् मंत्र ही "ब्रह्म" है।

हमारे मुख से जो भी ध्वनि उच्चारित होती है, वो प्रत्येक स्थिति में कोई-न-कोई प्रभाव अवश्य उत्पन्न करती है। मंत्रों की रचना का मूलाधार "ध्वनि" है। जब हम शब्द की शक्ति पर विचार करते हैं तो अनायास ही हमारा ध्यान भारतीय आत्मवादी ज्ञान मंत्र की ओर जाता है। भारतीय शास्त्र मंत्र शक्ति के चमत्कारों से भरे पड़े हैं। शास्त्रों में तो मंत्र शक्ति की अपार महिमा का वर्णन किया गया है। आज भी बहुत से लोग इस मंत्र शक्ति

के द्वारा अपनी कामना-सिद्धि करते हैं। भारतीय जनसमुदाय का मंत्र शक्ति के प्रति अटल विश्वास और श्रद्धा है।

प्राचीन ऋषियों के मतानुसार "शब्द" में अपार "शक्ति" छिपी रहती है, क्योंकि यह आकाश तत्त्व से संबंधित है और आकाश तत्त्व अति सूक्ष्म है। स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म की शक्ति अधिक होती है। भारतीय ऋषियों ने स्थूल की बजाय सूक्ष्मतम तत्त्व (आकाश में उत्पन्न शब्द) पर अनुसंधान किए और सारे विश्व में अपनी विद्वता की पताका फहराई। भारतीय शास्त्रों में वर्णित अग्निबाण और अग्निरथ जैसे अस्त्र-शस्त्रों को लोग केवल मस्तिष्क की कल्पना मात्र समझते थे, किन्तु आज वो विज्ञान की खोजों के अनुसार सत्य सिद्ध हो रहे हैं। महाभारतकाल में प्रयोग किये गए बाणों की शक्ति आज के अणुबमों से भी अधिक घातक और विनाशक थी और केवल कुछ मंत्रों के उच्चारण मात्र से ही यह कार्य संभव हो जाता था। मंत्र की शक्ति का प्रमाण इस बात से भी दिया जा सकता है कि पीलिया जैसा घातक रोग आज की आधुनिक चिकित्सा के प्रयोग से भी महीनों में जाकर दूर होता है, किन्तु मात्र कुछ मंत्रों द्वारा झाड़ देने से कुछ दिनों में ही जड़ से समाप्त हो जाता है। एक इसी बात से ही मंत्र की सत्यता का पता चल जाता है। सर्प के काटने पर उसका विष शरीर में तेजी से फैलने लगता है। आज की सफलतम चिकित्सा में भी उसका कोई विशेष उपचार नहीं है। चिकित्सक केवल व्यक्ति का जीवन बचाने का प्रयास करते हैं; किन्तु मंत्र-जप के द्वारा सर्प-विष का प्रभाव शरीर से शीघ्र समाप्त कर दिया जाता है। वर्तमान में भी मंत्रशक्ति एवं उनकी सत्यता

के ऐसे सैकड़ों उदाहरण दिए जा सकते हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने हनुमान बाहुक के जप से ही अपने शरीर का ताऊन रोग दूर किया था तथा संस्कृत के महाकवि पदमाकरजी ने गंगालहरी नामक स्त्रोत के पाठ से, कोढ़ से मुक्ति प्राप्त की थी। मंत्रों के जप से जो ध्वनि उत्पन्न होती है, उसका सीधा प्रभाव शरीर के बजाए हृदय पर पड़ता है, जिसके कारण रोगी रोगमुक्त हो जाता है।

फ्रांस के एक वैज्ञानिक मिस्टर क्यूवे ने ध्वनि के विभिन्न प्रयोग किए और ध्वनि द्वारा हृदय व मस्तिष्क पर सीधा प्रभाव डालकर गठिया और लकवे के रोगी रोगमुक्त किए। इसी प्रकार पश्चिम के डॉक्टर पौल ने ध्वनि विज्ञान से क्षय, रक्तचाप तथा मियादी बुखार के रोगों की सफल चिकित्सा की थी। हमारे प्राचीन शास्त्रों में दैवी चिकित्सा का बहुत महत्त्व बतलाया गया है। मंत्र, यंत्र और तंत्र द्वारा की जाने वाली चिकित्सा "दैवी चिकित्सा" मानी जाती है। यंत्र, मंत्र आदि सब विद्युत के रूपांतर हैं। विद्युत वज्र है और संसार का कोई भी पदार्थ वज्र से अभेद्य नहीं है।

मंत्रों के मूल में देवी-देवताओं, पीर-पैगंबरों आदि का आह्वान, उनसे वार्तालाप, निवेदन, स्तुति और याचना करने की विधि-भावना निहित रहती है। किन्तु यह प्रयास (मंत्र-साधना) तभी सफल होता है। जब मंत्र-जप की ध्वनि संतुलित हो और जप-संबंधी अन्य नियमों का विधिवत् पालन किया जा रहा हो, क्योंकि नियमों की उपेक्षा करके किसी भी कार्य में सिद्धि की प्राप्ति नहीं की जा सकती।

यदि कोई यह प्रश्न करे कि मंत्र किसे कहते हैं ?

तो इसका उत्तर केवल यही है कि नियत ध्वनियों के समूह को मंत्र कहते हैं। मंत्र वह विज्ञान या विद्या है, जिससे शक्ति का उद्भव होता है। जहां मंत्र का विधिपूर्वक प्रयोग किया जाता है, वहां शक्तियों का निवास बना रहता है। मंत्र-साधन द्वारा देवी-देवता (पीर-पैगंबर, पिशाच, डंकिनी) अपने वश में किये जा सकते हैं तथा मंत्र-योग की सिद्धि-प्राप्त साधक को संसार का समस्त वैभव सुलभ हो जाता है। कुछ पाखंडी मांत्रिकों ने छल व प्रपंच का जाल फैलाकर, अपनी स्वार्थ-पूर्ति के लिए एक महान् विद्या के प्रति लोगों के मन में घृणा व अविश्वास पैदा अवश्य करवा दिया, किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि मंत्रों में शक्ति नहीं है या ये केवल वाग्जाल हैं। मंत्र आज भी विद्यमान हैं, मंत्रों में आज भी पहले जैसी शक्ति है; यदि चाहिए तो केवल सिद्ध महापुरुष की छत्रछाया में साधना करने वाला ! श्रद्धा, भक्ति और विश्वास से की गई साधना कभी निष्फल नहीं जाती। मंत्रों का एक स्वतंत्र विज्ञान है, तथा मंत्रों से होने वाले लाभ अचानक ही किसी कि कृपा से प्राप्त नहीं हो जाते, वरन् उनके द्वारा जो वैज्ञानिक प्रक्रिया अपने आप मंत्रवत् होती है, उससे लाभ होता है।





मंत्र साधक एवं मंत्र साधना

एक मंत्र साधक के सामने सबसे बड़ी समस्या यह आती है कि पहली बार वो किस मंत्र की साधना प्रारम्भ करे ? साधक की इस समस्या को दूर करने के लिए हमने मंत्रों के दस विभाग किए हैं। इन विभागों में साधक को मंत्र का निर्णय करने में सुविधा होगी और उसे यह भी मालूम हो जाएगा कि किस कारण हेतु उसे कौन-सा मंत्र सिद्ध करना चाहिए।

१. **शांति**—जिस मंत्र से रोग, ग्रहपीड़ा, उपसर्ग शांति व भयशमन हो।

२. **पौष्टिक**—जिस मंत्र के द्वारा धन, धान्य, सौभाग्य, यश व कीर्ति आदि में वृद्धि हो।

३. **मोहन**—जिस मंत्र के द्वारा मनुष्य, पशु-पक्षी मोहित हों। इसे सम्मोहन भी कहते हैं। मिस्मेरिज्म और हिप्नोटिज्म आदि प्रायः इसी के अंग हैं।

४. **उच्चाटन**—जिसके द्वारा मनुष्य पशु-पक्षी अपने स्थान से भ्रष्ट हों, इज्जत और मान-सम्मान खो दें।

५. **वशीकरण**—जिस मंत्र के प्रयोग से अन्य व्यक्ति को वश में किया जा सके। मांत्रिक जैसा कहे, व्यक्ति वैसा ही करे।

६. **आकर्षण**—जिस मंत्र के द्वारा दूर रहने वाला मनुष्य, पशु-पक्षी आदि अपनी तरफ आकर्षित हो, अपने निकट आ जाए।

७. **स्तंभन**—जिस मंत्र के द्वारा मनुष्य, पशु-पक्षी आदि जीवों की गति, हलचल का निरोध हो।

८. **जृंभण**—जिस मंत्र के द्वारा मनुष्य, पशु-पक्षी प्रयोग करने वाले की सूचनानुसार कार्य करें।

९. **विद्वेषण**—जिस मंत्र के द्वारा दो व्यक्तियों (मित्रों के) बीच फूट पड़े, सम्बन्धों का विच्छेदन हो जाए।

१०. **मारण**— जिस मंत्र के द्वारा अन्य जीवों की मृत्यु हो जाए।

उपर्युक्त मत्र-यंत्र और तंत्र के क्षेत्र में भी प्रयुक्त होते हैं।

कुलाकुल-चक्र की रचना

मंत्र साधक जिस मंत्र की साधना करना चाहता हो, उसका तथा साधना करने वाले का पहला अक्षर यदि दोनों एक ही कुल के हों, तो मंत्र शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है और निश्चित फल देने वाला होता है। मंत्र और मंत्र-सिद्धि को प्राप्त करने वाले की प्रकृति में समानता होने से निश्चित सफलता मिलेगी। यदि उनमें प्रकृति-साम्य न हो, तो फिर प्रकृति-मैत्री का अवलोकन करना चाहिए। निम्न चक्रानुसार पृथ्वी आदि पांचों तत्त्वों में, किन-किन तत्त्वों की, किस-किस तत्त्व के साथ मित्रता है, यह अवश्य देख लेना चाहिए। मंत्र के साधक और साध्य मंत्र के अक्षरों में यदि प्रकृति शत्रुता हो, तो ऐसे मंत्र की साधना नहीं करनी चाहिए; क्योंकि स्वकुल से शत्रुता रखने के कारण न तो मंत्र पूर्णतया सिद्ध ही हो पाएगा और न ही श्रेष्ठ प्रभाव वाला रहेगा।

चक्र-रचना के लिए "अ" से "क्ष" तक के पचास वर्णों को पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, इन पांच तत्त्वों में बांटा गया है तथा इन पांचों तत्त्वों में पृथ्वी, जल आदि तत्त्वों की आकाश तत्त्व के साथ मैत्री (मित्रता) है और वायु तत्त्व का पृथ्वी तत्त्व एवं अग्नि तत्त्व के जल तत्त्व और पृथ्वी तत्त्व शत्रु हैं।

तत्त्व	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश
मित्र	आकाश जल	आकाश पृथ्वी	आकाश वायु	आकाश अग्नि	अन्य चारों तत्त्व
शत्रु	वायु	अग्नि	जल	पृथ्वी	—
वर्ण	उ ऊ ओ ग ज ड न ब ल़ छ	ऋ ॠ ओ घ झ ढ ध भ व स	इ ई ऐ ख छ ठ थ फ र ६:	अ आ ए क च ट त प य ष	ल लृ अं ङः त्र ण न म श ह

विशेष—एक ही कार्य के लिए जैसे अनेक उपाय होते हैं और जैसे एक ही रोग के लिए कई प्रकार की औषधियां होती हैं, वैसे ही एक साधना के लिए अनेक मंत्र होते हैं। अतः यह चिंता नहीं करनी चाहिए कि मंत्र का निर्णय भला किस प्रकार संभव होगा ?

साधना करने वाले को अपनी जन्मराशि अथवा प्रचलित नामराशि के अनुसार, अपनी राशि और मंत्र के प्रथमाक्षर की राशि की गणना करने के पश्चात् ही मंत्र ग्रहण करने अथवा सिद्ध करने का प्रयास करना चाहिए, एक श्रेष्ठ मांत्रिक बनने के लिए इस प्रकार से निर्णय लेना अत्यंत आवश्यक है।

राशि	अक्षर
मेष	अ आ इ ई
वृषभ	उ ऊ ऋ
मिथुन	ॠ ऌ ॡ
कर्क	ए ऐ
सिंह	ओ औ
कन्या	अं अः श ष स ह ल क्ष
तुला	क ख ग घ ङ
वृश्चिक	च छ ज झ ञ
धनु	ट ठ ड ढ ण
मकर	त थ द ध न
कुंभ	प फ ब भ म
मीन	य र ल व

इस प्रकार अपने नाम के अक्षर से मंत्राक्षर के कोष्ठक तक गिनें। यदि उसमें मंत्राक्षर चार, आठ अथवा बारह संख्या में आता हो, तो उसे छोड़ दें। यदि एक, पांच और नौ संख्या में आए तो वह शीघ्र ग्रहण किया जा सकने वाला, शीघ्र सिद्ध हो जाने वाला श्रेष्ठफलदाता होता है। इसके अतिरिक्त तीन, सात, ग्यारह संख्या वाले मंत्राक्षर भी सम माने गए हैं।

इसी प्रकार जन्मकुंडली के बारह भावों में क्रमशः

तन, धन, भाई-बंधु, मित्र, पराक्रम, संतान, शत्रु, स्त्री, मृत्यु, धर्म कर्म, आय और व्यय के आधार पर मंत्र का चयन किया जाता है। जिस भाव में जो स्थान माना गया है, उस मंत्र के जप से वही सिद्धि प्राप्त होती है। जो मंत्र पृथ्वी, अग्नि और आकाश तत्त्व से युक्त होते हैं, वे "आग्नेय" तथा जो जल और वायु तत्त्व से युक्त होते हैं "सौम्य" कहलाते हैं। आग्नेय मंत्रों के साथ "नमः" (अंत में) लग जाने पर वे सौम्य बनते हैं और सौम्य मंत्रों के साथ "फट्" (अंत में) लग जाने पर वे आग्नेय बन जाते हैं। कहीं-कहीं पर इन्हें "सौर" और "सौम्य" नाम से भी जाना गया है। यह ध्यान रखने वाली बात है कि सौर मंत्र पुरुष देवता के लिए और सौम्य मंत्र स्त्री देवता (देवी) के होते हैं।

किन्तु यह सभी मंत्रों के लिए निश्चित नियम न होकर एकांकिक नियम कहा जा सकता है, क्योंकि अनेक मंत्र इसके अपवादस्वरूप भी प्राप्त होते हैं। आग्नेय अथवा सौर मंत्र उग्र कर्म के लिए प्रभावी हैं। अर्थात् मारण-उच्चाटन-विद्वेषण जैसे कर्म के लिए ये श्रेष्ठ माने गए हैं। जबकि सौम्य मंत्र शांति कर्म (दूसरों को लाभ पहुँचाने वाले) के लिए श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार "कूट" और "अकूट" मंत्र के दो प्रकार यह भी हैं— जिस मंत्र में अनेक वर्ण परस्पर संयुक्त हों वह कूटमंत्र और जिसमें कूट के रूप में वर्ण संयोग न होकर सामान्य वर्णयोजना हो, वह अकूटमंत्र कहलाता है। इसे इस प्रकार भी समझा जा सकता है—

एक या एक से अधिक वर्णों के मिश्रण से बने हुए मंत्र कूटमंत्र कहलाते हैं। यह पद्धति ओम् (ॐ) मंत्र के

द्वारा सरलता से समझी जा सकती है। "अ+उ+म्" इन तीन वर्गों के योग से "ओम्" बना है, जिसे लिपि की दृष्टि- से यंत्र अथवा मूर्ति का आकार देकर ॐ बना दिया है। इसमें "अ" (अकार) विष्णु के अर्थ को, "उ" (उकार) ब्रह्म के अर्थ को तथा "म" (मकार) शिव के अर्थ को प्रकट करता है। अर्थात् इस एक कूटवर्ण से विष्णु, ब्रह्मा और महेश (शिव) रूप तीनों देवों का बोध होता है।

जिस प्रकार बीज में सूक्ष्म रूप-से वृक्ष छिपा हुआ रहता है, किन्तु वह दिखाई नहीं देता, फिर भी उचित क्षेत्र, वातावरण, जल एवं खाद आदि से संपर्क होने पर वह क्रमशः अंकुर, पत्र-पुष्प व फल आदि से युक्त हुआ एक विशाल वृक्ष बन जाता है, उसी प्रकार बीजाक्षरों में सूक्ष्म रूप-से शक्ति छिपी हुई रहती है। ऐसे बीजाक्षर अनेक हैं, जो कि मंत्र-विज्ञान के एक महत्त्वपूर्ण भाग हैं। जिस प्रकार रासायनिक द्रव्यों की अपनी-अपनी विशिष्ट शक्ति होती है और परस्पर-मिश्रण नवीन शक्ति को उत्पन्न करता है, उसी प्रकार बीजाक्षरों की स्वतंत्र शक्ति और उनके मिश्रण से उत्पन्न विशिष्टशक्ति जपध्यान और अनुष्ठानादि से प्राप्त होती है।

प्राचीन शास्त्रों में वर्णित है कि सर्वप्रथम जब ईश्वर की इच्छा से समष्टि- मिली-जुली प्रकृति का पहला स्पंदन हुआ तो उससे "ओंकार" की उत्पत्ति हुई और दूसरी बार प्रकृति का व्यष्टि-एकांग रूप में स्पंदन हुआ, तो क्रमशः पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार से आठ बीजों की उत्पत्ति हुई। सर्वप्रथम तीन बीज मंत्र "अ, उ, म्" उत्पन्न हुए। तदंतर गुरुबीज, रमाबीज,

कामबीज, योगबीज, तेजोबीज, शांतिबीज तथा रक्षाबीज; ये आठ बीज उत्पन्न हुए जो बीज मंत्रों में प्रधान माने गए हैं, जिन्हें निम्न रूप-से प्रत्येक साधक को समझ लेने चाहिए—

१. गुरुबीज — आ + ए + म् = ऐँ
२. शक्तिबीज — ह + र् + ई + म् = ह्रीँ
३. रमाबीज — श् + र् + ई + म् = श्रीँ
४. कामबीज — क् + ल् + ई + म् = क्लीँ
५. योगबीज — क् + र् + ई + म् = क्रीँ
६. तेजोबीज — ट् + र् + ई + म् = ट्रीँ
७. शांतिबीज — स् + र् + ई + म् = स्त्रीँ
८. रक्षाबीज — ह् + ल् + र् + ई + म् = हलरीँ

योगशास्त्र में वर्णित है कि शब्दब्रह्म की ये आठ प्रकृतियां हैं और उपासना में कल्याणकारी इन्हीं (बीज मंत्रों) का सर्वत्र विस्तार है। जब प्रकृति सत्त्व, रज और तम रूप तीन गुणों में व्याप्त होकर अनेक रूपों में प्रकट हुई, तो शब्द राज्य में उसी क्रम से प्रकृति के अनेक रूप विभिन्न शब्दों के रूप में प्रकट हुए। ये ही शब्द जब प्रथमावस्था में रहे, तो बीज मंत्र हुए और जब अन्य परिणामों से संबद्ध हुए तो मंत्र बने।

जैसा कि हम पीछे बता आए हैं कि ओंकार ईश्वर का मंत्र है। इसलिए प्रकृति के प्रथम स्पंदन से उत्पन्न ओंकार जब ईश्वर का मंत्र है, तो उसी प्रकृति के अन्य आठ स्पंदनों से बने गुरुबीज मंत्र आदि तथा अन्य परिणामों से उत्पन्न अन्य मंत्र भी देवस्वरूप ही हैं। साथ ही यह भी सरलता से समझा जा सकता है कि जिस प्रकार ब्रह्मांड प्रकृति के पहले स्पंदन से उत्पन्न शब्द ओंकार

के साथ ब्रह्मांड के नायक ईश्वर का अधिदेव संबंध होने से ओंकार उनका मंत्र है, उसी प्रकार प्रकृति के जिस विभाग के कंपन से जो मंत्र उत्पन्न हुए वे उस विभाग के अधिष्ठाता देव या देवी के साथ, उस मंत्र का अधिदैव संबंध रहने से, उस देवता अथवा देवी के साधन के लिए सिद्ध मंत्र बन गए। अतः प्रत्येक साधक को चाहिए कि किसी भी बीज मंत्र को देवस्वरूप ही माने।

जिस आचार्य ने जिस प्रकार के मंत्र की साधना की और उसे सिद्ध कर लिया, उसका उल्लेख उसने किया। कौन-सा मंत्र चुनना है ? यह निर्णय करने के लिए साधक को या तो किसी गुरु का आश्रय लेना चाहिए या फिर हमारी इस पुस्तक को ही गुरु मानकर, हमारे दिए गये निर्देशों पर अमल करना चाहिए। कई बार साधना के इच्छुक व्यक्ति अपने कुलमार्ग को छोड़कर अन्य संप्रदाय के मंत्रों को अधिक उत्तम या असरकारी मानकर उन्हें सिद्ध करने में लग जाते हैं, जो हमारे विचार से तो उचित नहीं है। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने स्पष्ट रूप-से कहा है—

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मो भयावहः।

अर्थात् "अपना धर्म यदि गुणरहित हो तब भी वह कल्याणकारी है और दूसरों का धर्म गुणवान् होने पर भी भयकारक है।"

इसका उदाहरण इस बात से भी दिया जा सकता है कि जिस प्रकार एक मशीन का पुर्जा दूसरे प्रकार की मशीन में लगा देने से वह कार्य नहीं करता, अपितु हानि ही पहुंचाता है; उसी प्रकार मर्यादा के अनुकूल मंत्र ही शीघ्र फलदायी होते हैं, अन्य नहीं ! इसलिए साधक उस मंत्र का अधिकारी हो जाता है, जिस प्रकार उसकी दृढ़ निष्ठा

होती है। तब मंत्र-प्रयोग द्वारा उसके सभी कार्य सफलतापूर्वक संपन्न होते चले जाते हैं।

हमने ऊपर कूट मंत्रों में वर्ण, बीज और उनके सम्मिलित स्वरूप से बने हुए मंत्रों का परिचय दिया। इसी परंपरा का दूसरा अंश है, अकूट मंत्र ! अकूट का अर्थ पहले ही बताया जा चुका है कि सामान्य वर्ण योजना वाले वर्ण-समुदाय को अकूट मंत्र कहते हैं। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि कोई भी वर्ण-योजना मंत्र है, अपितु जिसमें एक निश्चित दृष्टि और उद्देश्य से वर्ण-योजना हुई हो और जिसका मनन-जप निश्चित लक्ष्य की पूर्ति में सहायक हो, वही मंत्र है। ऐसे वर्ण-समुदाय से बने हुए मंत्र वैदिक संहिताओं से गृहीत होने पर "वैदिक मंत्र" कहलाते हैं। तंत्रों में शिव-पार्वती के संवाद में प्रश्न के उत्तर में प्राप्त अथवा कहे जाने के कारण "तांत्रिक मंत्र" कहे जाते हैं। इसी प्रकार भैरवादि देवों के पूछने पर उत्तर में कहे गए मंत्र भी तांत्रिक मंत्र ही हैं।

पुराणों के आख्यानों में देवताओं द्वारा उपदिष्ट मंत्र, विशिष्ट उपासकों द्वारा उपासना अथवा स्तुति में प्रयुक्त मंत्र "पौराणिक मंत्र" माने जाते हैं, तथा देवताओं के नाम, कर्म के साथ उनके बीज मंत्र का संयोग करके बनाए हुए मंत्र "स्वतंत्र मंत्र" कहे जाते हैं। बहुधा शास्त्रों में देखा जाता है कि गुरु अथवा देवता की प्रार्थना करने पर वे स्वयं मंत्र का उपदेश करते हैं। साथ ही उसके जप-हवनादि का संकेत भी करते हैं। यहां तक कि देवता उसमें अपनी शक्ति का समावेश करने की भी सूचना देते हैं। प्रयोगसारतंत्र में मंत्रों के भेद बतलाते हुए कहा गया है—

बहुवर्णास्तु ये मंत्रा मालामंत्रास्तु ते स्मृताः।
नवाक्षरांता ये मंत्रा बीजमंत्राः प्रकीर्तिताः।।
पुनर्विंशति वर्णान्ता मंत्रा मंत्रास्तथोदिताः।
ततोऽधिकाक्षरा मंत्रा मालामंत्रा इतिस्मृताः।।

अर्थात् अनेक अक्षरों वाले जो मंत्र हैं, वे "मालामंत्र" कहे जाते हैं। नौ अक्षर तक के मंत्र बीज मंत्र हैं तथा बीस अक्षरों तक के मंत्र "मंत्र" कहलाते हैं और इनसे भी अधिक अक्षर वाले मंत्र मालामंत्र ही हैं। कहीं-कहीं स्तोत्रों को भी मालामंत्र माना गया है। गणपतिस्तोत्र मालामंत्र आठ पद्य का मिलता है, तो दुर्गासप्तशती के सात सौ पद्यों के संग्रह को भी सतोत्रमालामंत्र बताया गया है। कुछ मंत्रों में कर्त्तव्यकर्म का स्पष्ट उल्लेख रहता है, तो कुछ में नमस्कार, प्रार्थना, रक्षा, सिद्धि का निर्देशादि रहते हैं, "मंत्रोदेवाधिष्ठितोऽसावक्षररचनाविशेष", इस कथन के अनुसार देवता से अधिष्ठित एक विशेष प्रकार की अक्षर रचना ही मंत्र है। सत्य तो यह है कि मंत्र को मंत्र मानकर ग्रहण (सिद्ध) करने से ही उसमें मंत्रत्व आता है। आयुर्वेद ग्रंथ में कहा गया है—

इदमागमसिद्धत्वात्   प्रत्यक्षफलदर्शनात्।
मंत्रवत् संप्रयोक्तव्यं न मीमांस्यं कथंचन।।

अर्थात् यह आगमसिद्ध होने से और प्रत्यक्ष फल देखे जाने से मंत्र के समान प्रयोग में लाना चाहिए तथा इसकी मीमांसा या तर्क-वितर्क कभी नहीं करना चाहिए।

उपर्युक्त मंत्रों के कुछ आचार्य अन्य दृष्टि-से तीन भेद करते हैं—१. सिद्धमंत्र, २. साधारण मंत्र, ३. निर्बीजमंत्र। सिद्धमंत्रों में एक विशिष्ट शक्ति रहती है, जो सिद्ध पुरुषों की चेतनशक्ति को शब्दों के आश्रय से प्रकट करके अन्य

मनुष्यों पर अपना तात्कालिक प्रभाव दिखाती है। इस कोटि के मंत्र बड़े सौभाग्य से प्राप्त होते हैं। यदाकदा जिन महानुभावों की कुंडलिनी शक्ति जागृत हो जाती हैं, उन्हें उसी महाशक्ति की कृपा से सिद्धमंत्र प्राप्त हो जाते हैं। हठयोग से कुंडलिनी शक्ति जागृत होने पर मंत्रयोग का प्रस्फुटन होता है। मंत्र के बल से मन एकाग्र हो जाता है तथा वृत्तियों का विरोध होकर लय होने लगता है। इस प्रकार हठयोग से मंत्र और मंत्र से लय तथा लय से राजयोग की प्राप्ति होती है। सिद्धमंत्र की प्राप्ति सिद्ध गुरु के द्वारा भी प्राप्त होती है। ऐसे मंत्रों को जप द्वारा सिद्ध करने की भी आवश्यकता नहीं रहती।

दूसरे प्रकार के मंत्र अत्यंत प्रसिद्ध हैं, जिन्हें जप के द्वारा सिद्ध करने पर कार्यसिद्धि होती है। तीसरे प्रकार के मंत्र पुस्तकों के द्वारा ग्रहीत होते हैं, चूंकि इनमें गुरु के तप का अभाव रहता है, अतः यह निर्बीज यानि निर्बल माने जाते हैं।

सात्त्विक, राजसिक और तामसिक भेद से भी मंत्रों के तीन प्रकार माने गए हैं। इनमें सात्त्विक मंत्र आत्मशुद्धि में उपकारक हैं; राजसिक मंन यश, ऐश्वर्य तथा भोगादि इच्छित वस्तु प्रदान करते हैं तथा तामसिक मंत्र मारण, उच्चाटन आदि से शत्रुओं का संहार करते हैं।

देवताओं से संबंधित मंत्र

मंत्र देवताओं से संबद्ध होते हैं और देवता अनंत हैं, अतः मंत्र भी अनंत हैं तथापि यदि संक्षेप में विचार किया जाए तो इनके सात प्रकार निर्धारित होते हैं। इनमें मत देवता, आत्मदेवता, इष्टदेवता, कुलदेवता, गृहदेवता, लोकदेवता और ग्रामदेवता का समावेश किया जाता है।

मतदेवता में गणेश, सूर्य, शक्ति, शिव और विष्णु; इन पांच देवताओं की उपासना की प्रचुरता होने से ही गणपत्य, सौर, शाक्त, शैव और वैष्णव मतों का प्रचलन हुआ और इस परंपरा में दीक्षित होने वाले लोग इन मतों के अनुसार ही मतदेवता के मंत्रों से उपासना करते हैं। जबकि आत्मदेवता में उपर्युक्त पंचदेवों के जो पूर्णावतार हुए और वे जिन-जिन नामों से विख्यात हुए, उनके मंत्र आत्मदेवतामंत्र कहलाये तथा उस परंपरा में दीक्षित लोग उन मंत्रों से आराधना करते हैं।

अपने अभीष्ट ऐहिक और पारलौकिक, समस्त इष्टलाभ की सिद्धि के लिए जिन देवताओं की उपासना की जाती है, वे इष्टदेवता और उनके जो मंत्र हैं, वे इष्टदेवतामंत्र कहलाते हैं। प्रायः ये देवता मतदेवता और आत्म देवता के अवतार देवता हैं अथवा उनके आवरण देवता हैं। इनके भी निम्न तीन भेद हैं—

१. गुरुदेव
२. रक्षादेव
३. अर्थसाधकदेव

परलोक-संबंधी ज्ञान देने वाले गुरुदेव हैं, विपत्तियों से रक्षा करने वाले रक्षादेव हैं तथा शत्रुओं को दंड देने वाले एवं साधकों की अभीष्ट की पूर्ति करने वाले अर्थसाधकदेव कहे जाते हैं। इन सभी के मंत्र अलग-अलग हैं। उपासना से प्रसन्न होकर ये देवता अपने उपासकों के सभी संभावित क्लेशों को दूर करके गुरु रूप-से तत्त्वज्ञान देकर मुक्ति का मार्ग दिखलाते हैं, आचार्यों की ऐसी मान्यता है।

अपने कुल के सभी अनिष्टों का विनाश करने और योगक्षेम आदि सर्वविध श्रेय की प्राप्ति के लिए पूर्वजों द्वारा

परंपरा क्रम-से आधारित देवता कुलदेवता माने जाते हैं, यह सर्वविदित है। इन्हें प्रसन्न करने वाले मंत्र कुलदेवतामंत्र कहे जाते हैं। सभी प्रकार के पापों की निवृत्ति एवं सर्वमंगलों की प्राप्ति के लिए घरों में आवश्यक रूप में पूजे जाने वाले देवता गृहदेवता माने जाते हैं और इनके जो मंत्र हैं, वे गृहदेवतामंत्र कहलाते हैं।

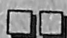
महामारी, चोरी, अग्निदाह आदि बाधाओं से रक्षा के लिए ग्रामीणजनों द्वारा दोपाये और चौपायों की रक्षा के लिए चंडी, काली, दुर्गा, भैरव, हनुमान आदि जिन ग्रामदेवताओं की पूजा की जाती है वे ग्रामदेवता हैं और उनके मंत्र ग्रामदेवतामंत्र कहे जाते हैं।

ब्रह्मा, प्रजापति, इंद्रादि लोकपाल, उनके अधिदेवता, नवग्रह, देवयोनि विशेष मरुद्गण आदि कर्मदेव तथा देवर्षि, महर्षि आदि लोकदेवता माने जाते हैं और उनके मंत्र लोकदेवतामंत्र कहे जाते हैं। इस प्रकार उपर्युक्त देवताओं के मंत्रों के प्रमुख दो स्वरूप हैं—१. वैदिक और, २. तांत्रिक। वैदिक मंत्रों अथवा तांत्रिक मंत्रों की दीक्षा सद्-गुरुदेव की कृपा से प्राप्त कर उन्हें शास्त्रों में बतलाए हुए प्रकारों से पुरश्चरण, होम, तर्पण और मार्जनादि द्वारा सिद्ध किए जाने पर वे यथासमय इष्टसिद्धि में सहायक होते हैं। प्रत्येक साधक को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि मंत्रों की सिद्धि में सबसे बड़ी सहायता श्रद्धा और विश्वास से मिलती है।

मंत्र शब्द आज के समाज में "जादू-टोने" के अर्थ में ही अधिक प्रयुक्त होता है, किन्तु वस्तुतः यह शब्द इससे कहीं अधिक गंभीर और अर्थ से युक्त है। मंत्र एक ऐसा सूक्ष्म, किन्तु महत्त्वपूर्ण तत्त्व है कि जिसके द्वारा स्थूल पर

नियंत्रण किया जाता है। प्रकृति को वश में करने की अपूर्व शक्ति मंत्र में विराजमान है।

विशेष—अन्यान्य धर्मों, संप्रदायों अथवा परंपराओं में प्रचलित मंत्रों की साधना में उनके द्वारा बताए गए आचारों का पालन पूर्णरूपेण आवश्यक है। प्रत्येक मंत्र साधक के लिए यह निर्देश है कि उसे मंत्र विद्या के मूलतत्त्वों का परिचय प्राप्त किए बिना इस मार्ग में प्रवेश न करना चाहिए। बहुत-से मंत्रों की सिद्धि श्मशानादि स्थानों पर जाकर रात्रि में की जाती है, अतः हृदयरोग से पीड़ित अथवा दुर्बल हृदय के साधक को यह बात पहले से सोच लेनी चाहिए कि वो जो कार्य करने के लिए जा रहा है, उसे पूर्ण कर भी पाएगा या नहीं ? ऐसे अवसरों पर संयम खो देने वाले या भयभीत हो जाने वाले साधक को अत्यधिक हानि का सामना करना पड़ सकता है। कभी-कभी तो मृत्यु भी अवश्यसंभावी हो जाती है। अतः साधक को ऐसे मंत्र का चुनाव करना चाहिए, जिसकी सिद्धि को वो सहजता के साथ प्राप्त कर सके।





साधक में तंमयता की आवश्यकता

एकाग्रता एक उपयोगी सत्प्रवृत्ति है। मन की अनियंत्रित कल्पनाएं, अनावश्यक उड़ानें उस उपयोगी विचारशक्ति का अपव्यय करती हैं, जिसे यदि लक्ष्य विशेष पर केंद्रित किया गया होता, तो गहराई में उतरने और महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त करने का अवसर मिलता ! यह चित्त की चंचलता ही है, जो मन:संस्थान की दिव्य क्षमता को ऐसे ही निरर्थक गंवाती और नष्ट-भ्रष्ट करती रहती है। संसार के वे महामानव जिन्होंने किसी विषय-विशेष में प्रवीणता प्राप्त की है या महत्त्वपूर्ण सफलताएं प्राप्त की हैं, उन सबको विचारों पर नियंत्रण करने, उन्हें अनावश्यक चिंतन से हटाकर उपयोगी दिशा में चलाने की क्षमता प्राप्त रही है। इसके बिना चंचलता की वानरवृत्ति से ग्रसित व्यक्ति न किसी विषय पर गहराई से सोच सकता है और न ही मंत्रादि कर्म पर देर तक स्थिर रह सकता है।

मंत्र, तंत्रादि प्राप्त करने की सफलता में मन की

एकाग्रता की शक्ति ही प्रधान भूमिका निभाती है। चंचलता असफलता की द्योतक है। मनीषी डब्ल्यू. आर. इंज के ग्रंथ "मिस्टिसिज्म इन रिलीजन" के अनुसार आत्मिक प्रगति के लिए एकाग्रता की ही उपयोगिता अधिक है। इसलिए "मेडिटेशन" के नाम पर उसका अभ्यास विविध प्रयोगों द्वारा कराया जाता है। इस अभ्यास के लिए कोलाहल रहित ऐसे स्थान की आवश्यकता समझी जाती है, जहां विक्षेपकारी आवागमन या कोलाहल न होता हो।

"अंतरयोग" नामक पुस्तक के रचियता महायोगी अनिर्वाण के अनुभव के अनुसार उपासना के लिए जिस एकाग्रता की आवश्यकता है, उसका लक्ष्य है; भौतिक जगत् की कल्पनाओं से मन को विरत करना और उसे अंतर्जगत् की क्रिया-प्रक्रिया में नियोजित कर देना। कोई उपासना की जाए अथवा सिद्ध करने के लिए किसी मंत्र का जप करना हो, तो उस समय यदि मन सांसारिक प्रयोजनों में न भटके और आत्मिक क्षेत्र की परिधि में परिभ्रमण करता रहे तो समझना चाहिए कि एकाग्रता का प्रयोजन पूरा हो रहा है। साधक का चिंतन अपनी निर्धारित दिशा धारा में ही सीमित रहता है और इतने भर में एकाग्रता का प्रयोजन पूरा हो जाता है।

अपनी निर्धारित परिधि में रहकर कितना ही द्रुतगामी चिंतन क्यों न किया जाए, कितनी ही कल्पनाएं, कितनी ही स्मृतियां, कितनी ही विवेचनाएं क्यों न उभर रही हों, वे एकाग्रता की स्थिति में तनिक भी विक्षेप उत्पन्न नहीं करेंगी। अनेक साधक एकाग्रता का अर्थ मन की स्थिरता समझते हैं, जबकि दोनों में अंतर है; मन की स्थिरता को एकाग्रता से मिलती-जुलती स्थिति तो कहा जा सकता

है, पर दोनों का सीधा संबंध नहीं है। जिसका मन स्थिर हो, उसे एकाग्रता का लाभ मिल सके या जिसे एकाग्रता की सिद्धि है, उसे स्थिरता की स्थिति प्राप्त हो ही जाए, यह आवश्यक नहीं है। स्थिरता को निर्विकल्प समाधि कहा गया है और एकाग्रता को सविकल्प कहा गया है। सविकल्प का तात्पर्य है, उस अवधि में आवश्यक विचारों को मनः क्षेत्र में अपना कार्य करते रहना। निर्विकल्प का अर्थ है, एक केंद्रबिंदु पर सारा चिंतन सिमटकर स्थिरता की स्थिति उत्पन्न हो जाना।

यहां मनः संस्थान की संरचना को ध्यान में रखना होगा। एक वैज्ञानिक की दृष्टि रखकर साधना की गहराइयों में प्रवेश करने पर मन की बनावट एक प्रचंड विद्युत-भंडार जैसी अनुभव की जा सकती है। उसके भीतरी और बाहरी क्षेत्र में विचार तरंगों के आंधी-तूफान निरंतर उठते रहते हैं। यह तरंग-तूफान जितने तीव्रगति से संपन्न होते हैं, उसकी मानसिकता उतनी ही उर्वर और कुशाग्रबुद्धि मानी जाती है। जहां इन तरंगों में जितनी मंदगति हो, समझना चाहिए वहां उतनी ही जड़ता, दीर्घसूत्रता, मूर्खता छाई रहेगी। थके-हारे मस्तिष्क को निद्रा घेर लेती है, अर्थात् उसकी गतिशीलता शिथिल हो जाती है। स्थिरता लगभग ऐसे ही स्तर की है।

मन की स्थिरता अति कठिन है। दो-तीन मिनट की स्थिरता में साधक शून्यावस्था को पहुंच सकता है। जिन्हें निर्विकल्प समाधि अभीष्ट हो, उन्हें ही स्थिरता की अपेक्षा और चेष्टा करनी चाहिए। सविकल्प साधना में स्थिरता की नहीं, एक दिशा धारा में मन को नियोजित किए रहने की आवश्यकता है। परब्रह्म में आत्मसमर्पण और

उस पराशक्ति की आत्मसत्ता में अवतरण ही ध्यान का मुख्य प्रयोजन है। उसके लिए कितने ही प्रकार की साकार-निराकार ध्यान-धारणाएं विद्यमान हैं, उनमें जो उपयोगी लगे, उसे अपनाया जा सकता है।

आत्मसाधना में निमग्न साधक एवं मनीषी गोपीनाथ कविराज अपने संपादित ग्रंथ "श्री श्री सद्गुरु प्रसंग" में स्पष्ट करते हैं कि मन की स्थिरता एवं एकाग्रता का सार तत्त्व "तंमयता" में आता है। तंमयता का अर्थ है, इष्ट के साथ मानव संवेदनाओं को केंद्रीभूत कर देना। यह स्थिति तभी आ सकती है, जब इष्ट के प्रति असीम श्रद्धा हो और श्रद्धा तब उत्पन्न होती है, जब किसी लक्ष्य पर परिपूर्ण विश्वास हो।

चेतना-शक्ति के उत्थान परिष्कार में तंमयता सबसे बड़ा आधार है। शरीर से किए जाने वाले कर्मकांडों का प्रयोजन इतना ही है कि उनके कारण अंतःकरण को साथ-साथ चलने का आधार मिल जाए। चिंतन का गहरा पुट लगने पर ही आत्मिक भूमिका में हलचलें होती हैं और प्रगति का सरंजाम जुटता है। यदि मन एक लक्ष्य पर केन्द्रित न हो, यदि मन इष्ट पर जमे नहीं, मंत्र देने वाले गुरु पर श्रद्धा में कमी; अथवा मंत्र सिद्ध करते समय मन में यह शंका हो कि यह सिद्ध होगा भी या नहीं, तो ऐसी दशा में मंत्रोच्चारण का श्रम मात्र जीभ की कसरत भर बनकर रह जाएगा। तंमयता की स्थिति उत्पन्न करने के लिए धैर्यपूर्वक देर तक प्रयत्न करना होता है। यह एक दिन में संपन्न होने वाला कार्य नहीं है।

जो साधक अपने लक्ष्य पर तंमय न रख पाए और चंचलता उसमें विद्यमान रहे, तब उस लक्ष्य को पाना,

उसमें सफलता प्राप्त करना, उसके लिए सर्वथा असंभव होगा। मन की चंचलता मनुष्य के लिए प्रत्येक कार्यक्षेत्र में बाधक होती है और इसी चंचलता के कारण साधक अपनी शक्ति का समुचित उपयोग नहीं कर पाता है।

एकाग्रता

आध्यात्मिक क्षेत्र (मंत्र साधना, मंत्र जप, मंत्र प्रयोग) में भी मन की चंचलता का दमन करके उसे एकाग्र करने का निर्देश दिया गया है। मानसिक एकाग्रता को सफलता का प्रतीक माना गया है। मन पर नियंत्रण रखना, उसे इधर-उधर विभिन्न विषयों की ओर-से विरत करके एक बिंदु पर स्थिर करना प्रत्येक साधक के लिए परम आवश्यक है। मंत्र साधना को प्रभावी और शुभफलदायक बनाने में मानसिक एकाग्रता का स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। किन्तु यह सहज संभव नहीं है। उसमें अनेक प्रकार के व्याघात आते रहते हैं, उसके निवारणार्थ साधक को कुछ विशेष सक्रिय होना पड़ता है। एकाग्रता में विघ्न उत्पन्न करने वाले निम्न कारकों को स्वयं से दूर रखना चाहिए—

१. **व्याधि**—शरीर में कोई रोग, कष्ट, भय, भ्रम, शंका, उत्तेजना आदि।

२. **सत्यान**—उत्साह और विश्वास का अभाव, निर्बलता आदि।

३. **संशय** —मन में किसी प्रकार का संदेहभाव, अनिश्चय की स्थिति आदि।

४. **प्रमाद**—यानि लापरवाही आदि।

५. **आलस्य**—स्फूर्ति का अभाव, सुस्ती, तंद्रा, शिथिलता आदि।

६. **अविरक्ति**—साधना के लिए वांछित वैराग्यभावना का अभाव, सांसारिक मोहासक्ति आदि।

७. **भ्रांति** —साधना के प्रति अस्थिरभावना, अविश्वास, अनास्था आदि।

८. **अलब्ध भूमिकत्व**—साधनारत होने पर भी साधक के लिए वांछित मनोभूमि से वंचित रहना, मानसिक अस्थिरता आदि।

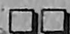
९. **अनवस्थित्व**—चंचलता, अनिर्णय की मनःस्थिति आदि।

इनके अतिरिक्त काम-क्रोध, चिंता-शोक, भय-द्वेष आदि के कारण उत्पन्न दुःख, इच्छापूर्ति न होने से उत्पन्न क्षोभ, शारीरिक व्याधि के कारण कंपन जैसी स्थिति, अनियंत्रित श्वासगति और असंतुलित प्रश्वास; ये पांच व्याधियां उपविक्षेप कही जाती हैं। इन विक्षेपों के अतिरिक्त छह प्रकार का मानसिक मल भी एकाग्रता में बाधक होता है। मानसिक मल को कलुष की संज्ञा देते हुए उसके छह भेद निम्न रूप से बताए गए हैं—

१. राग कालुष्य
२. ईर्ष्या कालुष्य
३. परोपकार चिकीर्षा कालुष्य
४. असूया कालुष्य
५. द्वेष कालुष्य
६. अमर्ष कालुष्य

उपर्युक्त सभी बाधाओं के शमन हेतु मनीषियों ने इसके उपाय भी बताए हैं, जिनके द्वारा साधक अपना मार्ग निरापद बना सकता है। सुखी, दुःखी, पापी, पुण्यात्मा, सब के प्रति मित्रता, दया, हर्ष व अपेक्षा की भावना रखने से चित्त निर्मल

हो जाता है। अतः साधक को सर्वप्रथम अपना चित्त निर्मल बनाना चाहिए। निर्मल मन में चंचलता नहीं रहती और तब उसे एकाग्र करके साधना-क्रिया सरल हो जाती है। मानसिक एकाग्रता को सुरक्षित रखने में भावना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह भावना ही साधक को जप-तप की प्रेरणा देती है। उसकी भावना ही अंततः साकार होकर मनोवांछित परिणाम के रूप में सामने आती है।





मंत्र साधना विधि क्रम

प्रत्येक मंत्र साधक को, मंत्र साधना में सामान्यतया जो विधि अपनाई जाती है, उसकी कुछ विशेष एवं मूलभूत क्रियाओं को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है। ये विधि-क्रम निम्न प्रकार से हैं—

१. जिस स्थान पर मंत्र साधना की जाने वाली हो, वह अत्यंत पवित्र, शुद्ध व स्वच्छ होना चाहिए, जैसे—देवस्थान, तीर्थभूमि, वनप्रदेश, पर्वत का उच्चस्थान, उपासनागृह अथवा नदी का किनारा अथवा घर में एकांत, शांत (जहां कोई आवाज न पहुंचे); ऐसे स्थान पर साधना की जानी चाहिए।

२. मंत्र द्वारा जिस किसी की भी साधना की जानी हो, उसकी प्रतिमा, चित्र या मंत्र को समीप रखना चाहिए।

३. साधक को यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि प्रत्येक मंत्र के जाप (या जप) का समय व संख्या निर्धारित होती है। उसी के अनुसार जप-क्रिया प्रारंभ करनी चाहिए और जितने समय तक जितनी संख्या में जप करना है, उसे विधिपूर्वक ही करना चाहिए, तथा इसमें अपनी

सुविधानुसार कोई हेर-फेर भी नहीं करना चाहिए।

४. जिस वस्त्र को पहनकर मंत्र साधना करनी हो, वो धुला हुआ, स्वच्छ, पवित्र और बिना सिला हुआ होना चाहिए। ऐसे वस्त्र को शरीर पर बांधा या लपेटा जाता है।

५. साधना के समय धूप, दीप अवश्य रखना चाहिए।

६. जब तक साधना चले, तब तक अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाने चाहिए। इस समय में पूर्णतया ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए और बहुत साधारण-सा जीवन बिताना चाहिए।

७. मंत्रों के शब्दों, अक्षरों का उच्चारण शुद्ध व अत्यंत धीमा होना चाहिए। मन-ही-मन उच्चारण भी किया जा सकता है।

८. मंत्र की उपासना, ध्यान, पूजन और जप पूरी श्रद्धा व विश्वास के साथ करना चाहिए।

९. स्वच्छ रहना चाहिए। संभव हो तो दिन में दो बार स्नान करना चाहिए। साधना प्रारंभ करने से पूर्व ही मल-मूत्र क्रिया का विसर्जन कर देना चाहिए।

१०. साधना-स्थान पक्का हो, तो प्रतिदिन झाड़ू लगाकर उसे गीले कपड़े से पोंछना चाहिए और यदि कच्चा हो, तो गाय के गोबर से लीपा-पोती करनी चाहिए।

११. नीच व्यक्तियों के साथ वार्तालाप व उनका स्पर्श नहीं करना चाहिए, इससे साधक की पवित्रता नष्ट हो जाती है। जब तक मंत्र सिद्ध न हो जाए, स्त्री (पत्नी) तक से दूर और बचकर रहना चाहिए।

१२. असत्य नहीं बोलना चाहिए, क्रोध नहीं करना

चाहिए और जहां तक संभव हो, सर्वथा मौन रहना चाहिए।

१३. चित्त को स्थिर रखना चाहिए।

१४. भोजन एक ही समय करना चाहिए, साथ ही वो सात्त्विक व हल्का होना चाहिए। भोजन या जल ग्रहण करने से पूर्व मूलमंत्र से अवश्य अभिमंत्रित कर लेना चाहिए।

१५. भूमि पर सोना चाहिए अर्थात् साधना-स्थल के समीप ही कोई कपड़ा बिछाकर सोना चाहिए तथा अंधेरे में नहीं सोना चाहिए।

१६. जब तक मंत्र की सिद्धि न मिल जाए, तब तक बाल न कटाने चाहिए, दाढ़ी-मूंछ (शेव) न बनानी या बनवानी चाहिए और मौसम चाहे जैसा हो, गर्म जल से स्नान नहीं करना चाहिए।

१७. काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, हिंसा, और असत्य से बचना चाहिए।

१८. किसी को शाप या आशीर्वाद नहीं देना चाहिए।

१९. अपना नित्यकर्म बराबर करते रहना चाहिए।

२०. निर्भय होना चाहिए, मंत्रदेवता की उपासना श्रद्धा, भक्ति पूर्ण विश्वासपूर्वक करनी चाहिए।

मंत्र साधकों को अब दिशा, काल, मुद्रा, आसन, वर्ण, पुष्प, माला, मंडल, पल्लव और दीपनादि के विषय में भी जा[illegible] और समझ लेना चाहिए, जिसकी विधि निम्न है—

१. दिशा—शांतिकर्म को पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके, पौष्टिक-कर्म को नैऋत्य दिशा की ओर, मारणकर्म को ईशानाभिमुख होकर, विद्वेषणकर्म को आग्नेय की ओर, उच्चाटनकर्म को वायव्य की ओर, वशीकरणकर्म

को उत्तराभिमुख होकर, आकर्षणकर्म को दक्षिणाभिमुख होकर और स्तंभनकर्म को पूर्वाभिमुख होकर साधित करना चाहिए।

२. **काल**—शांतिकर्म को अर्द्धरात्रि में, पौष्टिककर्म को प्रभात में, वशीकरण, आकर्षण व स्तंभनकर्म को दिन में बारह बजे से पूर्व पूर्वाह्न में, विद्वेषणकर्म को मध्याह्न में, उच्चाटनकर्म को दोपहर बाद अपराह्न में और मारणकर्म को संध्याकाल में साधित करना चाहिए।

३. **मुद्रा**—शांति व पौष्टिककर्म में ज्ञानमुद्रा, विद्वेषण व उच्चाटनकर्म में पल्लवमुद्रा, वशीकरण में सरोजमुद्रा, आकर्षणकर्म में अंकुशमुद्रा, स्तंभनकर्म में शंखमुद्रा और मारणकर्म में वज्रासनमुद्रा में बैठना ही उपयुक्त रहता है।

४. **आसन**—आकर्षणकर्म में दंडासन, वशीकरण में स्वस्तिकासन, शांति व पौष्टिककर्म में पद्मासन, स्तंभनकर्म में वज्रासन, मारणकर्म में भद्रासन, विद्वेषण व उच्चाटनकर्म में कुक्कुटासन का प्रयोग करना चाहिए।

५. **वर्ण**—शांति व पौष्टिककर्म में चंद्रमा के समान श्वेतवर्ण, विद्वेषण व उच्चाटनकर्म में धूम्रवर्ण, मारणकर्म में कृष्णवर्ण, आकर्षणकर्म में उदय होते हुए सूर्य के जैसा वर्ण तथा वशीकरणकर्म में रक्तवर्ण ध्यातव्य है।

६. **पुष्प**—शांति व पौष्टिककर्म में श्वेत रंग के पुष्प (फूल), स्तंभनकर्म में पीले पुष्प, आकर्षण व वशीकरण में लाल रंग के पुष्प, विद्वेषण, उच्चाटन व मारणकर्म में काले रंग के पुष्प प्रयोजनीय हैं।

७. **माला**—शांतिकर्म में स्फटिक की माला, पौष्टिककर्म में मोती की माला, मारण, विद्वेषण व उच्चाटनकर्म में पुत्रजीवक की माला, आकर्षण वशीकरण

कर्म में मूंगे की माला और स्तंभनकर्म में सुवर्ण की माला व्यवहार्य है।

विशेष—नवीन साधक इसे इस प्रकार से समझें—बगलामुखी की साधना में हल्दी की माला, विष्णु जी की उपासना में शंखमाला, गणेशजी की उपासना में हाथीदांत की माला, शिव की उपासना में रुद्राक्षमाला, मुक्तिहेतु स्फटिक की माला, शत्रुविनाश एवं धूमावती की उपासना में खरदंतमाला तथा वैष्णवों हेतु तुलसी की माला का विधान है। मालाजाप की विधि-विधान हम आगे बताएंगे।

८. **हस्त**—आकर्षण, स्तंभन, शांति, पौष्टिक, मारण, विद्वेषण व उच्चाटनकर्म में दक्षिण व वशीकरण में वामहस्त का प्रयोग विहित है।

९. **उंगली**—आकर्षणकर्म में कनिष्ठिका, शांति व पौष्टिक कर्म में मध्यमा, वशीकरण में अनामिका, स्तंभन, मारण, विद्वेषण व उच्चाटनकर्म में तर्जनी उंगली का प्रयोग किया जाता है।

१०. **पल्लव**—विद्वेषणकर्म में "हुं", उच्चाटनकर्म में "फट्", आकर्षण कर्म में "वौषट्", वशीकरण में "वषट्", स्तंभन व मारणकर्म में "घे घे", और शांति व पौष्टिककर्म में "स्वाहा", इस प्रकार पल्लव समझना चाहिए।

११. **मंडल**—शांति व पौष्टिककर्म वरुणमंडल के बीच, स्तंभन व मोहनादि में महेंद्रमंडल के बीच और वशीकरण कर्म में अग्निमंडल के बीच चक्र व साधक का नाम रखना उत्तम है।

१२. **दीप व धूप**—साधक को अपनी दाहिनी ओर दीप (दीपक) और बायीं ओर धूप जलाकर रखनी चाहिए।

१३. **तत्त्वध्यान**—स्तंभन व पौष्टिककर्म में पृथ्वी,

विद्वेषण व उच्चाटनकर्म में वायु, आकर्षणकर्म में अग्नि, वशीकरण व शांतिकर्म में जल और मारणकर्म में व्योम ध्यातव्य है।

१४. दीपनादि प्रकार—दीपन से शांति कर्म, पल्लव से विद्वेषणकर्म, संपुट से वशीकरणकर्म, रोधन से बंधन, ग्रंथन से आकर्षणकर्म, विदर्भण से स्तंभन कर्म होता है। ये छह भेद हरेक प्रकार के मंत्र में लागू होते हैं। इन्हें इस प्रकार से समझ सकते हैं—

१. मंत्र के प्रारम्भ में नाम की स्थापना करें, जैसे—"धूमावती ह्रीं", इसे दीपन कहा जाता है।
२. मंत्र के अंत में नाम की स्थापना करें, जैसे —"ह्रीं धूमावती", इसे पल्लव कहा जाता है।
३. मंत्र के मध्य में नाम की स्थापना करें, जैसे—"ह्रीं धूमावती ह्रीं", इसे संपुट कहा जाता है।
४. मंत्र के प्रारम्भ व मध्य में नाम का उल्लेख करें, जैसे—"धूम ह्रीं वती ह्रीं", इसे रोधन कहा जाता है।
५. एक मंत्राक्षर, दूसरा नामाक्षर, तीसरा मंत्राक्षर और चौथा नामाक्षर, इसे संकलित करें, जैसे— "ह्रीं धू ह्रीं मा ह्रीं व ह्रीं ती", इसे ग्रंथन कहा जाता है।
६. मंत्र के दो अक्षरों के बाद एकेक नामाक्षर रखें, जैसे—"ह्रीं ह्रीं धू ह्रीं ह्रीं मा ह्रीं ह्रीं व ह्री ह्रीं ती", इसे संकलित कहते हैं।

माला-जाप की विधि एवं विधान

मंत्रों में निहित शक्ति को व्यक्ति मनन एवं जाप द्वारा ही प्राप्त कर सकता है। इसलिए शास्त्रों द्वारा प्रत्येक मंत्र

के जाप की एक निश्चित संख्या (जैसे १०८ या १० हजार बार) निर्धारित की गई है, जिससे अभीष्ट की सिद्धि प्राप्त होती है। ध्यान रहे, मंत्र-जाप के लिए गणना अत्यावश्यक है। गणना की सुविधा तथा जाप के लिए वैसे तो तीन प्रकार की मालाओं का उल्लेख होता है, वर्णमाला, करमाला तथा मणिमाला, किन्तु यहां हम विशेषतः करमाला और मणिमाला की ही विस्तृत चर्चा करेंगे।

करमाला—कर कहते हैं हाथ को अर्थात् हाथ की उंगलियों के पर्वों (पोरों) पर गणना करके जब जाप किया जाता है, तो उसे करमाला जाप कहते हैं। प्रत्येक हाथ में एक अंगूठा और चार उंगलियां होती हैं और प्रत्येक उंगली पर तीन पर्व होते हैं। अर्थात् चारों उंगलियों में १२ पर्व होते हैं। करमाला जाप में बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है, तभी इसके पूर्ण फल की प्राप्ति संभव है, अन्यथा जाप निष्फल हो जाता है।

करमाला से जाप करते समय उंगलियां एक-दूसरे से पूर्णतः जुड़ी होनी चाहिए। अलग-अलग नहीं रहनी चाहिए तथा उंगलियों के मिलने पर हथेली को थोड़ा झुका लेना चाहिए। उंगलियों को विभाजित करने वाली रेखा पर तथा नखों (नाखूनों) पर जाप करने से वो निष्फल हो जाता है। तर्जनी अर्थात् अंगूठे के साथ वाली उंगली के अग्रपर्व व मध्यपर्व पर जाप करने से आयु, विद्या, यश और बल का नाश होता है। अतः इन पर्वों पर जाप सर्वथा निषिद्ध है। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, करमाला में जपयोग्य पर्वों का एक क्रमानुसार विधान ! पूर्ण सफलता तथा इच्छित फल की प्राप्ति के लिए उसी क्रम से हमें जप-कर्म करना चाहिए। सबसे पहले अनामिका अर्थात्

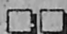
अंगुष्ठ (अंगूठा) के बाद तीसरी उंगली का मध्यपर्व, इसी का मूलपर्व, फिर कनिष्ठिका का मूलपर्व, मध्यपर्व, अग्रपर्व, फिर अनामिका का अग्रपर्व, मध्यमा का अग्रपर्व, मध्यपर्व, मूलपर्व तथा तर्जनी का केवल मूलपर्व, अर्थात् एक चक्र में करमाला से हम १० बार मंत्र की पुनरावृत्ति कर सकते हैं। और वांछित संख्या का जाप किसी भी समय कर सकते हैं।

मणिमाला—मणियों से निर्मित माला, जिसका उपयोग विशेष कार्यसिद्धि के लिए किया जाता है और कार्य के अनुरूप माला में मनकों की संख्या एवं भिन्नता पाई जाती है। मणिमाला से किए गए जाप दो प्रकार के होते हैं— १. सगर्भजाप और, २. अगर्भजाप। प्राणायामपूर्वक जो जाप होता है, उसे सगर्भजाप कहते हैं। यह उत्तमकोटि का होता है और प्राणायाम के बिना किया गया जाप अगर्भजाप कहलाता है। मनीषियों ने जाप के भी तीन प्रकार बताए हैं—

१. मन के द्वारा बार-बार चिंतन मानसजाप कहलाता है। इसे श्रेष्ठ माना गया है।
२. ऐसा जाप जिसमें केवल जिह्वा हिलती रहे, अर्थात् उच्चारण इतने धीमे हो कि किसी दूसरे को सुनाई न दे। यह उपांशुजाप कहलाता है। इसे मध्यमकोटि का माना गया है तथा अक्षरों के साथ मंत्र का वाणी द्वारा स्पष्ट और अस्पष्ट उच्चारण वाचिकजाप कहलाता है। यह निम्नकोटि का माना गया है।
३. बाएं हाथ से तथा निर्धारित संख्या से कम मनकों की माला का जाप प्रयोगकाल में नहीं करना

चाहिए। इस तीसरे प्रकार के जाप में "वाचिकजाप" ही आता है। क्रमवार इसे इस प्रकार जान लेना चाहिए— १. मानसजाप, २. उपांशुजाप, ३. वाचिकजाप।

साधकगण को स्मरण रहना चाहिए कि माला को सदैव गोमुखी में छिपाकर ही जाप करना चाहिए तथा माला कभी भी किसी को दिखानी नहीं चाहिए। जहां पर माला के दोनों भाग जुड़ते हैं और गांठ लगाकर एक मनका स्थित किया जाता है, उसे सुमेरु कहते हैं। जाप में किसी भी सुमेरु का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। अर्थात् जब जाप करते-करते सुमेरु, तक पहुंचा जाए, तो वहां से विपरीत दिशा में जाप प्रारंभ कर देना चाहिए। जाप में माला से तर्जनी का स्पर्श निषिद्ध है तथा जितना संभव हो, उतना उसे नाखूनों से भी बचाकर रखना चाहिए। मुख्य बात यह है कि जाप का समय निर्धारित होना चाहिए और उसमें कभी परिवर्तन नहीं करना चाहिए। दूसरी विशेष बात यह है कि जाप के समय माला हृदय के समीप होनी चाहिए तथा जपकाल में नेत्र मूंदकर, आज्ञाचक्र पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।





नियमों की अनिवार्यता

नियम से कार्य-विधि और उसकी परिणति निश्चित रहती है, नियमों के अभाव में सर्वत्र अनिश्चितता रहती है। कार्यसिद्धि, सुगमता और निश्चित परिणाम के लिए नियमों का महत्त्व सर्वोपरि है।

अध्यात्म के क्षेत्र में तो नियमों का प्रतिबंध बहुत ही सख्त है। जरा-सी चूक, शिथिलता अथवा प्रमाद से साधना में असफलता ही नहीं, भयंकर संकट भी सम्मुख आ उपस्थित होते हैं। जिस प्रकार दूध में नमक, नींबू आदि मिलाकर सेवन नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसे मिश्रण से दूध के मौलिक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं और विषाक्त हो जाने से उसका प्रभाव हानिकर होता है, ठीक उसी प्रकार साधना के क्षेत्र में भी अनेक प्रकार के नियम निर्धारित किए गये हैं।

नियमानुकूल साधना निरापद और लाभप्रद रहती है, जबकि नियम विरुद्ध साधना का परिणाम असफलताजनक और दुःखद होता है। इसलिए नियमों की अनिवार्यता साधना के सभी क्षेत्रों में समानरूप-से स्वीकार की गई है। मंत्र तथा तांत्रिक क्रियाओं में तनिक-सा भी व्यतिक्रम होते ही भयंकर दुर्घटनाएं हो जाती हैं, और ऐसी जानलेवा

समस्याएं सामने आ जाती हैं, जिनसे निपटारा करना प्रायः संभव नहीं रहता।

पंचोपचार पूजा-विधान

आह्वान, स्थापन, सन्निधीकरण, पूजन व विसर्जन को पंचोपचार पूजा कहते हैं। मंत्र साधना में पूजा, ध्यान और जप के बाद चौथा कार्य हवन का किया जाता है। कारण यह है कि मंत्र के देवता की पूजा करनी अत्यावश्यक होती है, ध्यान करना भी आवश्यक है। मंत्र का जाप करना भी जिस प्रकार आवश्यक है, उसी प्रकार हवन करना भी। सामान्यतया दशमअंश होम करना होता है। जैसे दस हजार मंत्र का जाप किया जाता है, तो दशमांश एक हजार अग्निदेवता को योग्य द्रव्यों की आहुति देनी होती है। जहां विशिष्ट क्रियास्वरूप मंत्र का पुरश्चरण करना होता है, वहां पूजा, ध्यान, जप व हवन के बाद तर्पण, ब्रह्म-भोजन तथा मार्जन आदि क्रिया करनी होती है। सामान्यतया हवन का दशमांश तर्पण, तर्पण का दशमांश ब्रह्म-भोजन और ब्रह्म-भोजन का दशमांश मार्जन करना होता है।

तर्पण

मंत्र बोलकर, मंत्र-देवता को जलार्पण करने को तर्पण कहते हैं।

ब्रह्म-भोजन

ब्राह्मणों को मिष्ट भोजन कराया जाए, उसको ब्रह्म-भोजन कहते हैं।

मार्जन

मंत्र बोलकर शरीर पर जल का छींटा देने को मार्जन कहते हैं। इस क्रिया से शरीर की शुद्धि हो जाती है।

नक्षत्रों द्वारा मंत्र-ग्रहण तालिका

अश्विनी	शुभ	भरणी	मरण
कृत्तिका	दुःख	रोहिणी	ज्ञानलाभ
मृगशीर्ष	सुख	आर्द्रा	बंधुनाश
पुनर्वसु	धन	पुष्य	शत्रुनाश
आश्लेषा	मृत्यु	मघा	दुःखमोचन
पू० फाल्गुनी	सौंदर्य	उ० फाल्गुनी	ज्ञान
हस्त	धन	चित्रा	ज्ञानवृद्धि
स्वाति	शत्रुनाश	विशाखा	दुःख
अनुराधा	बंधुवृद्धि	ज्येष्ठा	पुत्रहानि
मूल	कीर्तिवृद्धि	पूर्वाषाढ़ा	यशवृद्धि
श्रवण	दुःख	धनिष्ठा	दरिद्रता
शतभिषा	बुद्धि	पू० भाद्रपद	सुख
उ० भाद्रपद	सुख	रेवती	कीर्तिवृद्धि

मकरसंक्रांति, कर्कसंक्रांति, सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण, सोमवार-अमावस्या, मंगलवार-चतुर्दशी और रविवार सप्तमी हो, तो मंत्रग्रहण करना अत्यंत शुभ है। इसी प्रकार दिवस फल को भी जान लेना चाहिए। रविवार को धनालाभ, सोमवार को शांति, मंगलवार को आयुष्यक्षय, बुधवार को सौंदर्यलाभ, गुरुवार को ज्ञानवृद्धि, शुक्रवार को सौभाग्य की प्राप्ति और शनिवार को वंशहानि की संभावना रहती है।

आसन

जिसके द्वारा शारीरिक व मानसिक स्थिरता प्राप्त हो, उस बैठक में स्थिर होना आसन कहलाता है। आसनों से स्वास्थ्यरक्षा, सहनशक्ति का विकास व मानसिक एकाग्रता निष्पन्न होती है। आसनों के लिए एकांत, अनुकूल संयोग, समाधि-सहित ध्यान हो सके व जहां किसी प्रकार की चिंता व भय प्राप्त होने की आशंका न हो, ऐसा स्थान होना चाहिए।

जप के लिए आसन

पत्थर या शिला पर बिना कोई आसन बिछाए कभी भी जप नहीं करना चाहिए, सबसे उत्तम यह है कि काठ के पटरे पर ऊनी वस्त्र, कंबल या मृगचर्म बिछाकर और उस पर बैठकर जपकार्य किया जाए, यदि काठ का पटरा उपलब्ध न हो, तो ऊनी वस्त्र या मृगचर्म बिछाकर, उस पर बैठकर जप करना चाहिए, मंत्र विशारदों का मत है कि बांस का बना आसन व्याधि व दरिद्रता देता है। पत्थर का आसन रोग लाता है। धरती का आसन दुःखानुभव कराता है। काष्ठ का आसन दुर्भाग्य लाता है। तिनकों का आसन यशनाशक है तथा पत्तों का आसन चित्तविक्षेप कराता है।

कपास, कंबल, व्याघ्र व मृगचर्म का आसन ज्ञान, सिद्धि व सौभाग्य की प्राप्ति कराता है। काले मृगचर्म का आसन ज्ञान व सिद्धि प्राप्त कराता है। व्याघ्र चर्म का आसन मोक्ष व लक्ष्मी प्राप्त कराता है, कंबल का आसन दुःख नाश का द्योतक है तथा कई रंगों का कंबल का आसन स्वार्थसिद्धि देने वाला होता है।

मंत्र-जप का फल

मनीषियों का मत है कि घर में किया हुआ जप एक

गुना फल देता है, पवित्र वन या उद्यान में किया हुआ जप हजार गुना फल देता है, पर्वत पर किया गया जप दस हजार गुना फल देता है, नदी पर किया हुआ जप एक लाख गुना फल देता है, देवालय व उपाश्रय में किया गया जप एक करोड़ गुना फल देता है तथा भगवान के समक्ष किया गया जप अनंत गुना फल देता है।

जप-संबंधी नियम

मंत्र-जप के लिए सूर्य व चंद्रग्रहण उत्तम काल हैं, कर्कसंक्रांति व मकरसंक्रांति मध्यमकाल हैं। रविवार व अमावस्या कनिष्ठकाल है। तालाब या नदी में कमर तक जल में खड़े होकर मूल मंत्र का १०८ जप करना उत्तम है। सात्त्विक मंत्रों के लिए जप तीनों समय उत्तम माना गया है, यानि सूर्योदय के एक घंटा पहले से एक घंटा बाद तक, मध्याह्न के एक घंटा पहले से एक घंटा बाद तक व सूर्यास्त से एक घंटा पहले से एक घंटा बाद तक।

नग्न होकर कभी मंत्र का जप नहीं करना चाहिए। सिले हुए और पहले से पहने हुए वस्त्र धारणकर जप नहीं करना चाहिए। शरीर व हाथ अपवित्र हों, तो भी मंत्र जप नहीं करना चाहिए। सिर के बाल खुले रखकर भी जप नहीं करना चाहिए। आसन बिछाए बिना भी जप नहीं करना चाहिए। जप के समय बातें भी नहीं करनी चाहिए। दूसरे लोगों की उपस्थिति में भी जप का प्रयास न करना चाहिए। हाथ और सिर बिना ढांपे जप नहीं करना चाहिए। अस्थिर चित्त होने पर भी जपकार्य न करना चाहिए। निद्रा आ रही हो, तो भी जप नहीं करना चाहिए। जप के समयकाल में छींक नहीं आनी चाहिए, गला नहीं खंखारना चाहिए, थूकना नहीं चाहिए।

कमर के नीचे के अंगों का स्पर्श नहीं करना चाहिए, चींटी आदि के काटने पर भी खुजलाना नहीं चाहिए। घने अंधेरे में भी जप नहीं करना चाहिए।

विशेष—मंत्रानुष्ठान के दिनों में साधक का रहन-सहन बहुत ही शुद्ध और सात्त्विक होना चाहिए। इसलिए यदि साधनाकाल में वह सांसारिकता से दूर रहे, तो विशेष उत्तम होगा। मंत्र-साधक को पूर्णतया वनवासी तपस्वी की भांति वीतराग, शांत-स्थिर होकर पूरी तन्मयता के साथ अपना ध्यान केवल मंत्र और उससे संबंधित देवता पर ही रखना चाहिए।





नमस्कार महामंत्र

समस्त मंत्रों में नमस्कार मंत्र महान् है। यह चिंतामणि के समान है। इस मंत्र के एकेक अक्षर में अष्ट महासिद्धि, नवनिधि व चौदह पूर्व का ज्ञान भरा हुआ है।

हरइ दुहं कुणइ सुहं, जणइ जसं सोसए भवसमुद्दं।
इहलोय-पारलोइय-सुहाण मूलं नमुक्कारो।।

नमस्कार महामंत्र दुःख हरता है, सुख देता है, यश उत्पन्न करता है, भव समुद्र का शोषण करता है। वह इस लोक और परलोक सर्व सुखों का मूल है।

नमस्कारसमो मंत्रः शत्रुजयसमो गिरिः।
वीतरागसमो देवो, न भूतो न भविष्यति।।

नमस्कार जैसा मंत्र, शत्रुंजय जैसा पर्वत, वीतराग जैसे देव, न भूतकाल में हुए हैं और न ही होंगे।

जो गुणइ लक्खमेगं,
पुण्णइ विहिइ जिणनमुक्कारं।
सो तइअभवे सिज्झइ,
अहवा सत्तट्ठमे जम्मे।।

जो मनुष्य पूर्व विधि सहित नमस्कार महामंत्र का एक लाख जाप कर लेता है, वह तीसरे, सातवें या आठवें भव में सिद्ध हो जाता है।

नमस्कार महामंत्र की साधना विधिपूर्वक करन चाहिए। अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार साधव को इसका अनुष्ठान अवश्य करना चाहिए। मंत्रविज्ञ कहते हैं कि इस मंत्र का नौ लाख जाप कर लेने से नरकगति का बंधनिवारण होता है। अनेक प्रकार की सिद्धियां व संपत्तियां प्राप्त होती हैं। यदि नित्यप्रति पांच सौ जाप करें, तो पांच वर्ष में और यदि एक हजार जाप करें, तो अढ़ाई वर्ष में जाप अपनी पूर्णता को पहुंच जाता है। यदि प्रतिदिन एक माला का जाप करें, तो पच्चीस वर्ष में नौ लाख जाप पूर्ण होता है। सामान्य रूप-से इस मंत्र के अनुष्ठान में निम्नलिखित विधि-विधान व धारणाएं कर लेनी चाहिए—

१. पूर्व की ओर मुंह कर पद्मासन या सुखासन में बैठना चाहिए। श्वेत माला रखनी चाहिए तथा भूमि पर सोना चाहिए।
२. एकांत स्थान हो और सौ-सौ हाथ दूर तक की भूमि पर अशुचि-पदार्थ न हो।
३. पंचपरमेष्ठी की पंच प्रतिमाओं की स्थापना करनी चाहिए। सुगंधित धूप व गाय के घी का दीप जलाना चाहिए।
४. प्रतिदिन प्रातः पंचमहाव्रतधारी साधुओं की वंदना करें। मौनता रखें तथा पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें।
५. प्रातः और सायं प्रतिक्रमण करें और प्रतिक्रमण में, ध्यान के समय "पंचपरमेष्ठी आराधनार्थ करेमिकाउस्सग्ग" बोलकर इष्ट का ध्यान करें।
६. जप-संख्या का परिमाण निश्चित करें, प्रतिदिन जप समान रहे, वो कम या बढ़ना नहीं चाहिए।

७. जप का स्थान, माला, वस्त्रादि एक ही रखें, तथा वो शुद्ध होने चाहिए।

८. बुद्धि निर्मल, हृदय शुद्ध तथा चित्त एकाग्र रखकर जप करना चाहिए।

९. जप का उद्देश्य पहले ही स्पष्ट कर लेना चाहिए, जैसे— सर्वजीवों को जिन-शासन का भक्त बनाएं, सर्वजीवों का हित हो, भव्यआत्माएं कर्ममुक्त हो, सकलसंघ का कल्याण हो, मेरी आत्मा कर्ममुक्त हो, आदि का चिंतन कर जप प्रारंभ करना चाहिए।

१०. श्वेत वस्त्र धारण करना चाहिए, जहां तक संभव हो, एक ही सफेद वस्त्र को लुंगी की तरह बांधकर, उसे ही शरीर पर लपेट लेना चाहिए।

११. आसन श्वेत (सफेद) व ऊनी होना चाहिए। काठ के पटरें पर ऊनी आसन बिछाकर उस पर बैठना चाहिए।

विशेष—किसी भी मंत्र की साधना अर्थात् जप प्रारंभ करने से पूर्व जो आवश्यक क्रिया करनी होती है, उसे सकलीकरण कहते हैं। कई विद्वान् इसे अंगन्यास व भूतशुद्धि भी कहते हैं। ज्वालामालिनी कल्प के रचयिता इंद्रमुनि व भैरव पदमावति-कल्प के रचनाकार मल्लिषेण मुनि इसे सकलीकरण क्रिया ही कहते हैं, जो असकल है, अपूर्ण है, उसे पूर्ण करने वाली क्रिया को सकलीकरण कहते हैं। साधक का शरीर मंत्र बीजों की धारणा के बिना अपूर्ण है। उसको मंत्र बीजों की स्थापना के द्वारा सकल करना होता है, इसलिए सकलीकरण संकेत यथार्थ हैं। इस क्रिया के द्वारा साधक की आत्मरक्षा होती है, इसलिए इसको आत्मरक्षाविधान भी कह सकते हैं। सकलीकरण

क्रिया में सबसे पहले करंयास अर्थात् उंगलियों के पौरवों पर "हां, हीं हूं हौं, हः" इन पांच शून्य बीजों की स्थामना करनी होती है। जैसे बाएं हाथ की तर्जनी उंगली द्वारा दाएं हाथ के अंगूठे पर हां, तर्जनी उंगली पर हीं, मध्यमा उंगली पर हूं अनामिका पर हौं और कनिष्ठिका पर हः मंत्र बीजों की स्थापना करनी चाहिए। फिर उस हाथ का उपयोग "अंगन्यास" के लिए करना चाहिए।

ओंकार की उपासना

ओंकार, समस्त मंत्रों का मूल मंत्र है। परमात्मा का यह स्वाभाविक नाम है तथा विधाता के निःश्वास से सर्वप्रथम इस मंत्र की ध्वनि उठी और इसी का विस्तार वेदों के रूप में आविर्भूत हुआ। अतः समस्त मंत्रों का सेतु, सभी भाषाओं, शास्त्रों तथा मंत्रों का जनक, वेदों-उपनिषदों का सार, अभयदाता, समाधि और मुक्ति की अवस्था में पहुंचाने वाला यह अपूर्व मंत्र है। इसकी उपासना के लिए शास्त्रों में अनेक प्रयोग अधिकारी के भेद से बतलाए गए हैं। सर्वसाधारण से लेकर महान् सिद्ध तक के लिए ओंकार की साधना का विधान है। अतः अन्य मंत्रों की साधना से पूर्व ओंकार का जप अवश्य करना चाहिए। इसकी उपासना के कुछ प्रकार निम्नलिखित हैं—

महर्षि पंतजलि ने योगदर्शन में कहा है कि, "तज्जपस्तदर्थभावनम्", उस परमात्मा के वाचक ओंकार का जप अर्थचिंतनपूर्वक करना चाहिए। मुंडकोपनिषद् में बताया गया है कि "उपनिषद् प्रतिपादित ओंकार रूप धनुष को ग्रहणकर उस पर तप द्वारा तीक्ष्ण हुए बाण को चढ़ाकर खीचें और अविनाशी ब्रह्म को लक्ष्य मानकर उसे बेध

डालें" इस प्रकार ध्यान द्वारा तेज को बढ़ाने के लिए ओम् का ध्यानमय जप आवश्यक है। इसी में सात्त्विक, राजस और तामस ध्यान भी होते हैं। ओम् परमात्मा का साक्षात् स्वरूप है। अतः प्रातः स्नानसंध्यादि से निवृत्त होकर शुद्ध व पवित्र स्थान पर एक चौकी पर थाली में गुलाब के पुष्पों अथवा पंखुड़ियों से ओंकार की आकृति बनाकर उसकी आवाहन से लेकर पुष्पांजलि-प्रार्थना तक ओम् मंत्र जपते हुए नित्य पूजा करें। ऐसा करने से समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है। पुष्प के अभाव में कुंकुम-रोली से भी ओंकार लिखा जा सकता है।

यह सर्वविदित है कि हमारे श्वास-प्रश्वास से रात-दिन एक महामंत्र का जप चलता है। उसको शास्त्रकारों ने हंसमंत्र अथवा हंसगायत्री कहा है, जिसमें "सोऽहम्-हंसः" का स्वरूप निहित है। इसी सोऽहम् जप को अजपागायत्री कहते हैं। हमें इसका ज्ञान न होने से, हम इसके तत्व का साक्षात्कार नहीं कर पाते, किन्तु सिद्धजन इसी अजपाजय से मुक्ति के द्वार उद्घाटित करते हैं। यही सोऽहम् जब वाणी का रूप धारण करता है, तो "स" और "ह" का लोप होकर ओम् मंत्र बन जाता है। अतः ओम् का जप निरंतर करते रहने से सभी सिद्धियां सहज ही प्राप्त हो जाती हैं तथा कर्मकांड की बाह्य-पद्धतियों में होने वाली कठिनाइयों से भी बचा जा सकता है।

ओंकार को शास्त्रों में वेद का मूल बताया है तथा उसकी इसी महत्ता के कारण सर्वसाधारण को इसके स्मरण का निषेध भी किया गया है। अतः ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इसका जप कर सकते हैं, किन्तु उनका यज्ञोपवीत

संस्कार एवं नित्य स्नान-संध्यादिशील रहना आवश्यक है। स्त्रियों के लिए "ह्रीं" बीज ही ओंकार रूप है तथा सामान्य जाति के लोग राम, कृष्ण आदि नामों को ही ओंकार मानकर जप करें तो कल्याण अधिक होगा।

जप की यह पद्धति यंत्रों के लेखन प्रकार से समानता रखती है, जैसे पंचदशी-अंक-यंत्र, विंशांकयंत्र और अन्य अंकों के यंत्र आम के पटरे पर कुंकुम अथवा गुलाल आदि फैलाकर, उसमें अनार की टहनी की कलम द्वारा लिखने की पद्धति है, उसी प्रकार मंत्र के वर्णों को यंत्ररूप मानकर, कागज पर शुद्ध स्याही से बनाकर सोने की निब वाली पेन से मंत्र लिखें। प्रतिदिन नियमित संख्या में, निश्चित आसन पर, निश्चित पद्धति से इष्टमंत्र लिखें। इससे मन, वचन और शरीर का संयम बना रहता है और मानसिक जप भी चलता रहता है। ओंकार का लेखन भी इस प्रकार किया जाता है।

ओंकारमंत्र की शास्त्रीय विधि

ओंकार जप से पूर्व विनियोग और न्यास आदि की विधि निम्न है—

विनियोग—प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छंदः परमात्मा देवता तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—ब्रह्मर्षये नमः शिरसि। गायत्रीछंदसे नमो मुखे। परमात्मदेवतायै नमो हृदये। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

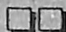
करंयास एवं हृदयादि न्यास "ओम्" मंत्र से ही करें। यथा—

करंयास—ओम् अंगुष्ठाभ्यां नमः ओम् तर्जनीभ्यां नमः। ओम् मध्यमाभ्यां नमः। ओम् अनामिकाभ्यां नमः। ओम् कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ओम् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिंयास—ओम् हृदयाय नमः। ओम् शिरसे स्वाहा। ओम् शिखाये वषट्। ओम् कवचाय हुम् ओम्। ओम् नेत्रत्रयाय वौषट्। ओम् अस्त्राय फट्।

ध्यान—ओंकारवाच्यमुच्चण्डं चण्डांशुसदृशप्रभम्। वासुदेवाभिधं ब्रह्म विश्वगर्भमुपास्महे।।

तत्पश्चात् मानसोपचार पूजन करके जप करें।





मनोवांछित मंत्रों का प्रयोग

आज के आधुनिक काल में भी व्यक्ति के जीवन में आए दिन कोई-न-कोई समस्या उठ खड़ी होती है। व्यक्ति कभी अपनी समस्या से ग्रस्त रहता है, तो कभी किसी दूसरे की समस्या का समाधान उसे करना पड़ता है। यह समस्याएं शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक अथवा आध्यात्मिक, किसी भी विषय की हो सकती हैं। यहां हम कुछ ऐसे सिद्ध और परम प्रभावी मंत्र दे रहे हैं, जो अपने प्रभाव के लिए अचूक हैं। कोई भी साधक इनको सरलता से सिद्ध करके, इनका प्रयोग कर सकता है। वैसे तो हमने यहां सभी प्रकार के मंत्रों को सिद्ध करने और उनके प्रयोग करने की विधि बतलाई है, फिर भी साधकों को और मांत्रिकों को चाहिए कि वो केवल उन्हीं मंत्रों का प्रयोग करें, जो दूसरों को लाभ पहुंचाने या उनकी समस्याओं का निपटारा करने के लिए हों। दुःख पहुंचाने वाले, हानि करने वाले अथवा मृत्यु के कगार पर पहुंचा देने वाले मंत्रों का प्रयोग न ही किया जाए, तो अच्छा है।

ऐसा व्यक्ति जो अपराधी मनोवृत्ति का हो, क्रूर, पापी, हिंसक हो, वो न तो गुरु से दीक्षा पाने का अधिकारी है,

और न ही वो किसी प्रकार की साधना में सफल हो सकता है। इसका कारण यह है कि उसकी तामसिक मनोवृत्ति उसे सदैव अस्थिर और असंतुलित बनाए रखती है। इसी प्रकार बकवादी, कुतर्की, मिथ्याभाषी, अहंकार-ग्रस्त, लोभी, लंपट, चोर, दुर्व्यसनी, परस्त्रीगामी, मूर्ख, जड़बुद्धि, क्रोधी, द्वेषकलु, ईर्ष्यालु, मोहग्रस्त, शास्त्रनिंदक, आस्थाहीन, दुराचारी, वंचक, पाखंडी और रोग-विकलांगता से व्यथित व्यक्ति भी साधना करने अथवा दूसरों को लाभ पहुंचाने योग्य नहीं होता। किन्तु फिर भी प्रत्येक साधक अपने लाभ के लिए ही साधना करता है, और यह भी निश्चित है कि एक का लाभ कहीं दूसरे के लिए हानिकर भी हो जाता है। पर-पीड़न के लिए स्वयं को संतुष्ट करना भारतीय-संस्कृति में श्रेयस्कर नहीं माना गया, तथापि् विवेकीजन अपने स्वार्थ की पूर्ति में भी लोकमंगल का ध्यान रखते हैं।

मानव-जीवन अभावों और विसंगतियों का आगार है। पूर्णतया शांति और सुख कहीं नहीं है, किसी को भी प्राप्त नहीं है। कोई-न-कोई कष्ट सभी को घेरे रहता है। व्यक्ति अपनी सामर्थ्य, विवेक, आस्था और स्थान-परिस्थिति के अनुसार स्वयं को कष्टमुक्त करने का प्रयास करता है। तन, मन, धन लगाकर वो अपने ऊपर आयी बाधा का निवारण करना चाहता है। इस प्रयत्न में वो कभी सफल होता है, तो कभी असफल रहता है और जब असफल रहता है, तो निराश हो जाता है। ऐसे समय में जब व्यक्ति स्वयं के ओजतेज अथवा अभीष्ट की प्राप्ति नहीं कर पाता है, तब या तो वो कुंठित, अविश्वासी, विद्रोही और नास्तिक हो जाता है या फिर अहंमुक्त होकर परम आस्था

और श्रद्धा-भक्ति के साथ शांत मन से अध्यात्म की शरण लेता है। ऐसी स्थिति में पूजा-पाठ, जप-तप और तंत्र-मंत्र के द्वारा वो स्वयं को सुखी और संतुष्ट बनाने का प्रयास करता है, और यह भी एक आश्चर्यजनक सत्य है कि उसमें वो किसी सीमा तक सफल हो जाता है। मंत्र और तंत्र की यही तो महत्ता है।

आपदा विनाशक मंत्र

ओम् ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते हनुमंते
मम कार्येषु ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
असाध्यं साधय साधय मम रक्ष रक्ष
सर्व दुष्टभ्यो हुं फट् स्वाहा।

किसी भी मंगलवार को प्रारंभ करके सात मंगलवार तक प्रतिदिन इस मंत्र का १०८ बार जप करने से शत्रुभय, आपदा, रोग, ऋण आदि का नाश होकर सौभाग्य की वृद्धि होती है।

आपत्ति निवारण मंत्र

अइउण्, ऋलृक् एओङ् ऐऔच्, हयवरट्
लण्, जमङणनम्, झभञ, घढधश्, जबगडदश्,
खछठथफ्, चटतव्, कपय्, शषसर्, हल्।

जिस समय आपत्तियां प्राप्त हों, तो उस समय भगवान् शिव के डमरू से प्राप्त १४ सूत्रों को एक श्वास में बोलने का अभ्यास करके एक माला (१०८ मंत्र) का जप प्रतिदिन करें, कैसा भी कठिन कार्य हो, शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। इसी मंत्र से निम्न प्रयोग भी किए जा सकते हैं—

१. बिच्छू के काटने पर इन सूत्रों के झाड़ने पर विष उतर जाता है।

२. जिस व्यक्ति को सर्प ने काटा हो, उसके कान में उच्च स्वर में इन सूत्रों का पाठ पढ़ने से विष आगे नहीं चढ़ता है।
३. उन्माद या मिरगी आदि रोग से पीड़ित होने पर इन सूत्रों से झाड़ना चाहिए तथा प्रतिदिन जल को अभिमंत्रित करके पिलाना चाहिए अथवा सफेद चंदन से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखकर कवच रूप में बांधना चाहिए।
४. ज्वर, तिजारी, चौथिया आदि में इन सूत्रों द्वारा झाड़ने-फूंकने से ज्वर शीघ्र छूट जाता है। अथवा इन्हें पीपल के एक बड़े पत्ते पर लिखकर गले या हाथ पर बांधने से भी ज्वर में लाभ हो जाता है।
५. भूत या प्रेत का प्रकोप जिस व्यक्ति पर छाया हुआ हो, उस पर उपरोक्त सूत्रों से अभिमंत्रित जल से छींटे देने से प्रकोप समाप्त हो जाता है। तथा इन्हीं सूत्रों को भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधने से प्रेतबाधा नष्ट हो जाती है।

कल्याणकारी मंत्र

ओम् अ सि आ उ सा नमः।

यह सर्वसिद्धि मंत्र है। इसका १,२५,००० जाप होने से मंत्र सिद्धि होती है। सर्व प्रकार की संपत्ति मिलती है। महाकल्याणकारी मंत्र है।

सर्वकामना पूरण मंत्र

ओम् ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

इस मंत्र की प्रतिदिन एक माला फेरने से कल्पवृक्ष के समान यह मनुष्य की सर्वकामनाएं पूरी करता है।

मनवांछित कार्यसिद्धि मंत्र

ओम् ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः
अ सि आ उ सा स्वाहा।

किसी शुभ मुहूर्त में ही इस मंत्र का जाप प्रारंभ करना चाहिए। इसका १,२५,००० जाप कर लेने से मनवांछित कार्य पूर्ण होता है।

सर्व संपत्तिदायक विद्या मंत्र

ओम् ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं
अ सि आ उ सा चुलु-
चुलु हुलु हुलु कुलु कुलु
मुलु मुलु इच्छियं मे
कुरु कुरु स्वाहा।

यह त्रिभुवन स्वामी का विद्या मंत्र है। चमेली के चौबीस हजार पुष्प लेकर, प्रत्येक पुष्प पर एकेक मंत्र पढ़ें और भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति पर अर्पण कर दें। जाप पूरा होने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर प्रतिदिन एक माला फेरने से पुत्रादि की प्राप्ति और संपत्ति का लाभ मिलता है।

संकट निवारण मंत्र

ओम् ह्रीं श्रीं ऐं लोगस्स उज्जोयगरे,
धम्म तित्थयरे जिणे, असहंते कित्त
इस्सं, चउवी संपि केवली, मम
मनोवांछितं कुरु कुरु ओम् स्वाहा।

शुभ मुहूर्त में मंत्र का जाप प्रारंभ करें। प्रातःकाल स्नान कर, शुद्ध सफेद वस्त्र धारण कर, सफेद आसन व सफेद माला का प्रयोग करते हुए, पूर्व की ओर मुंह करके कायोत्सर्ग-आसन में एक माला का जाप करें या चौदह

दिन में १२५०० जाप कर मंत्र को सिद्ध कर लें। सिद्ध होने पर संकट के समय मंत्र के तीन बार स्मरण मात्र से संकट दूर होगा, मान-सम्मान बढ़ेगा।

प्रसन्नतादायक मंत्र

ओम् क्रां क्रीं ह्रां ह्रीं उसभमजियं च वंदे
संभवमभिनंदणं च, सुमई च पउमप्पहं
सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे स्वाहा।

किसी भी शुक्लपक्ष में सोमवार से इसका जाप प्रारंभ करें। पद्मासन में प्रतिदिन एक माला का जाप करें। सफेद वस्त्र, आसन तथा माला का प्रयोग करें। पूर्व की ओर मुंह रखें। सफेद पदार्थों का भोजन करें। सात दिन तक मौनता रखें। एकांत स्थान में एकाग्रतापूर्वक सात दिन में १२५०० जाप करें। इस क्रिया से मंत्र सिद्ध हो जाता है। यह अत्यंत प्रसन्नतादायक मंत्र है।

वस्तु-प्राप्ति का मंत्र

ओम् ह्रीं एवं मए अभिथुया विहूयरयमला
पहीणजर मरणा चउवीसंपि जिणवरा
तित्थयरा में पसीयंतु स्वाहा।

शुभ मुहूर्त्त में आकाश की ओर मुंह करके एक ही दिन में पांच हजार बार मंत्र का जाप करें! इसी से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर जब भी कहीं जाना हो, मन में सात बार इस मंत्र का स्मरण कर, दोनों हाथ मुंह पर फेरकर जाएं, तो सर्व कार्य सफल होंगे, जिस किसी के पास जाकर कोई वस्तु मांगें और वह वस्तु उस व्यक्ति के पास होगी, तो वह उसे अवश्य दे देगा। यह वल्लभदर्शी मंत्र है।

यश-कीर्ति प्राप्ति का मंत्र

ओम् ह्रीं ऐं ओम् जीं जीं गीं गीं चंदेसु

निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम
दिसंतु मनोवांछित पूरय पूरय स्वाहा।

दीपावली, नवरात्र या रविपुष्य नक्षत्र के दिन चौबिहार उपवास कर, एकासन से चंदन की माला पर मंत्र का एक हजार जाप करें, तो यश-कीर्ति बढ़ती है और प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है।

कार्यसिद्धि का मंत्र

कोदर तपसी रामसुख, पीथल मोती हीर।
भोप दीप सुख श्याम जी, भिक्षु शिष्य बडवीर।।

किसी शुभ मुहूर्त्त में एक तेले की चौबिहार तपस्या द्वारा इसे प्रारंभ करें। सफेद वस्त्र, सफेद आसन, सफेद माला का उपयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह कर पद्मासन से मंत्र का जाप प्रारंभ करें। तीन दिन में १२५०० जाप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर जिस किसी भी कार्य के लिए जाना हो, तो पहले हाथ-मुंह धोकर, दोनों हाथ मुंह के सामने कर ९ बार मंत्र का उच्चारण कर हाथ, मुंह व शरीर पर फेर लें, फ्रि जाएं। सफलता अवश्य ही प्राप्त होगी।

बेचैनी दूर करने का मंत्र

ओम् हंसः हंसः।

कोई भी स्त्री-पुरुष किसी भी कारण से बेचैनी का अनुभव करे, तो उपरोक्त मंत्र से जल को अभिमंत्रित कर पिलाने से तुरंत बेचैनी दूर हो जाएगी।

वाक्सिद्धि का मंत्र

ओम् नमो लिंगोद्भव रुद्र देहि मे वाचा सिद्धि
बिना पर्वत गते द्रां द्रीं द्रूं द्रें द्रीं द्रः।

मस्तक (माथे) पर हाथ रखकर एक लाख जप पूर्ण करें, तो वचनसिद्धि होती है। वाक्‌सिद्धि में प्रवीणता आती है।

प्रवास-सुख का मंत्र

गच्छ गौतम शीघ्रत्वं ग्रामेषु ग्रामेषु च
आसनं वसनं शयनं तांबूलं यच्च कल्पये्।

आपको जिस नगर में जाना हो, उसके समीप पहुंचने पर सात बार इस मंत्र को पढ़ें। फिर नगर में प्रवेश करें, तो अपने आप समीचीन सुख-सुविधा आदि प्राप्त होंगी।

विपत्तिनाशक मंत्र

ओम् ह्रीं श्रीं ठं ठं ठं नमो भगवते
मम सर्व कार्याणि साधय साधय
मां रक्ष रक्ष शीघ्रं मां धनिनं
कुरु कुरु हुं फट् श्रियं देहि प्रज्ञां देहि
ममापत्तिं निवारय निवारय स्वाहा।

किसी शिवलिंग पर उपरोक्त मंत्र से सात बिल्व पत्र चढ़ाने के पश्चात् मंत्र की न्यूनतम माला का जप अवश्य करना चाहिए। जप घर के एकांत में या मंदिर आदि स्थल पर कहीं भी किया जा सकता है। यदि यह प्रयोग श्रावण मास में प्रारंभ किया जाए, तो बहुत ही अच्छा है। इस प्रकार नित्य जप करने से धन-प्राप्ति के साधन जुड़ते हैं। सब कार्यों में सफलता प्राप्त होती है, तथा समस्त विपत्तियों का नाश होता है।

विशेष—किसी भी मंत्र की सिद्धि में ध्यान एवं भावना का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। मंत्र को जपते समय साधक को चाहिए कि वह अपने इष्ट देवता का ध्यान करे एवं यह भावना करें कि व्यापार, नौकरी अथवा धन-प्राप्ति के किसी भी साधन में जो अवरोध उत्पन्न हो गए थे, वो

सब मिट गए हैं। सभी प्रतिकूल स्थितियां अनुकूलता में परिवर्तित हो गई हैं। जो शत्रु थे, अब मित्र हो गए हैं तथा भविष्य में सर्वदा सहयोग देंगे, ऐसा वचन दे रहे हैं। मेरे सौम्य व्यवहार से मेरे ग्राहक, मेरे अधिकारी आदि सभी लोग सर्वदा सहयोग देंगे, ऐसा वचन दे रहे हैं। सभी मुझसे संतुष्ट हैं और अब मुझे अज्ञात स्रोतों से धन की प्राप्ति हो रही है। यह भावना जितनी दृढ़ होगी, मंत्र भी उतना ही प्रभावशाली होकर कार्य संपन्न करेगा। यह भावना सभी मंत्रों में करनी चाहिए। जिस प्रकार का मंत्र हो, उसी प्रकार की भावना साधक को करनी चाहिए।

सर्वकष्ट निवारण मंत्र

हरि ओम् तत्सत्।
हरि ओम् शांतिः।।

बड़े-बड़े तांत्रिकों के मारण, उच्चाटन, वशीकरण आदि से प्राप्त कष्टों को दूर करने में यह मंत्र अद्वितीय है। मानव-शरीर के हर प्रकार के रोगों का शमन करने में भी यह उत्तम माना गया है। यह सर्व प्रकार के कष्टों को दूर करता है। मंत्र को सिद्ध करने की विधि निम्न है—

"हरि ओम् तत्सत्" मंत्र का प्रातःकाल स्नान आदि से निवृत्त होकर, धूप आदि से स्थान को पवित्र कर, १०८ बार पूर्ण विश्वास एवं एकचित्त से जप करें तथा संध्या को स्नान कर या केवल मुंह, हाथ-पैर धोकर "हरि ओम् शांति" मंत्र का जप इसी विधि से १०८ बार करें। इस प्रकार दोनों समय का जप लगातार २१ दिनों तक करें। ठीक २१वें दिन शुद्ध गाय का घी, जौ, तिल, शक्कर तथा मधु (शहद) से १०८ आहुतियां देकर शांत स्थान में हवन करें। इस क्रिया के संपन्न होते ही समझ लेना चाहिए कि मंत्रसिद्धि हो चुकी है।

सिद्ध हो जाने पर उचित और धर्मसंगत कार्य में, जैसे— मुकदमा, रोग, लड़ाई, विवाह, गृहस्थी-संचालन, नौकरी, व्यापार आदि से संबंधित हर संकट-निवारण में इससे पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। फल-प्राप्ति के पश्चात् एक नारियल प्रभु हरि को अवश्य कहीं भी चढ़ाकर प्रसाद बांट दें। इसे ताबीज के रूप में भी धारण किया जा सकता है। प्रातःकाल स्नानादि के पश्चात् कोरे और सफेद कागज पर "हरि ओम् तत्सत्" मंत्र को ऊपर तथा संध्याकाल वाले "हरि ओम् शांति" मंत्र को नीचे तथा बीच में "ओम्" शब्द कुंकुम से लिखकर, उक्त मंत्रों को सात बार बोलते हुए एवं श्रीहरि का ध्यान तथा कष्ट निवारण के लिए शक्ति देने की प्रार्थना करते हुए, धूप देकर तांबे या चांदी के ताबीज में भर दें, तद्नंतर पुरुष अपने दाएं बाजू में और स्त्री अपने बाएं बाजू में बांधे, बच्चों के गले में डाला जा सकता है।

विशेष—इस मंत्र का वशीकरण, उच्चाटन, मारण, दूसरे के हित का नाश या अन्य किसी भी अनुचित कार्य में कदापि प्रयोग न करें। उसमें सफलता नहीं मिलेगी, बल्कि हानि हो सकती है।

कुदृष्टिनाशक मंत्र

**ओम् नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय
ह्रीं धरणेंद्र पद्मावती सहिताय
आत्मचक्षु प्रेतचक्षु पिशाचचक्षु सर्वग्रह नाशाय
ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा।**

इस मंत्र की साधना कुदृष्टिनाश के लिए की जाती है। बहुधा ईर्ष्यालु, दुष्ट-हृदय, पापी और राक्षसी मनोवृत्ति वाले व्यक्तियों की दृष्टि पड़ने से बड़े-बड़े अनर्थ हो जाते

हैं। छोटे सुंदर व स्वस्थ बच्चे रोगी हो जाते हैं। पेड़ के फल खराब हो जाते हैं। गाय-भैंस दूध नहीं दुहने देती हैं। रोजगार बिगड़ जाता है। यह सब कुदृष्टि का ही परिणाम है। दीपावली की रात को उपर्युक्त मंत्र की एक माला फेरकर, हवनादि करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। उसके बाद जब कभी कुदृष्टि का प्रकोप दीख पड़े, तो उक्त मंत्र से सात बार अभिमंत्रित जल रोगी को पिलाने से कुदृष्टि की समस्त बाधाएं दूर हो जाती हैं।

ओम् नमो सत्यानाम आदेश गुरु को
ओम् नमो नजर जहां पर पीर न जानी
बोले छल सों अमृत वाणी
कहो नजर कहां ते आई
यहां की ठोर तोहि कौन बताई
कौन जात तेरी कहां ठाम
किसकी बेटी कहा तेरो नाम
कहां से उड़ी कहां को जाया
अब ही बस कर ले तेरी माया
मेरी जात सुनो चित लाय
जैसी होय सुनाऊं आय
तेलन तमोलन चुहड़ी चमारी
कायस्थनी खतरानी कुम्हारी
मेहतरानी राजा की रानी
जाको दोष ताहि सिर पर पड़े
जाहर पीर नज़र से रक्षा करे
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

सूर्य अथवा चंद्रग्रहण के समय जप कर मंत्र को सिद्ध

कर लें और जिस बालक, बड़े को नजर लग गई हो, उसे मोर के पंख से उक्त मंत्र को पढ़कर, ११ बार झाड़ दें। कैसी भी नजर होगी, कैसी भी कुदृष्टि होगी, प्रभावहीन हो जाएगी।

अशांति निवारक मंत्र

धां धीं धूं धूर्जटेः
पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवी
शां शीं शूं में शुभं कुरु।

प्रातः स्नान करके घर या मंदिर में जाकर काली या दुर्गा के चित्र या प्रतिमा के ऊपर लाल पुष्प चढ़ाएं, दीप और धूप जलाएं, किसी भी माला से मंत्र का १०८ बार जाप करें, २१ दिन में मंत्र सिद्ध हो जाएगा। यह जाप नियमित रूप-से भी किया जा सकता है। साधन-संपन्न होने पर भी जिसके परिवार (घर) में कलह का साम्राज्य व्याप्त रहता हो, किसी भी कारण से रहता हो तो पत्नी या पति, दोनों में से कोई भी इस मंत्र को सिद्ध कर सकता है। नित्य पांच या सात माला का जाप करते ही घर-परिवार में सुख-शांति का वातावरण बन जाएगा।

विरोध-शमन का मंत्र

सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धन-धान्य सुतांवितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।

पूजन के कक्ष में काली या दुर्गा का चित्र लगा लें। चित्र पर पुष्प चढ़ाएं। दीप-धूप जलाकर १०८ बार मंत्र का जाप करें। २१ दिन में यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। यदि मकान मालिक और किराएदार के बीच कोई विवाद चल रहा हो, अधिकारी या कर्मचारी के बीच कोई विरोध हो,

मित्रों, भाइयों, पिता–पुत्र या पत्नी–पति के बीच विरोध, विवाद या मनमुटाव हो, तो इस मंत्र के जाप मात्र से ही शांति व्याप्त हो जाएगी। बड़ा ही प्रभावशाली मंत्र है।

आत्मविश्वास–प्राप्ति का मंत्र

> **ओम् हौं जूं सा ओम् भूर्भुव स्वाहा**
> **ओम् त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि-**
> **वर्धनम् उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय**
> **मामृतात् ओम् स्वर्भुवः भूः ओम्**
> **सः जूं हौं ओम् स्वाहा।**

किसी भी मंगलवार से १०८ बार प्रातः इस मंत्र का ४५ दिनों तक जाप करें। इससे आत्मविश्वास में निश्चय ही वृद्धि होगी। जीवन के प्रति मोह एवं ललक उत्पन्न होगी। मानसिक हीनता पास भी न फटकेगी।





लाभकारी मंत्र-संग्रह

मंत्रशक्ति का प्रभाव असीम है, इस बात को हम पहले भी बता आए हैं। मंत्रशक्ति से मनुष्य का अंतःकरण स्थिर और सबल हो जाता है। मंत्रों के द्वारा जटिल और असंभव प्रतीत होने वाले कार्य भी संपादित कर लिए जाते हैं। साधारण स्वप्न की समस्या हो या मारण-क्रिया की, मंत्रों के द्वारा सबका निपटारा सहज ही हो सकता है।

दिन भर काम करने के बाद मनुष्य रात में सोता है और यह शयन उसके लिए आवश्यक भी है। विश्राम के द्वारा व्यक्ति अपनी व्यय हो चुकी शक्ति को पुनः प्राप्त करता है। निद्रा लंबी, गहरी और निर्विघ्न हो, यह बहुत कुछ व्यक्ति के खानपान, आचार-व्यवहार और वातावरण पर निर्भर करता है। निद्रालीन व्यक्ति स्वप्न देखता है। यह स्वप्न दुःखद, सुखद तथा भयभीत कर देने वाले हो सकते हैं। बहुत-से लोग ऐसे स्वप्नों से पिंड छुड़ाना चाहते हैं। बहुत-से लोग स्वप्न देखना चाहते हैं और इसलिए देखना चाहते हैं कि उन्हें स्वप्न में किसी को देखने की चाह होती है। यहां हम प्रारम्भ में स्वप्न से संबंधित कुछ स्वप्नों के मंत्र बताने जा रहे हैं, जिनको सिद्ध कर लेना परम आवश्यक है।

दुःस्वप्ननाशक मंत्र

चतुर्भुज रक्ततनुं त्रिनेत्रं
पाशांकुशौ मोदकपात्र, दंतौ।
करैर्दधानं सरसी रुहस्थं
गणाधिनाथं शशिचूड मीडे।।

शयन के पूर्व बिस्तर पर लेटे-लेटे इस मंत्र को ११ या २१ बार मन-ही-मन पढ़ें और फिर सो जाएं, रात भर दुःखद या डरावने स्वप्न नहीं आएंगे। यदि आप मंत्र-संख्या के पूरा होने से पहले ही बीच में सो जाएं तो मंत्र का प्रभाव और अधिक बढ़ जाएगा।

ओम् ह्रीं क्लीं दुर्गार्तिनाशिन्यै महामाये स्वाहा,
कल्पवृक्षेति लोकानां, मंत्र सप्तदशाक्षरः।
शुचिश्च दशधा जप्त्वा, दुस्वप्न सुखवान भवेत।।

स्वप्न यदि प्रचंड रूप में दीख रहे हों, तो सोने से पहले बिस्तर पर इस मंत्र को पढ़ते हुए जल छिड़ककर, धूप दिखा दें। साथ ही सोने से पहले ५ या ११ बार जप करें। इससे निद्रा में किसी भी प्रकार के स्वप्न बाधा नहीं डाल पाएंगे।

ओम् अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सत्यं जनार्दनम्।
हंसं नारायणं चैव, ह्येतन्ना माष्टकं शुभम्।।

प्रातः स्नान के पश्चात् शुद्ध स्थान पर बैठकर, पूर्व की ओर मुख करके मंत्र को मात्र दस बार पढ़ें तथा रात में सोने से पहले भी दस बार पढ़ें, इस प्रकार से सभी प्रकार डरावने, भयंकर, दुःखदायक, पीड़ादायक और अनिष्टकारी दुःस्वप्न दिखाई देने बंद हो जाएंगे।

ओम् नमः।
शिवं दुर्गा गणपति,

कार्तिकेय दिनेश्वरम्।
धर्मं गंगां च तुलसीं;
राधां लक्ष्मीं सरस्वतीम्।।

प्रातःकाल स्नानादि के पश्चात् और रात्रि में सोने से पूर्व बिस्तर पर बैठ या लेटकर दस बार उक्त मंत्र का जाप करने से ही दुःस्वप्नों की पीड़ा शांत हो जाएगी और आगे फिर कभी ऐसे स्वप्न दिखाई नहीं देंगे।

ओम् ऐं ह्रीं रामदूताय नमः।

सोने से पहले इस मंत्र को प्रतिदिन २१ बार जपें और हनुमानजी का स्मरण करते हुए सो जाएं। किसी भी प्रकार के दुःस्वप्न दिखाई नहीं देंगे।

कार्य-सूचना का स्वप्न मंत्र

चउबीस तीर्थंकर तणी आण,
पंच परमेष्ठी तणी आण,
चउबीस तीर्थंकर तणी तेजी,
पंच परमेष्ठी तणी तेजी,
ओम् ह्रीं अर्हं उत्पत्तये स्वाहा।

रवि पुष्य योग की संध्या में स्नान कर, कोई-सा सुगंधित तेल, चंदन का लेप कर सुगंधित पुष्पों की माला गले में पहनकर, पवित्र-स्थान पर साफ और स्वच्छ वस्त्र धारण कर, पूर्व दिशा की ओर मुंह करके खड़े होकर, स्फटिक की माला से एक माला जाप करें। इस प्रकार चारों दिशाओं में एकेक माला जाप करें। तत्पश्चात् जो कार्य मन में सोचा हो, उसका चिंतन कर भूमि पर सो जाएं। दो घंटे रात शेष रहने पर, स्वप्न में उस कार्य के शुभाशुभ का ज्ञान हो जाएगा। उस दिन सफलता न मिलने पर दो दिन तक यह प्रयोग करें। सफलता अवश्य मिलेगी।

भविष्यबोधक स्वप्न मंत्र

दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्व कामार्थ साधिके।
मम सिद्धमसिद्धि वा स्वप्ने सर्व प्रदर्शय।।

रात को सोते समय देवी दुर्गा का ध्यान करके सात बार यह मंत्र पढ़ लेने से, रात में स्वप्न द्वारा भावी घटना का संकेत मिल जाता है।

ओम् ह्रीं अर्हं क्ष्वीं स्वाहा।

माथे पर चंदन का तिलक करके, इस मंत्र की एक माला फेरकर सो जाएं। मन में जो भी प्रश्न सोचा होगा, उसका उत्तर मिल जाएगा। यदि एक रात में ऐसा न हो, तो दो-तीन रातों में यह प्रयोग करें।

शुभाशुभफल का स्वप्न मंत्र

ओम् णमो अरिहा ओम् भगवउ बाहुबलीस्स्य इह समणस्स अमले विमले निम्मल नाण पयासिणी ओम् णमो सव्व भासई अरिहा सच्च भासई केवलीण एं एवं सच्च वयणेण सच्च होउ मे स्वाहा।

इस मंत्र का ध्यान रात्रि के समय खड़े-खड़े कायोत्सर्ग में करें। जब निद्रा आने लगे तो भूमि पर ही कोई चादर बिछाकर सो जाएं। इस क्रिया से स्वप्न में शुभाशुभ का ज्ञान होगा।

शत्रु-सम्मोहन मंत्र

ओम् वान रुद्रामी मुखी श्वेत श्वेतदामी
पट्टिका कांचनी। आलम्बिनी द्रव द्रव
ओम् घं घं वं वं ओम् ठः ठः।

किसी भी रविवार या मंगलवार के दिन, शत्रु के दाएं पैर के नीचे की मिट्टी से एक पुतला-सा बनाकर, उस पर काला कपड़ा डालें और व्याघ्र-चर्म पर बैठकर प्रतिदिन

एक माला मंत्र प्रतिदिन जपें। इसके लिए स्फटिक की माला का प्रयोग करें। इस क्रिया से शत्रु सम्मोहित हो जाता है।

अथ वशीकरण मंत्र

ओम् नमो कट कट घोर रूपिणी
अमुकं में वशमानय स्वाहा।

इस मंत्र को ग्रहणकाल में १००० बार जपें। फिर बाद में (रविवार को) इस मंत्र से अभिमंत्रित करके अन्न भोजन करें और भोजन करते समय उसका नाम लेते रहें, जिसका वशीकरण करना है। वो शीघ्र वशीभूत हो जाएगा।

ओम् णमो अरहंताणं अरे अरिणि
मोहिणीं अमुकं मोहय मोहय स्वाहा।

इस मंत्र को पहले एक लाख पच्चीस हजार जाप करके सिद्ध करें। चावल अथवा पुष्प को १०८ बार अभिमंत्रित कर, जिस स्त्री के सिर पर गिराएंगे, वो वश में हो जाएगी। "अमुकं" के स्थान पर उस स्त्री का नाम लेना चाहिए।

ओम् ह्रीं णमो भगवओ ओम् पासनाहस्स
थंभय सव्वाओ ई ई जिणाणए मा इह,
अहि हवंतु, ओम् ह्रीं क्षूं क्ष्रीं क्षः स्वाहा।

इस मंत्र का १२५०० जाप कर पहले इसे सिद्ध कर लें। फिर सफेद पुष्प को १०८ बार अभिमंत्रित कर राज्याधिकारी को सुंघाएं, तो वश में होकर वो वैसा ही करेगा, जैसा आप उससे चाहेंगे।

वीनोन तपयोग संरक्ता सतोप विष्टांग।
रक्तचंदन लिप्तांगा भक्तानां च शुभप्रदाम्।।

गोबर-मिट्टी से लिपी भूमि पर त्रिभुज बनाकर, उसके

मध्य में भाई आदि बंधु (जिसे वश में करना है) का नाम लिखकर सिंदूर चढ़ाएं, फिर कंबल के आसन पर बैठकर प्रतिदिन एक माला मंत्र जपें और शुद्ध घी से हवन करें। इस प्रयोग से महाविरक्त और विद्रोही बंधु भी वशीभूत हो जाता है!

ओम् नमः आदेश गुरु का
फूल फूल फूलेश्वरी फूल लगले
बंधावे सेली एक फूल हंसे
एक फूल विकसे एक फूल में
कलवो वीर कालका रो वीर
पर नारी सूं हमारा सीर
आवे तो बुटे, नहीं तो काला भैरू
नारसिंह छूटे खाय
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा
ठः ठः ठः स्वाहा।

जिस स्थान पर मंत्र-जाप करना हो, उसे साफ कर, गोबर-मिट्टी से लीप दें। फिर बीच में एक ताजा पुष्प और दीप जलाकर रखें। अब मंत्र का १०८ जाप करें और दीपक से काजल तैयार कर, पुष्प और काजल को मंत्र से अभिमंत्रित करें। जिस स्त्री को वशीभूत करना हो, उसे पुष्प सुंघाएं और पहले स्थान पर उलटा करके रख दें और काजल का दाग उसकी साड़ी या पहने हुए कपड़े के कोने पर लगा दें। फिर स्त्री के रात्रि में आने का आह्वान करें, निश्चय ही स्त्री रात्रि में दौड़ी आएगी और वशीभूत हो, आज्ञा का पालन करेगी।

अग्निस्तंभन मंत्र

ओम् नमो कोरा करुवा, जल से भरिया।

ले गौरां के सिर पर धरिया। ईश्वर
ढोले, गिरज्या न्हाय, जलती आग
शीतल हो जाय। सत्य नाम आदेश गुरु को।

इस मंत्र को २१ दिन तक रोज १००० जाप कर सिद्ध कर लें। फिर जब भी काम पड़े, कोरे मिट्टी के बर्तन में जल भर कर, उसे २१ बार अभिमंत्रित कर जल का छींटा दे, तो जलती आग बुझ जाएगी।

ससुराल वापसी का मंत्र

ओम् नमो भोगराज भयंकर परिभूय
उत उधरई जोई जोई देखे मारकर
तासो सो दिखे पाव परंता
ओम् नमो ठः ठः ठः स्वाहा।

सांभर नमक की १०८ कांकरी अभिमंत्रित कर खिलाएं, तो ससुराल से रूठकर आने वाली स्त्री ससुराल लौट जाए और फिर लौटकर न आए।

कुश्ती जीतने का मंत्र

ओम् नमो आदेश गुरु को, अंगा पहरूं,
भुजंगा पहरूं पहरूं लोहा सार,
आते का हाथ तोड़ूं, पैर तोड़ूं मैं।
हनुमंत वीर उठ उठ नाहर सिंह वीर तूं
जा उठ सोलह सौ सिंगार मेरी पीठ लगे
माही हनुमंत वीर लजावे तोहि पान-
सुपारी नारियल अपनी पूजा लेहु आपना
सा बल मोहि पर देहु मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

किसी भी मंगलवार को गेरू का चौका लगाकर, लुंगी का लंगोट बांधकर धूप, दीप देकर हनुमान जी की पूजा

करें। फिर उसी दिन से ४० दिन तक प्रतिदिन १०८ की संख्या में मंत्र का जप करें तथा मंगलवार के दिन पान, सुपारी एवं खोपरे का भोग रखें। अन्य दिन भोग के लिए लड्डू रखा करें। यों मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय अर्थात् कुश्ती लड़ने से पहले हनुमानजी को दंडवत् करके सात बार इस मंत्र को अपने ऊपर पढ़कर अखाड़े में उतरें। इस क्रिया से प्रतिद्वंद्वी पर विजय प्राप्त होगी।

बच्चे द्वारा स्तनपान करने का मंत्र

> **आंदूनी कांदूनी कुल तोरे बासा,**
> **पोरेरे छेले कांदिए कोरियाछो तमासा,**
> **नाक काटबो, चूल काटबो, बेचिबो**
> **वालो कि यार हाटे न कांदो चूप**
> **कोरे थाको, भावेर कीले लो कोरे थाको**
> **माहादेवेर बोलेकार दोहाई माहादेवेर दोहाई।**

एक कटोरी पानी से भरें। उस पर तीन बार यह मंत्र पढ़ें और प्रत्येक बार फूंक मारें, फिर उस पानी से मुंह धोएं, नाभि से लगाएं व स्तनों को धोएं, बच्चा (शिशु) दूध पीने लगेगा।

वीर्यस्तंभन मंत्र

> **ओम् नमो भगवते महाबल पराक्रमाय**
> **मनोभिलाषितं स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा।**

गाय के हल्के गुनगुने दूध को इस मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके पी जाएं। इस दूध को पीने से वीर्यस्तभंन होता है, काम-सुख की प्राप्ति होती है।

क्रोध-शांति का मंत्र

> **ह्लीं ठीं ठीं क्रोध प्रशमन**

हीं हीं हां क्लीं सः सः स्वाहा।

इस मंत्र को सात बार पढ़कर, पहनने के वस्त्र के एक कोने में गांठ लगाने से, जिस व्यक्ति के उद्देश्य से मंत्र का जाप किया जाए, वो चाहे स्त्री हो या पुरूष, समीप पहुंचते ही उसका क्रोध शांत हो जायेगा।

खाना हज़म करने का मंत्र

ओम् नमो आदेश गुरु को अगस्त्यं
कुंभकरणं च शतिं च वडवानलः
आहार पाचनार्थाय स्मरत भीमस्य
पंचकम् स्फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

खाना खाने के पश्चात् पेट में बेचैनी हो जाए, ऐसा प्रतीत हो जैसे खाना पेट में यों ही रखा है, तो सात बार यह मंत्र पढ़कर पेट पर हाथ फिराएं। इससे अधिक खाया हुआ भोजन भी बहुत जल्दी हज़म हो जायेगा।

शत्रु एवं भूत-पिशाच निवारण मंत्र

ओम् हीं अ सि उ सा सर्व दुष्टान्
स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय जंभय
जंभय अंधय अंधय वधिरय वधिरय
मूकवत् कारय कारय कुरु कुरु
हीं दुष्टान् ठः ठः ठः।

जिस समय शत्रु सामने आक्रमण करने आए, तो मुट्ठी बंद करके इस मंत्र का १०८ बार जाप करें। वह मुट्ठी शत्रु के सामने करें, तो शत्रु स्वयं परास्त हो जाएगा। किसी पर भूत, प्रेत, पिशाच की छाया पड़ी हो, तो मुट्ठी बंद करके इस मंत्र का १०८ बार उच्चारण करें व झाड़ दें। इस क्रिया से उनका उपद्रव शांत हो जाएगा। ईशानकोण की तरफ मुंह करके आधी रात के समय आठ रात्रि तक

इस मंत्र की साधना करें, धूप-दीप करें, ११०० जाप करें, तो व्यंतर-देव के उपद्रव का शमन हो जाएगा। यह बहुत ही सफल और प्रभावकारी मंत्र है।

शत्रु नाशक मंत्र

ओम् ह्रीं श्रीं अमुकं दुष्टम् साधय-
साधय अ सि आ उ सा नमः।

इस मंत्र की २१ दिन तक प्रातःकाल रोज एक माला फेरें, फिर जब काम पड़े, तो १०८ बार मंत्र का जप करने मात्र से शत्रु का भय, क्लेश व आपत्ति का निवारण होता है। अमुक के स्थान पर शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

वस्तुविक्रय का मंत्र

नट्ठ मयट्ठाणे, पणट्ठ कमट्ठ नट्ठ संसारे।
परमट्ठ निट्ठियट्ठे, अट्ठगुणा धीसरं वंदे।।

इस मंत्र की साधना कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन संध्या बीत जाने के पश्चात् एक पहर रात्रि जाने पर प्रारंभ करें। जाप करते समय धूप, दीप रखें व गुग्गल का हवन करें। प्रतिदिन दो हजार जाप करें। ११००० जाप होने पर मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्ध होने के बाद जिस वस्तु का विक्रय करना हो, उस वस्तु को इस मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर, फिर बाजार में बिक्री के लिए निकालें तो मुंह मांगे दाम मिलेंगे और तुरन्त बिक्री होगी।

भूत-प्रेतों से मुक्ति का मंत्र

ओम् ह्रीं कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे
मुणिसुव्वयं नमि जिणम् च, वंदामि
रिट्ठनेमिं, पासं तह बद्धमाणम् च
मम वांछितं पूरय पूरय ह्रीं स्वाहा।

पीले वस्त्र, पीला आसन और पीली माला का उपयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह कर जाप शुरू करें। ११००० जाप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्ध होने पर भूत-प्रेत आदि के भय के साथ मंत्र की एक माला फेरने से संकट टल जाता है। यदि किसी को भूतादि के आतंक से ज्वर चढ़ आए (भय आदि के कारण भी ज्वर चढ़ आता है), तो अनार की कलम से, अष्टगंध स्याही से भोजपत्र पर लिखकर रोगी के गले में डाल दें, ज्वर शीघ्र उतर जाएगा। रविपुष्य नक्षत्र में लिखकर इसे अपने पास रखने से यात्रादि में भी किसी प्रकार का भय नहीं होगा।

विजय-प्राप्ति का मंत्र

ओम् अंबराय कित्तिय-वंदिय-महिया,
जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्ग
बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमंदितु स्वाहा।

किसी भी शुभ मुहूर्त में उत्तर दिशा की ओर मुंह करके ग्यारह दिन में १५००० जाप कर यह मंत्र सिद्ध कर लें, फिर इक्कीस बार इस मंत्र का स्मरण कर, जो स्वर चलता हो, उस तरफ का पैर आगे रखकर कार्य करने जाएं, तो वह कार्य अवश्य ही सफल होता है। कोर्ट-कचहरी का कार्य उन्हें देखते ही सध जाता है। लोग प्रसन्न होते हैं और सम्मान करते हैं।

जादू-टोना नाशक मंत्र

ओम् जंघा चारणाणं
ओम् विज्जा चारणाणं
ओम् ह्रीं वेउव्विय ईड्ढिपत्ताणं
ओम् ह्रीं आगासगामीणं नमः स्वाहा।

रविवार के दिन इस मंत्र को भोजपत्र पर यक्षकर्दम स्याही से लिखें। मादलिया में डालकर पास में रखें, तो उसके ऊपर कोई जादू-टोना करेगा, तो उसका कोई भी प्रभाव नहीं पड़ेगा।

ओम् ह्रीं उग्गतवचरणाणं
ओम् ह्रीं दित्ततवाणं
ओम् ह्रीं तत्ततवाणं
ओम् ह्रीं पडिमापडिवंनाणं स्वाहा।

इस मंत्र को १०८ बार पढ़कर मोरपंख से झाड़ा देना चाहिए। फलतः दूसरों के द्वारा किया हुआ अनिष्ट प्रयोग नष्ट हो जाएगा। भूत-प्रेत का दोष टलेगा।

मृत्युसूचक मंत्र

ओम् नमो बाहुली महा बाहुली
अमुकस्य शुभाशुभं कथय स्वाहा।

इस मंत्र का ११००० जाप कर पहले इसको सिद्ध कर लें। फिर रोगी मनुष्य के सिर से पैर तक के माप का एक सफेद वस्त्र या डोरी लें। उसको प्रातःकाल सात बार सूर्य के सामने खड़े होकर इस मंत्र से अभिमंत्रित करें। अमुकस्य के स्थान पर रोगी का नाम लें। वह वस्त्र या डोरी अभिमंत्रित कर रोगी के सिरहाने पर रख दें। दूसरे दिन प्रातःकाल वह कपड़ा या डोरी माप कर देखें। परिमाण से छोटी निकले, तो निकट भविष्य में मृत्यु होगी, यह समझना चाहिए।

गर्भ एवं शुक्र स्तंभन मंत्र

ओम् रहु रहु हो श्वेत वर्ण पुरुष
रहु रहु हो हरि धवल पुरुष
रहु रहु हो शंखचक्रगदाधर रहु रहु।

किसी कुआरी कन्या के हाथ से कते हुए सूत के सात डोरे लें। प्रत्येक डोरे पर एकेक बार मंत्र पढ़कर उनको मिला लें। फिर सात बार मंत्र पढ़कर एक गांठ दें। इस प्रकार १६ गांठ लगाएं। उसे स्त्री की कमर से बांध दें, तो गर्भ-स्तंभन होगा व पुरुष की कमर में बांध दें, तो शुक्र-स्तभंन होगा।

व्याख्यान देने का मंत्र

ओं ह्रीं श्रीं कीर्ति कौमुदी वागेश्वरी
वर दे कीर्ति मुख मंदिरे स्वाहा।

इस मंत्र की प्रतिदिन एक माला फेरें। व्याख्यान में जाने से पहले मंत्र को एक बार पढ़ लें, फिर व्याख्यान दें। प्रशंसा, सम्मान और सफलता की प्राप्ति होगी।

डूबने से बचने का मंत्र

ओम् ह्रीं थंमेउ जल जलणं दुट्ठं थंमेउ स्वाहा।

किसी शुभ मुहूर्त में ११००० जाप कर, मंत्र को सिद्ध कर लें। जब आवश्यकता हो, तो मंत्र को जपने मात्र से किश्ती, बोट आदि जल में डूबने से बच जाएगी।

अनाज की सुरक्षा का मंत्र

ओम् नमो भगवउ रिद्ध करी
सिद्ध करी वृद्धि करी, अणिमा,
महिमा ए धात सुलै तो बालीनाथ
अचल गुसांई की आण।

सर्वप्रथम इस मंत्र को २१ दिन तक नित्यप्रति एक माला फेरकर सिद्ध करें। फिर नदी के किनारे २१ कंकड़ों को अभिमंत्रित कर अनाज में रखें तो उसमें कीड़ा नहीं लगेगा।

वृक्ष हरा करने का मंत्र

ओम् नमो आदेश गुरु कूं अघोर

महा अघोर अजर अघोर वजर अघोर
अंड अघोर पिंड अघोर सिव अघोर
संगति अघोर चंद अघोर सूरज अघोर
पवन अघोर पाणी अघोर जमी अघोर
आकाश अघोर अनादि पुरुष बूजंत
हो अलील ए घट पिंड का रखवाला,
जल में न डूबणा अगन में न बलणा
सहस्त्रधारा न कटणा, जमीन के पेट
होय लिप जाणा सूका रूंख हरिया
होणा। ओम् अघोर गंव सोह्य।

पहले ११००० जाप करके इस मंत्र को सिद्ध कर लें। फिर जो वृक्ष सूख रहा हो, उसके पास जाकर, पूर्व की ओर खड़े होकर पानी भरे हुए कांसे के प्याले में नौ बार मंत्र पढ़कर, पानी को वृक्ष के चारों ओर छिड़क दें, कुछ ही दिनों में वृक्ष हरा हो जाएगा।

दूध बढ़ाने का मंत्र

ओम् ह्रीं कराली पुरुष मुख रूपा ठः ठः।

इस मंत्र से २१ बार जल अभिमंत्रित कर गाय-भैंस के आंचल पर प्रतिदिन लगाने से दूध बढ़ जाता है।

ओम् हुंकारिणे प्रसर शतीत।

कार्तिक शुक्ला १४ के दिन एक माला फेरने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर रोज ताजी घास अभिमंत्रित कर, गाय-भैंस को खिलाने से वो ज्यादा दूध देने लगती है।

वैवाहिक संबंध का मंत्र

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।

प्रातःकाल स्नान करके दुर्गाजी के चित्र पर लाल पुष्प

चढ़ाएं, दीप जलाएं फिर मंत्र का जाप १०८ बार नित्य करें और उस समय तक करते रहें, जब तक कि सुयोग्य, सुशील और सुंदर पत्नी की प्राप्ति न हो जाए।

स देवि नित्यं परितप्यमान
व्यामेव सीतेत्यभिभाषमाणः
दृढव्रतो राजसुतो महात्मा
तवैव लाभाय कृतप्रयत्नः।

प्रातः स्नान करके १०८ बार लगातार ४५ दिनों तक इस मंत्र का जाप करने से वैवाहिक संबंध शीघ्र बनता है। मंत्र-जाप की अवधि में देवी काली की प्रतिमा अथवा चित्र रखें और उस पर पुष्प चढ़ाकर धूप और दीपक जलाएं।

हे गौरि शंकरार्धांगि यथा त्वं शंकरप्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कांतकांतां सुदुर्लभाम्।।

प्रातःकाल स्नान करके गौरा (पार्वती) के चित्र पर लाल पुष्प चढ़ाएं और दीप जलाएं। १०८ बार मंत्र का जाप करें। उत्तम पति की कामना करने वाली लड़कियां नित्य इस मंत्र का जाप करें। उनकी इच्छा के अनुरूप पति मिलेगा।

परीक्षा में पास होने का मंत्र

ओं नमः श्रीं श्रीं अहं वद् वद् वाग्वादिनी
भगवती सरस्वत्यै नमः स्वाहा
विद्यां देवि मम ह्रीं सरस्वती स्वाहा।

अमावस्या के तीसरे दिन से अथवा चंद्रग्रहण के समय इस मंत्र का एक लाख जाप करें। उसके बाद परीक्षा देवें, सफलता मिलेगी।

ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं भगवति माहेश्वरी
अंनपूर्णा स्वाहा। ओम् ह्रीं श्रीं क्रीं ऐं
सौं महालक्ष्मी प्रसीद श्रीं ठंठं स्वाहा।

रात्रि के समय एक लाख मंत्र का जाप करें। सिद्ध हो जाने पर, परीक्षा से पहले मंत्र का जाप करें। सफलता अवश्य मिलेगी।

काकबंध्यादोष दूर करने का मंत्र

ओम् नमः शक्तिरूपाय मम गृहे पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।

जिस स्त्री को एक बार संतान होकर गर्भधारण न हो, तो इस मंत्र का जप प्रतिदिन १०८ बार २१ दिनों तक करना चाहिए। इससे उसका काकबंध्या का दोष दूर हो जाएगा।

पुत्रप्रद द्वादशाक्षरी मंत्र

ओम् ह्रीं ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।

शिवजी ने पार्वती की प्रार्थना पर इस मंत्र का कथन किया। आम के वृक्ष पर चढ़कर उसकी किसी शाखा पर बैठे हुए अथवा वृक्ष के नीचे बैठकर एकाग्रचित होकर नित्य १०८ बार मंत्र का जाप करें।

पति को प्रसन्न रखने का मंत्र

ओम् क्लीं त्रयंबकं यजामहे सुगंधिं पतिवेदनम्।
उवरिकमिव बंधनादितो मुक्षीय माऽमृतात्।।
क्लीं ओम्।।

पति की अप्रसन्नता की परिस्थिति में सुखी रहने और पति को अनुकूल बनाने की इच्छा रखने वाली स्त्री प्रतिदिन १०८ बार मंत्र का जाप कर निश्चय ही पति को प्रसन्न करने में सफल हो जाती है।

पति को वश में करने का मंत्र

ओम् अभित्वामनुजातेन दधामि मम वाससा।
यथा सो मम केवलो नान्यासां कीर्तयाश्च च।।

जिस स्त्री का पति अनुकूल न हो अथवा दूसरी स्त्रियों

पर आसक्ति अधिक रखता हो, तो उसे अपने कपड़े मंत्र से अभिमंत्रित कर पहनने चाहिए।

स्त्रीसौभाग्य-रक्षा का मंत्र

ओम् इमा नारीरविधवाः सुपत्नीरांजनेन सर्पिषा संस्पृशंताम् अनश्रवो अनमीवा सुरत्ना आरोहंतु जनयो योनिमग्रे व्याकरोमि हविषाहसेतौ तौ ब्राह्मण व्यहं कल्पयामि स्वधां पितृभ्यो अजरा कृणौमि दीर्घेणायुषा समिमांत्सृजामि।

गृहस्थी जीवन को सुखी एवं संपन्न बनाने तथा अपने सौभाग्य की रक्षा के लिए स्त्रियां नित्य प्रति इन मंत्रों का ११ बार पाठ करें तथा भगवान शिव और पार्वती के युगल स्वरूप की पूजा करें।

प्रेतबाधा निवारण मंत्र

ओम् नमो दीप मोहे दीप जागे
पवन चले पानी चले शाकिनी चले
डाकिनी चले भूत चले प्रेत चले
नौ सौ निंयानवे नदी चले
हनुमान वीर की शक्ति मेरी भक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

हनुमानजी के किसी भी मंदिर में तेल का दीपक जलाकर, सवा लाख जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर किसी भी तरह की प्रेतबाधा होने पर मोर के पंख से १०८ बार झाड़ दें। बाधा दूर हो जाएगी।

ओम् काला भैरव कपिला जटा
रात दिन खेले चोपटा
काला भस्म मुसाण
जेहि मांगूं तेहि पकड़ी आन
डंकिनी संखिनी पट्ट सिहारी

जरख चढ़ंती गारख मारी
छोड़ि छोड़ि रे पापिनी बालक पराया
गरेखनाथ का परवाना आया।

पहले ग्रहण आदि के समय मंत्र का सवा लाख जप करके सिद्ध कर लें। किसी बालक पर प्रेतादि की छाया हो, तो इस मंत्र को २१ बार पढ़कर तीर या चाकू से झाड़ दें तथा २१ बार मंत्र से जल को अभिमंत्रित कर पिला दें।

डाकिनी-शाकिनी नाश मंत्र

यह नागदमनी महाविद्या है। इसके स्मरण मात्र से डाकिनी-शाकिनी, राक्षस आदि का नाश होता है।

वशीकरण के मंत्र

ओम् हां ग जूं सः अमुकस्य
मे वश्य वश्य स्वाहा।

जिसे वश में करना हो, उसका चित्र अपने साधनाकक्ष में लगा लें और दीप जलाकर सवा लाख मंत्र का जाप करें तथा अमुकस्य के स्थान पर उसका नाम लें (जिसे वश में करना है); तत्पश्चात् कोई वस्तु इसी मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित करके उस व्यक्ति को खिला दें।

ओम् नं नां निं नीं नुं नूं नें
नौं नं नः आकर्षय ह्रीं स्वाहा।

जिसको वश में करना है, उसका ध्यान करके एक लाख मंत्र का जाप कर लें। वो आपके वश में हो जाएगा।

ओम् नमो चामुंडे जय जय वश्य मानय
जय जय सर्व सत्तवा नमः स्वाहा।

इस मंत्र का जाप रात्रि में करें। एक लाख जाप करने से वो व्यक्ति आपकी इच्छानुसार कार्य करने लगेगा, जिससे आप इच्छा रखते हैं।

ओम् णमो जिणाणं जावयाणं केवल जिणाणं परमोहिजिणाणं सर्व रोष जंभिनि मोहिनी स्वाहा।

किसी शुभ मुहूर्त में एक काष्ठपात्र पर यह मंत्र लिखें। शुभ मुहूर्त में ही एक अलग कक्ष में उस काष्ठपात्र मंत्र की स्थापना करें। मयूरशिखा मूल काष्ठपात्र के आगे रखें। बिना सिलाई किए हुए वस्त्र पहनकर १०८ दिन तक प्रतिदिन एक माला जाप करें। फिर किसी भी उद्देश्य से जिसके पास जाएंगे, वो आपके उद्देश्य की पूर्ति अवश्य करेगा।

बंदीगृह से मुक्ति का मंत्र

ओम् णमो जिणाणं मुत्ताणं मोयगाणं झ्ल्व्र्यूं म्ल्व्र्यूं ह्ल्व्र्यूं क्ष्ल्व्र्यूं अ सि आ उ सा नमः बंधि मोक्ष कुरु कुरु स्वाहा।

रात-दिन १००० जाप उपरोक्त मंत्र का करते रहें तो जेल, हवालात अथवा हरेक प्रकार के बंदीगृह से मुक्ति मिल जाएगी।

बिस्मिल्लाहर्रहमान नीर रहीम
ला यमल्हा अंता शुभाने का
इनी कुंतो मिनह ज्वाल मीन।

यदि कोई जेल में हो। अपील में कोई सुनवाई न हो रही हो और सज़ा होने की पूरी संभावना हो, तो उक्त मंत्र का ४१ दिनों तक जप करें। सफलता अवश्य मिलेगी।

नोट—मंत्र में "बिस्मिल्लाह" वाला पैरा केवल एक ही बार जपना चाहिए तथा व्यक्ति को सच्चा भी होना चाहिए। यदि वो वास्तव में कोई जुर्म या गुनाह करके जेल पहुंचा होगा, तो फिर मंत्र का यह प्रयोग कार्य नहीं करेगा। 



रोग निवारण मंत्र

यहां जिन मंत्रों का वर्णन किया जा रहा है, उनमें से किसी भी मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व निम्न प्रक्रियाएं अवश्य कर लेनी चाहिए। पहले निम्न रूप-से श्रीगणेशजी का ध्यान करें, "वक्रतुंड महाकाय कोटि सूर्यसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।" तत्पश्चात् श्रीविनायक मंत्र की एक माला अवश्य ही जपें, "ओम् वक्रतुंडाय हुं।" अब भैरवजी से मंत्रसिद्धि के लिए प्रार्थना के मंत्र का जप करें, "भो भैरव नमस्तुभ्यं भगवान करुणाकर। अस्मंजयस्य सिद्धयर्थ अनुज्ञां दातुमर्हसि।।" अंत में इस मंत्र से दिग्बंधन करें, "वज्रकोधाय महादंताय दशदिशो बंध, बंध हूं फट् स्वाहा।" इस मंत्र का जप करने से दशों दिशाएं बंध जाती हैं और किसी भी प्रकार का विघ्न फिर साधक की साधना में नहीं पड़ता। प्रत्येक साधक को इस प्रक्रिया की संपूर्णता को अवश्य पहुंचना चाहिए।

सिरदर्द दूर करने का मंत्र

हजार घर घालै एक घर खाय
आगे चले तो पीछे जाय
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को पढ़कर साधक रोगी के सिर पर हाथ

रखकर सात बार फूंक मार दे, तो दर्द एकदम ठीक हो जाएगा।

आधे सिरदर्द को दूर करने का मंत्र

वन में ब्याही अंजनी, कच्चे बन
फूल खाय, हाक मारी हनुमंत ने,
इस पिंड से, आधासीसी उतर जाय।

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को श्मशान में जाकर मंत्र के दस हजार जप कर पहले मंत्र को सिद्ध कर लें। फिर रोगी के माथे पर थोड़ी राख मलते हुए मंत्र को सात बार पढ़ें। रोग दूर हो जाएगा। इसका दूसरा मंत्र भी है, जो पहले मंत्र की भांति ही सिद्ध किया जा सकता है और प्रयोग भी समान ही है।

ओम् नमो वन में ब्याई बानरी
उछल डाल पै जाय
कूद कूद शाखान पै
कच्चे बन फल खाय
आधा तो आधा फोड़े
आधा देय गिराय
हुंकारत हनुमान जी
आधा सीसी जाय।

पीलिया झाड़ने का मंत्र

ओम् नमो वीर बेताल असराल
नार कहे तू देव खादी तू वादी
पीलिया कूं भिदाती कारे झारे
पीलिया रहे न एक निशान
जो कहीं रह जाय तो हनुमंत की
आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रोगी के सिर पर कांसे की एक कटोरी में तिल का तेल लेकर रखें और कुशा से उस तेल को चलाते हुए मंत्र को सात बार पढ़ें। ऐसा तीन दिन तक करने से तेल बहुत अधिक पीला पड़ जाएगा और पीलिया झड़ जाएगा।

ओम् नमः आदेश गुरु को श्रीराम सर साधा लक्ष्मण साधा बाण, काला पीला रीता नीला थोथा पीला पीला पीला चारों झड़े तो श्री रामचंद्र जी रहै नाम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

किसी पीतल के पात्र में शुद्ध कूप जल लेकर सूई से सात बार झाड़ें। सात शनिवार को यह प्रयोग करने से पीलिया रोग समाप्त हो जाएगा।

बवासीर दूर करने का मंत्र

ओम् काका कता क्रोरी कर्ता ओम् करता से होय यरसना दश हूंस प्रकटे खूनी वादी बवासीर न होय। मंत्र जान के न बतावे, द्वादश ब्रह्म हत्या का पाप होय, लाख जप करे तो उसके वंश में न होय। शब्द सांचा पिंड कांचा। हनुमान का मंत्र सांचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रतिदिन शुद्ध जल को २१ बार मंत्र से अभिमंत्रित कर प्रयोग कराने से यह रोग मिट जाता है।

बच्चों का पसली दर्द झाड़ने का मंत्र

ओम् सत्यनाम आदेस गुरु को डंख खारी खंखारा कहां गया सवा लाख पर्वतो गया

सवा लाख पर्वतो जाय
कहा करेगा सवा भार कोयला
सवा भार कोयला कर कहा
करेगा, हनुमंत वीर नव चंद्रहास
खड्ग गढ़ेगा, नव चंद्र हास खड्ग
गढ़ कहा करेगा, गातवाडोंख
पसली बाय काट खारी समुद्र
नाखेगा। जगद् गुरु की शक्ति
मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

पूर्वोक्त विधि से मंत्र सिद्ध करके, तिल के तेल में सिंदूर मिलाकर, उसे मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित करके पसली पर मल दें। दर्द दूर हो जाएगा।

धरण ठिकाने लाने का मंत्र

ओम् नमो नाड़ी नाड़ी नौ सौ बहत्त
सो कोठा चले अगाड़ी डिगे न कोठा
चले न नाड़ी। रक्षा करे हनुमंत की आन
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

किसी सूत में नौ बार मंत्र पढ़कर नौ गांठ लगाएं तथा उसे छल्ले के समान गोल बनाकर नाभी पर रख दें। फिर नौ बार मंत्र पढ़ते हुए उस पर फूंक मारें। धरण (नाभ) ठिकाने पर आ जाएगी।

कंठबेल दूर करने का मंत्र

ओम् नमो कंठबेल तू द्रु पद्रुमाली
सिर पर जकड़ी वज्र की ताली
गोरख नाथ जागता आया
बढ़ती बेल को तुरंत घटाया

जो कुछ बची ताहि मुरझाया
घट गई बेल बढ़त नहीं बैठी
तहां उठत नहीं। पके फूटे
पीड़ा करें तो गुरु गोरखनाथ
की दुहाई। ओम् आदेश गुरु को
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

सुख-प्रसव मंत्र

ओम् मुक्ताः पाशा विपाशाश्च
मुक्ताः सूर्य्याणि रश्मयः।
ओम् मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि
लंबोदर मुच्च मुच्च स्वाहा।

किसी पात्र में थोड़ा-सा जल लेकर उसे "ओम् मुक्ता से लेकर रश्मयः" तक अथवा "ओम् मन्मथ से लेकर स्वाहा" तक, किसी से भी अभिमंत्रित करें और जल स्त्री को पिला दें। उसे शीघ्र ही सुखपूर्वक प्रसव हो जाएगा।

सर्वरोग निवारक मंत्र

वन में बैठी वानरी जिंन जाया हनुमंत
बाला, डमरू, व्याहि, बिलाई, आंख
की पीड़ा, मस्तक पीड़ा, चौरासी-
बाय, बली बली भस्म हो जाय,
पो न फूटे, पीड़ा करे तो गोरखजती
रक्षा करे। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा,
सत्य नाम आदेश गुरु को।

४१ दिनों में मंत्र का सवा लाख जाप करें। फिर शरीर के किसी भी रोग को दूर करने के लिए रोगी पर मोरपंख

से १०८ बार झाड़ दें।

ओम् णमो आमो सहि पत्ताणं,
ओम् णमो खेलो सहि पत्ताणं,
ओम् णमो जलो सहि पत्ताणं,
ओम णमो सव्वो सहि पत्ताणं, स्वाहा।

इस मंत्र की प्रतिदिन एक माला फेरने से सर्व प्रकार के रोगों की पीड़ा शांत हो जाती है। रोगी का कष्ट कम हो जाता है।

नेत्ररोग विनाशक मंत्र

शांति, कुंथु अरहो अरिट्ठनेमि,
जिनंद पास होई समरंताणं
निच्चं चक्खु रोग पणासई।

नेत्रों के किसी भी रोग पर एक माला फेर का झाड़ा दें, ठीक हो जाएगा।

कर्णमूल का मंत्र

बनाह्र गठि बनरी तो डाटे हनुमान
कंटा बिलारी बाघी थनैली कर्णमूल
सब जाय। रामचंद्र का वचन
पानी पथ हो जाय।

सात बार मंत्र पढ़कर, राख से झाड़ने पर कर्णमूल को लाभ होता है।

दांतदर्द का मंत्र

अग्नि बांधौं अग्नीश्वर बांधौं,
सौ लोह लौहार बांधौं,
वज्र के निहाय वज्र धन दांत
विहाय तो महादेव की आन।

सात बार मंत्र पढ़कर फूंकने से दांत का दर्द दूर होता है।

वायुरोग निवारण मंत्र

ओम् नमो अजब कंकोल गड़ीयो
वाय फिरंग रगत वाय,
चेपियो वाय, अनंत सर्वे वाय
नाशय नाशय दह दह पच पच
भख भख हन हन ओम् फट् स्वाहा।

पहले १२५०० जाप करके मंत्र सिद्ध कर लें, फिर पांच रंग के रेशम के धागों को लेकर ९ गांठ दें। हरेक गांठ पर १०८ बार धूप-दीप सहित मंत्र पढ़ें और गले में बांधें। इससे हरेक प्रकार का वायुरोग मिट जाएगा।

दाद का मंत्र

ओम् गुरुभ्यो नमः देव देव पूरी दिशा
मेरुनाथ दलक्षना भरे विशाहतो राजा
वैरधिन आज्ञा राजावासुकी के आन
हाथ वेगे चलाव।

इस मंत्र को पानी पर पढ़कर, उसे पिलाने मात्र से ही दाद दूर हो जाता है।

घावपीड़ा का मंत्र

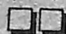
सार सार बिजै सार बांधूं सात बार फूटे
अन न ऊपजे घाव सीर राखे श्री गोरखनाथ।

इस मंत्र को सात बार पढ़कर घाव पर फूंके, तो पीड़ा कम हो और घाव भरे।

बिच्छू काटे का मंत्र

ओम् पक्षि स्वाहा।

यह मंत्र १०००० जाप कर लेने से सिद्ध हो जाता है। फिर जब भी आवश्यकता पड़े, २१ बार मंत्र पढ़कर झाड़ा देने से विष उतार जाएगा।



१०

मुस्लिम मंत्रों का चमत्कार

नजर, पेट व सिरदर्द मिटाने का मंत्र

बिस्मिल्लाहररहमान नीर रहीम अलहम्दो लिल्लाहे रबील आलमीन हर रहमान नीर रहीम माले की यो मीदीन याका नाम बदोया का नस्ता हीन अहदेई नसरातल मुस्तकी मासरातल ग़ेरील मग़-दुबे वल दुवालीन आमीन।

पेटदर्द हो तो पेट पर, सिर में दर्द हो तो मस्तक पर हाथ फेरते जाएं, यों २१ बार मंत्र पढ़ने पर दर्द दूर हो जाएगा। यदि नजर लगी हो, तो २१ बार मंत्र पढ़कर झाड़ा दें।

वशीकरण मंत्र

बिस्मिल्लाहररहमान नीर रहीम सलामुन कौलुनभिनरर्विवर्रहीम तनजोलुल अजीजुर्रहीम।

एक बार "बिस्मिल्लाह" बोलकर, मंत्र को सात बार अपने दोनों हाथों की हथेलियों पर पढ़कर, उन हाथों को अपने मुंह पर फेरकर जिसके सामनें जाएंगे, वो वश में हो जाएगा, साधक की इच्छा पूरी होगी।

आसेब से बचाने का मंत्र

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० फ़इज़ा क़रअतिल कुरआना फ़सतइज़ बिल्लाहि मिनश्शयतानिर्रजीम० इन्नहुम लयसा लहु सुलतानुन अलल्लज़ीना आमनू व अला रब्बिहिम य-त-वक कलूना।

यह मंत्र तीन कामों के लिए बड़ा ही मुफ़ीद है। अगर किसी बच्चे को सूखे का रोग हो या आसेब वगैरह का ख़लल हो या किसी ने जादू करा दिया हो, तो इन तीनों कामों के लिए इस मंत्र को लिखकर (सफ़ेद कोरे काग़ज़ पर अनार की कलम द्वारा जाफ़रान से लिखकर), मोमज़ामा करके बच्चे के गले में डाल दें। तीनों में से जो भी रोग़ होगा, चला जाएगा।

दुश्मन से निज़ात पाने के लिए

स युहज़मुल जमऊ व युवल्लूना दुबूरा० अबज़द हवज़ होत्ती।

यदि एक मुट्ठी भर ख़ाक पर यह मंत्र पढ़ें और दुश्मन की ओर फेंके, तो दुश्मन अपनी सेना के साथ होगा, तो भी भाग जाएगा।

हर मक़सद की कामयाबी के लिए

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० या हंनानु या मंनानु या सुलतानु या बदी अस्समावाति वल अर्ज़ि या ज़ल जलालि व ल इकरामि बिरहमतिका या अरहमर्राहिमीन०

अगर कोई आदमी इस मंत्र रूपी दुआ को सात दिन तक, हर दिन साफ़ काग़ज़ पर लिखे और दरिया में डाल दिया करे तो जो नियत करेगा, वो ही पूरा होगा।

मुहब्बत पाने के लिए

अल्लाहुम्मा या मुसख़्ख़िरु सख़्ख़र ली मन फ़िस्समावाति वल अर्जि मुसख़्ख़िरल लि लिल्लाहि तआला अल्लाहुम्मा बय्यिन ली वज़ल्लिलहु ली व सख़्ख़िरली व अल्लिफ़ व मुहब्बति फीक़लबिहि वजअलहु रऊफ़न मुहिब्बन बिहक्क़ि या अल्लाहु या रहमानु या रहीमु०

जिसे किसी की मुहब्बत दरकार हो, उसे चाहिए कि शुरू महीने की नौचंदी जुमेरात को इस इबारत को एक सौ एक बार पढ़ें और सुरमें के ऊपर दम करें (मंत्र से अभिमंत्रित करके) और अपनी आंखों में लगाकर महबूब के सामने जाएं, मुहब्बत हो जाएगी।

जुबानबंदी के लिए

सब्बहा लिल्लाहि मा फ़िस्स-मावति वल अर्ज़ि व हुवल अज़ीजुल हकीम। या अय्युहललज़ीना आमनू लिमा तकूलूना माला तफ़अलूना०

दुश्मन की जुबानबंदी करने के लिए कोरी ठीकरी पर इन आयतों को लिखकर किसी पुराने कुएं में डालने से उसकी जुबान बंद हो जाएगी। कुआं कम-से-कम सौ साल पुराना और पानी सहित होना चाहिए।

शीघ्र प्रसव के लिए

इज़स्समाउन शक़्क़त व अज़िनत लिराब्बिहा व हुक़्क़त व इज़ल-अर्जु मुद्दत व अलक़त मा फ़ीहा व त-ख़ल्लत०

जिस स्त्री को प्रसवकाल में सख्ती व तकलीफ़ का सामना करना पड़ रहा हो और उसका हाल से बेहाल हो रहा हो तो थोड़े से गुड़ पर (गुड़ की एक डली) ग्यारह बार मंत्र को पढ़कर, उसे अभिमंत्रित करें और स्त्री को खिला दें। बहुत शीघ्र प्रसव हो जाएगा तथा उसे सख्ती व तकलीफ से भी मुक्ति मिल जाएगी।





सर्वविद्या-कल्पमंत्र

वर्धमानविद्या-कल्पमंत्र

वर्धमान विद्या के मूलमंत्र का जाप करने के लिए सौभाग्यमुद्रा, परमेष्ठीमुद्रा, प्रवचनमुद्रा, सुरभिमुद्रा तथा अंजलिमुद्रा; ये पांच मुद्राएं बतलाई गई हैं। वर्धमान विद्या के मूलमंत्र का १०८ जाप करना चाहिए। जाप में माला के सुमेरु का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। भौंह नहीं हिलानी चाहिए, होठ नहीं फड़फड़ाने चाहिए, दांत नहीं खुले रखने चाहिए। जाप पूरा करने के बाद अस्त्रमुद्रा में आसन से हिलना चाहिए। जाप के मध्य में ऊंघने आदि कारणों से जाप निष्फल हो जाता है। तब वैसा ही जाप फिर-से प्रारंभ करना पड़ता है।

ओम् आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम्।
तत् सर्वं कृपया देव। क्षमस्व परमेश्वर।।

यह श्लोक उच्चारित कर निम्न मंत्र बोलना चाहिए—

ओम् नमोऽस्तु भगवन्, वर्धमान स्वामिन्।
पुनरागमनाय स्वस्थानं गच्छ गच्छ यः यः यः।।

यह मंत्र बोलते हुए संहारमुद्रा से (देव का) विसर्जन करें। सुषुम्ना नाड़ी से श्वास लेते हुए हृदयकमल में भगवान् को स्थापित करें। इस प्रकार इस विद्या का नित्य जाप करें।

वर्धमान विद्या का जाप करने वाले "इमं विज्जं पउंजामि सिज्झउ मे पसिज्झउ" को एक सौ बार बोलकर जाप का प्रारंभ करें, तो वह जाप शीघ्र सफल होता है।

ओम् णमो भगवओ महई महावद्धमाणं सामिस्स सिज्झउ मे भगवई महई महा-विन्जा वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जय विजये जयंते अपराजिए स्वाहा।

नित्यप्रति २१ बार या १०८ बार जाप करके भोजन करना चाहिए। इसके प्रभाव से सौभाग्य की प्राप्ति होती है। आपत्तियों का नाश होता है। राज्य में सम्मान होता है, आयुष्य लंबा होता है तथा सद्गति प्राप्त होती है। किसी भी ग्राम या नगर में प्रवेश करने से पूर्व यदि उपर्युक्त मंत्र का २१ बार जाप करें, तो अनेक कार्य सुसंपन्न होते हैं।

गोरोचन, कुंकुम, केसर, जूही का पुष्प, श्रीफल, कपूर और कस्तूरी; इन सबका चूर्ण बनाकर, इस चूर्ण को उपर्युक्त मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर, तिलक करके जाएं, तो निश्चित रूप-से राज्यकार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में भगवान (जिस भगवान में भी आपकी आस्था हो) की मूर्ति के आगे जूही के पुष्पों से १००० जाप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर जब भी आवश्यकता हो, तो पवित्र होकर इक्कीस बार मुंह को अभिमंत्रित कर जहां जाएं, सबको प्रिय लगें। इस मंत्र से अन्न के दाने को अभिमंत्रित कर अन्न के भंडार में रख दिया जाए, तो भंडार कभी खाली न हो। यदि इस मंत्र के द्वारा कान को अभिमंत्रित कर सोया जाए, तो स्वप्न में शुभ-अशुभ का भान हो। इस मंत्र से

हाथों को अभिमंत्रित कर कोई कार्य करें, तो उसमें सफलता-ही-सफलता मिले।

चंद्रप्रज्ञप्तिविद्या-कल्पमंत्र

नमिऊण असुर सुर भुयंग परिवंदिये गए किलेसे अरहे सिद्धायरिये उवज्झाये सव्वसाहूणं।

एक तेले या आयंबिल की तपस्या करें। उत्तर की ओर मुंह करके १२००० जाप करें, तो सर्वकार्य सिद्ध हों। मंत्र सिद्ध होने पर निम्नांकित रूप में प्रयोग करें—

१. **नामिउण**—एक श्वास में २१ बार जपें, तो चोर का भय न रहे।

२. **असुर**—चौविहार तेला करें। तेले की रात एक आसन पर, उत्तर की ओर मुंह करके १२००० जाप करें, तो वैमानिक देव उपस्थित हों।

३. **सुर**—एक श्वास में ३२ बार जपें, तो पिशाच, राक्षस आदि का भय टले।

४. **गरुल**—उत्तर की ओर मुंह करके ५०० बार जपें, तो नागदेव का भय टल जाए।

५. **भुयंग**—एक श्वास में ३२ बार जपें, तो नाग-सर्प का भय न रहे।

६. **परि**—एक श्वास में सात बार जपने से परदेश जाने में किसी प्रकार का कोई भय न रहे।

७. **वंदिये**—एक श्वास में १०८ बार जपने से अग्नि शांत हो।

८. **गए**—एक श्वास में १०८ बार जपने से हाथी का भय न रहे।

९. **किलेसे**—एक श्वास में १०८ बार जपने से परिवार में झगड़ा व क्लेश मिट जाए।

१०. अरहे—शत्रु का भय टालने के लिए इसे १०८ बार जपें।

११. सिद्धा—एक श्वास में १२१ बार जप करें और २७ माला फेरें, तो नवनिधि प्राप्त हो।

१२. यरिये—एक श्वास में १०८ बार जपें, तो चोर का भय टल जाए और बड़ा आदमी वंशगत हो।

१३. उत्तज्झाये—कोई भी बड़ा उपद्रव टालने के लिए एक श्वास में १०८ बार जप करें।

१४. सव्वसाहूणं—एक श्वास में २१ बार जपें तो निश्चय ही कोई बड़ा उपद्रव टल जाए तथा २७ दिन तक प्रतिदिन २७ माला फेरें, तो सर्वव्याधि टले और आनंद मिले। किन्तु इन दिनों में पूरी तरह से पवित्र रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

सिद्धिशांति-कल्पमंत्र

क्षि प ओम् स्वाहा।

यह अंतःकरण की शुद्धि का मंत्र है।

ओम् नमः सिद्धेभ्यः,
ओम् नमः सिद्धेभ्यः,
ओम् नमः सिद्धेभ्यः।

यह नमस्कार मंत्र है।

सर्वे वै सुखिनः संतु,
सर्वे संतु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मा
कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्।।

यह मंगल-भावना का मंत्र है।

ओम् शांतिः।

यह मूलमंत्र है। सभी मंत्रों की विधि निम्न है—

१. एक एकांत कक्ष का चयन करें। उसे नित्य साफ करें, कपड़े से पोंछें अथवा लीपापोती करें।
२. कक्ष में एक स्थान को चुनें और बाजोट रखें। उस पर "ओंकार" का चित्र रखें नीचे श्वेत वस्त्र रखें। परम शांतिदायक परमात्मा का प्रतीक उसे मानें।
३. साधक बाजोट के सामने उत्तर की ओर मुंह करके बैठे। स्नान करे, शुद्ध वस्त्र व आसन रखें।
४. साधक बाजोट पर अपनी दाहिनी तरफ अगरबत्ती करे और बायीं तरफ घी का दीपक रखें।
५. जप के लिए माला स्फटिक, रजत या श्वेत सूत की हो।
६. शुक्लपक्ष में दशमी को प्रारंभ करें। यदि उस तिथि को सोमवार या गुरुवार हो, तो बहुत ही श्रेष्ठ है।
७. तीन मास में १२५००० जाप करें।
८. सबसे पहले अंतःकरण शुद्धिमंत्र पांच बार बोलें।
९. तत्पश्चात् हाथ जोड़कर, मस्तक नमाकर नमस्कार मंत्र से नमस्कार करना चाहिए।
१०. उसके अनंतर मंगल-भावना मंत्र बोलकर मंगल-भावना करनी चाहिए।

तदनंतर मूलमंत्र का जाप प्रारंभ करना चाहिए। प्रतिदिन १० माला फेरनी चाहिए तथा रात्रि को सोने से पूर्व शुद्ध वस्त्र पहनकर, तीन बार नमस्कार मंत्र तथा तीन बार मंगल-भावना मंत्र बोलकर मूलमंत्र की तीन माला फेरनी चाहिए। यदि किसी अत्यावश्यक कार्य से प्रातः १० माला न फेर सकें, तो जितनी माला शेष रहें, उतनी माला रात्रि में फेर लें।

यह सुख-शांतिप्रद, विघ्न-बाधाओं को टालने वाला

तथा लाभ व श्रीसमृद्धि देने वाला अचूक प्रयोग है। आबू के महान् योगी श्रीशांतिविजयी महाराज ने इसी मंत्र का अनुष्ठान किया था।

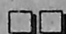
श्रीचंद्र-कल्पमंत्र

श्री चंद्रमूर्तये नमः ओम् ऐं क्लीं क्रों क्रों कलंकरहिताय। सर्वजनवल्लभाय क्षीरवर्णाय ओम् ह्रीं श्रीं चंद्रमूर्तये नमः।

चंद्रमा की एक रजत प्रतिमा (चांदी की मूर्ति) बनाएं। चंद्रमा के एक हाथ में शंख, दूसरे हाथ में कमल, तीसरे हाथ में पुष्पमाला तथा चौथे हाथ में कलश हो। इस प्रकार की मूर्ति बनाकर (बनवाकर) चांदी के खरगोश पर सवारी करवाएं। पूर्णिमा को सोमवार आए, उस दिन से मंत्र का जाप प्रारंभ करें। छह मास में १२५००० जाप पूरे कर लेने चाहिएं।

जप-साधनाकाल में सफेद वस्त्र, सफेद मोतियों की माला तथा सफेद आसन का प्रयोग करना चाहिए। दूध, चावल या सफेद पदार्थ का भोजन करना चाहिए। जप करने वाला साधक जीवित खरगोश पास में रखे। स्वयं भोजन करने से पहले खरगोश को भोजन कराएं, फिर स्वयं भोजन करें, छह मास तक समस्त क्रम चालू रखें।

पूर्व दिशा की ओर मुंह करके जप करें। अभक्ष्य पदार्थ तथा कंदमूल का भोजन न करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें। सत्य बोलें, अल्प निद्रा लें, भूमि पर सोएं, इस प्रकार जाप पूर्ण होने पर चंद्रदेव के दर्शन होंगे। वरदान मांगने से वरदान देंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। सर्वप्रियता प्राप्त होगी।



१२

कामनापूर्ति के श्रेष्ठ मंत्र

यहां कुछ ऐसे परमप्रभावी और सिद्ध मंत्रों को दिया जा रहा है, जिनकी साधना में किसी जटिल नियम का प्रतिबंध नहीं है। कहीं भी, किसी भी समय इनका जप किया जा सकता है। वैसे यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन स्नान के बाद किसी शुद्ध एकांत-स्थान में बैठकर, मंत्र-से संबंधित देवता का चित्र सामने स्थापित कर, धूप-दीप से उसकी पूजा के उपरांत, श्रद्धापूर्वक ५-७ या ९ माला मंत्र जपें, तो वो अवश्य ही लाभांवित होगा। चित्र या माला की सुविधा न होने पर, साधक वैसे ही आसन पर बैठ जाए और उस देवता का स्मरण करके मंत्र का जप करे। मंत्र-जप से मनुष्य के सभी कार्य सफल होते हैं और उसके संकटों का अंत हो जाता है।

सर्वकामनापूरक मंत्र

ओम् धीं श्रीं ह्रीं क्लीं।

विद्यादायक मंत्र

ओम् ह्रीं श्रीं ऐं वद् वद् वाग्वादिनी।
सरस्वती तुष्टि पुष्टि तुभ्यं नमः।।

संकटनाशक मंत्र

ओम् नमो भगवते आंजनेयाया महाबलाय

हुं फट् घे घे घे घे घे घे स्वाहा:

बाधानाशक मंत्र

ओम् ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चे।

रोगनिवारक मंत्र

ओम् हुं विष्णवे नमः।

सर्वसिद्धिप्रद मंत्र

ओम् गं गणपत्ये वरद, सर्वसिद्धि
मे वशमान्य स्वाहा ओम्।

नेत्रव्याधिनाशक मंत्र

ओम् पुंडरीकाक्षाय नमः।

विषनिवारक मंत्र

ओम् हं इं उग्रंवीरं महाविष्णुं ज्वलंतं सर्वतोमुखम्।
नृसिंह भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युम् नमाम्यऽहम्।।

बालरक्षाकारी मंत्र

ओम् नमो भगवति चामुंडे
मुंच मुंच बाल बालिकां वा
बलिं गृह्य गृह्य जयजय वसवस।

यह मंत्र पढ़ते हुए बालक के ऊपर से चावल के कुछ दानों द्वारा बलैयां उतारकर, चावलों को घर से कहीं दूर फेंक देना चाहिए।

सुरक्षाकारी मंत्र

हुं खेचच्छे क्षः स्त्रीं हुं क्षे ह्रीं फट्।

खोये समान की प्राप्ति का मंत्र

कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्त्रवान्।
आहार पाचनार्थाय स्मरेत् भीमं च पंचमम्।।

भयनाशक मंत्र

ओम् ह्रीं श्रीं बक्रेश्वरी मम रक्षं कुरु कुरु स्वाहा।

शत्रुजयी मंत्र

राम. परशुरामश्च नृसिंहो विष्णुरेव च।
विक्रमश्चैवमादिनी जप्यांयरिजिगीषुभि:।।

सौभाग्यकारक मंत्र

ओम् नमो भगवते सर्वेश्वराय श्रिय: पतये नम:।

कुबेर मंत्र

ओम् यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्य-
समृद्धिं मे देहि दापय दापय स्वाहा।

दारिद्र्यनाशक मंत्र

ओम् श्रीं ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं विघ्नेश्वराय
नम: मम दारिद्र्यनाशं कुरु कुरु स्वाहा।

राजकार्यसिद्धि का मंत्र

ओम् ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं त्रिपुरसुंदर्यै नम:।

मनोवांछापूर्ति का मंत्र

ओम् श्रीं क्लीं मम सर्ववांछितं देहि देहि स्वाहा।

उन्नतिकारक मंत्र

ओम् तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय
धीमहि तंनो रुद्र: प्रचोदयात्।

चिंतामणि मंत्र

ओम् ह्रीं श्रीं भगवति चिंतामणि
सर्वार्थसिद्धिं देहि देहि स्वाहा।

नवरात्रि के दिनों में २१ हजार जप के बाद नित्य दो माला जप करें। इससे सर्वकार्य की सिद्धि होती है।



१३

साधना एवं सिद्धि

तांत्रिक साधना का मूल उद्देश्य आत्मा का परमात्मा से मिलन, साक्षात्कार करना है। इसके लिए अंतर्मुखी होकर योग की साधनाएं की जाती हैं। प्रारंभ में साधक का लक्ष्य मूलाधार चक्र के समीप सोई हुई कुंडलिनी शक्ति को जाग्रत करना होता है। फिर यह कुंडलिनी जैसे-जैसे सुषुम्ना मार्ग के ऊपर चढ़ती हुई आगे के चक्रों को पार करती जाती है, योग के साधक को अनेक प्रकार की अलौकिक सिद्धियां प्राप्त होती जाती हैं।

कुंडलिनी शक्ति सर्प के आकार की होती है, इसलिए उसे सर्पिणी भी कहा जाता है। मानव-देह मेरुदंड के नीचे मूलाधार चक्र है। कुंडलिनी इसी चक्र के ऊपर एक त्रिकोण स्थान में स्थित होती है। नीचे से ऊपर की ओर ये चक्र हैं-- मूलाधार (मेरुदंड के नीचे), स्वाधिष्ठान (उदर के नीचे), मणिपुर (नाभि में), अनाहत (सीने पर), विशुद्ध (गले में), आज्ञाचक्र (दोनों भोहों के बीच) और सहस्रार (सिर के ऊपरी भाग में)।

मेरुदंड के बीच के स्थान को सुषुम्ना पथ कहते हैं। कुंडलिनी की यात्रा इसी मार्ग से होती है। कुंडलिनी विद्युत आभायुक्त सुनहली एवं लचकदार होती है। इसकी पूंछ

सदैव मूलाधार से जुड़ी रहती है। यह सर्पिणी संकोचन और प्रसारण शक्ति संपन्न होती है। कुंडलिनी जागरण तंत्र एवं योग की एक विशिष्ट प्रक्रिया है। जब तक यह जाग्रत नहीं होती, तब तक सभी दिव्य शक्तियां सोई रहती हैं, और तब तक किसी भी पूजा-अनुष्ठान में सिद्धि नहीं मिलती। कुंडलिनी के जागरण से भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही सफलताएं प्राप्त होती हैं।

यदि किसी व्यक्ति की कुंडलिनी जाग्रत हो जाती है, तो उसकी चेतना मां के गर्भ में भी बनी रहती है। महाभारत में एक कथा का उल्लेख है कि जब अर्जुन अपनी पत्नी सुभद्रा को चक्रव्यूह-भेदन की विधि बतला रहा था, तो छह द्वारों तक तोड़ने की विधि उसने बतायी। उस समय सुभद्रा के गर्भ में अभिमन्यु था, जिसकी कुंडलिनी जागी हुई थी और उसने छह द्वारों को तोड़ने की विधियां सुनीं जो उसे गर्भ से बाहर आने के बाद भी स्मृति में बनी रहीं। बहुत-से छोटे बालकों को सहसा उनके पूर्वजन्म की स्मृतियां याद आ जाती हैं; यह केवल कुंडलिनी जागरण से ही संभव है। जब कुंडलिनी सहस्रार के ब्रह्मरंध्र में प्रवेश करती है, तो वह सहस्रार से निरंतर गिरते हुए अमृत का पान करने लगती है। वह अपनी पूंछ को मूलाधार चक्र से खींचने लगती है। इस समय साधक को कुछ कष्ट का अनुभव भी हो सकता है। कुंडलिनी के ब्रह्मरंध्र में प्रवेश करने के बाद वो सहस्रार चक्र में स्थायी रूप-से रहने लगती है और उसकी पूंछ मूलाधार से छूट जाती है। अब साधक विचार शून्य हो जाते हैं। मन आनंद से आह्लादित हो जाता है। कभी-कभी क्षणिक समाधि लगने लगती है। तंद्रा जैसी स्थिति आ जाती है और साधक आनंद में पूर्णतया लीन हो जाता है। अनेक लोकों के दृश्य अंतर्दृष्टि में दिखाई देने

लगते हैं। मन शांत हो जाता है। सूक्ष्म लोकों के विभिन्न दृश्य और सूक्ष्म शरीरी आत्माएं दिखाई देने लगती हैं। इतना बड़ा ब्रह्मांड प्रत्यक्ष दिखाई देने लगता है और स्वयं को जानते ही अंधकार विलीन हो जाता है। यहां से महाशून्य की यात्रा प्रारंभ होती है और साधक अपने निर्वाण की ओर चल पड़ता है।

अनेक प्रकार की साधनाएं केवल कुंडलिनी जाग्रत करने के उद्देश्य से ही की जाती हैं। जप, तप और ध्यानादि कर्म का यही सार है। कुंडलिनी के जाग्रत होने पर अनेक प्रकार की सिद्धियां स्वयं ही मिल जाती हैं।

सिद्धि का सामान्य अर्थ है— सफलता !

साधक जब किसी मार्ग पर अग्रसर होता है, तो उसे साधना प्रभाव से अनेक प्रकार की शक्तियां सुविधाएं प्राप्त होने लगती हैं, इन्हीं को सिद्धि कहते हैं। यद्यपि सिद्धियों का बाहरी रूप बड़ा आकर्षक प्रतीत होता है, किन्तु मोक्ष कामी के लिए वे प्रकारांतर से अवरोध बन जाती हैं। सिद्धियों के द्वारा प्राप्त होने वाले लाभ को ठुकराकर जो साधक आगे बढ़ते रहते हैं, अंततः वो ही आत्मलाभ और मोक्ष की सीमा तक पहुंच पाते हैं। सिद्धियों के व्यामोह में दिग्भ्रमित होकर रह जाने वाला साधक भले ही एक सिद्ध और चमत्कारी या अलौकिक मनुष्य के रूप में ख्याति पा ले, किन्तु वह आवागमन और सांसारिक मायामोह से किसी-न-किसी रूप में अवश्य ही आक्रांत रहता है। श्रीरामकृष्ण परमहंस जैसे अनेक श्रेष्ठ पुरुष हुए, जिन्होंने ऋषिसिद्धि, निधि और आत्मज्ञान सब कुछ प्राप्त कर लिया, फिर भी सांसारिक प्रलोभन में नहीं पड़े और महान् योगी की भांति मोक्ष प्राप्त करके अजर-अमर हुए।

जहां तक सिद्धि का प्रश्न है, साधना तो इसका मुख्य

मार्ग है ही, साथ में अन्य परिस्थितियां और उपादान भी सहायक होते हैं। साधक का सदाचारी, परोपकारी और सहिष्णु-संयमी होना, साधना की प्रथम सीढ़ियां हैं। इनके बाद प्रयास और साधनों से भी उसे सहायता मिलती है।

अध्यात्म-साधना के मुख्य दो लक्ष्य हैं— ब्रह्मदर्शन (आत्मलाभ, मोक्षप्राप्ति) तथा सिद्धिप्राप्ति (भौतिक समस्याओं के शमन हेतु उपयुक्त साधनों की उपलब्धि), अर्थात् पारलौकिक और लौकिक (सांसारिक) सुखों की कामनापूर्त्ति ! जप, तप, योग, मंत्र, यंत्र और तंत्र की साधना इन दोनों लक्ष्यों की प्राप्ति के मार्ग हैं।

श्मशान साधना

श्मशान में उन लोगों की प्रेतात्माओं का वास होता है, जिनकी अकालमृत्यु हो जाती है। जिनकी दुर्घटना आदि में मृत्यु होती है, उनकी अतृप्त आत्माएं या तो दुर्घटना स्थल पर मंडराती रहती हैं या उनका शरीर जहां पर जलाया या दफनाया जाता है, वहां मौजूद रहती हैं। इसी कारण किसी भी मार्ग का बीच चौराहा, कब्रिस्तान और श्मशानों को प्रेतात्माओं का निवास-स्थान माना गया है।

अनेक साधक ऐसे होते हैं, जिनका लक्ष्य केवल प्रेतसिद्धि होता है। ये साधक योग के बल पर नहीं, बल्कि श्मशानादि में जाकर मांस-मदिरा आदि पदार्थों के भोग द्वारा प्रेतात्माओं को सिद्ध कर लेते हैं। इस प्रकार की सिद्धि से उनमें भूत और वर्तमान का ज्ञान, दुर्लभ वस्तुओं को मंगाना, खुशबू या किसी वस्तु की महक उत्पन्न करना, दूसरों पर सवार अपने सिद्धप्रेत की सहायता से कम शक्ति वाले प्रेतों को उतारना, भगाना या फूंक देना आदि शक्तियों का समावेश हो जाता है। किसी का कुछ भला या बुरा कर देना इन

लोगों के बाएं हाथ का काम होता है। किन्तु ऐसे तांत्रिकों की अंतिम गति बहुत खराब होती है। वे प्रेतात्माएं उन लोगों को मरने के बाद अपनी योनि में ले जाती हैं।

कुछ साधक अपेक्षाकृत उत्तम देवताओं की साधना भी श्मशान में करते हैं। भैरवसिद्धि, यक्षिणीसिद्धि अथवा काली, तारा या रुद्रदेवता के लिए श्मशान को ही सबसे उपयुक्त स्थान माना गया है। साधना जिस किसी की भी करनी हो, पर श्मशान में साधना करने वाले को साहसी और निडर अवश्य ही होना चाहिए।

सोऽहम् साधना

गायत्री का एक स्वरूप जपपरक है, जिसके आधार पर नित्य जप, अनुष्ठान, पुरश्चरण आदि के विधान संपन्न किये जाते हैं। इसका दूसरा स्वरूप है, "अजपा" अर्थात् वह जप जो बिना प्रयत्न के अनायास ही होता रहता हो। योगविद्याविशारदों का मत है कि जीवात्मा अचेतनावस्था में अनायास ही इस जप प्रक्रिया में निरत रहती है। यह अजपा गायत्री है, "सोऽहम्" की ध्वनि, जो श्वास-प्रश्वास के साथ-साथ स्वयंमेव होती रहती है। यदि इसी को प्रयत्नपूर्वक विधि-विधान के साथ किया जाए, तो वो प्रयास "हंसयोग" कहलाता है। हंसयोग के अभ्यास का असाधारण महत्त्व है। गायत्री महाविद्या के अंतर्गत इसे कुंडलिनी जागरण साधना का तो एक अंग माना ही गया है, ईश्वर सामीप्य-सन्निध्य का इससे बढ़कर सरल साधन और कोई नहीं है।

सोऽहम् साधना का महत्त्व बताते हुए प्रपंचतंत्र में कहा गया है कि देह देवालय है। इसमें जीवरूप में शिव विराजमान हैं। इसकी पूजा वस्तुओं से नहीं, सोऽहम् साधना से करनी चाहिए। अंतःकरण में हंसवृत्ति की स्थापना की

यह साधना ही अजपा गायत्री कही जाती है। अग्निपुराण, शिवस्वरोद्‌य, गोरक्षसंहिता, तंत्रसार आदि में इसे समस्त पापों से छुटकारा दिलाने वाली एवं मोक्ष-प्रदाता कहा गया है।

श्वास लेते समय "सो" ध्वनि का और श्वास छोड़ते समय "हम्" ध्यान के प्रवाह को सूक्ष्मश्रवण शक्ति के आश्रय अंतःभूमिका में अनुभव करना, यही है, "सोऽहम् साधना"। वायु जब छोटे छिद्र में होकर वेगपूर्वक निकलती है तो घर्षण के कारण ध्वनिप्रवाह उत्पन्न होता है। बांसुरी से स्वरलहरी निकलने का यही आधार है। नासिका छिद्र भी बांसुरी के छिद्रों की भांति है। उनकी सीमित परिधि में होकर जब वायु भीतर प्रवेश करेगी, तो वहां स्वभावतः ध्वनि उत्पन्न होगी।

साधारण श्वास-प्रश्वास के समय भी वह उत्पन्न होती है, पर इतनी धीमी रहती है कि कानों के छिद्र इन्हें सरलतापूर्वक नहीं सुन सकते ! प्राणयोग की साधना में गहरे श्वासोच्छ्वास लेने पड़ते हैं। इसके लिए चित्त को श्वसनक्रिया पर एकाग्र करना पड़ता है, साथ ही भावना को इस गहराई तक उभारना होता है कि उससे श्वास लेते समय "सो" के ध्वनिप्रवाह की मंद अनुभूति होने लगे। उसी प्रकार जब श्वास छोड़ना पड़े तो यह मान्यता परिपक्व होनी चाहिए कि "हम्" ध्वनिप्रवाह विनिर्मित हो रहा है। आरंभ में कुछ समय यह अनुभूति उतनी स्पष्ट नहीं होती, किन्तु क्रम और अभ्यास जारी रखने पर कुछ ही समय उपरांत इस प्रकार का ध्वनिप्रवाह अनुभव में आने लगता है और उसे सुनने में न केवल चित्त एकाग्र होता है, वरन् आनंद का अनुभव भी होता है।

"सो" का तात्पर्य परमात्मा से और "हम्" का जीवचेतना से है। निखिल विश्वब्रह्मांड में संव्याप्त महाप्राण

नासिका द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करता है और अंग-प्रत्यंग में जीवकोष तथा नाड़ीतंतु में प्रवेश करके उसको अपने संपर्क-संसर्ग का लाभ प्रदान कराता है। यह अनुभूति "सो" शब्द ध्वनि के साथ अनुभूति भूमिका में उतारनी पड़ती है और "हम्" शब्द के साथ जीवभाव द्वारा इस कायकलेवर से अपना कब्जा छोड़कर चले जाने की मान्यता प्रगाढ़ करनी पड़ती है।

प्रकारांतर से परमात्मसत्ता का अपने शरीर और मनःक्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित हो जाने की यह धारणा है। जीवभाव अर्थात् स्वार्थवादी संकीर्णता, काम, क्रोध, लोभ, मोहभरी मदमत्सरता, अपने को शरीर या मन के रूप में अनुभव करते रहने वाली आत्मा की दिग्भ्रांत स्थिति का नाम ही जीव भूमिका है। इस भ्रम जंजाल भरे जीवभाव को हटा दिया जाए, तो फिर अपना विशुद्ध अस्तित्व ईश्वर के अविनाशी अंश आत्मा के रूप में ही शेष रह जाता है। कायकलेवर के कण-कण पर परमात्मा के शासन की स्थापना और जीव धारणा की बेदखली, यही है, "सोऽहम्" साधना का तत्त्वज्ञान ! श्वास-प्रश्वास क्रिया के माध्यम से सो और हम् ध्वनि के सहारे इसी भाव चेतना को जाग्रत किया जाता है कि— अपना स्वरूप बदल रहा है। अब शरीर और मन पर से लोभमोह का, वासना-तृष्णा का आधिपत्य समाप्त हो रहा है और उसके स्थान पर उत्कृष्ट चिंतन व आदर्श कर्त्तत्व के रूप में ब्रह्मसत्ता की स्थापना हो रही है।

सोऽहम् साधना के आरंभिक चरण में श्वास खींचते समय "सो" और निकालते समय "हम्" की धारणा की जाती है; प्रयत्न यह किया जाता है कि इन शब्दों के प्रारंभ में अति मंदस्तर की होने वाली अनुभूति में क्रमशः प्रखरता

आती चली जाए, चिंतन का स्वरूप यह बनाना पड़ता है कि श्वास में घुले हुए भगवान अपनी समस्त विभूतियों और विशेषताओं के साथ कायकलेवर में भीतर प्रवेश कर रहे हैं। यह प्रवेश मात्र आवागमन नहीं है, वरन् प्रत्येक अवयव पर सघन आधिपत्य बन रहा है। इस प्रकार एकेक करके शरीर के भीतरी प्रमुख अंगों के चित्र की कल्पना की जाती है और अनुभव करना पड़ता है कि उसमें भगवान की सत्ता चिरस्थायी रूप में समाविष्ट हो गयी है। हृदय, फेफड़े, आमाशय, आँतें, जिगर, गुर्दे और तिल्ली आदि में भगवत्सत्ता का प्रवेश हो गया है। रक्त के साथ अस्थिपिंजर सहित प्रत्येक नस-नाड़ी और कोशिकाओं पर भगवान ने अपना शासन स्थापित कर लिया है।

शरीर के प्रत्येक अंग-अवयवों, पंच ज्ञानेंद्रियों और पंच कर्मेंद्रियों ने भगवान के अनुशासन में रहना और उनका निर्देश पालन करना स्वीकार कर लिया है। देखना, सुनना, बोलना और चलना आदि इंद्रियजन्य गतिविधियां दिव्य निर्देशों का ही अनुगमन करेंगी। जननेंद्रिय का उपयोग वासना के लिए नहीं, मात्र ईश्वरीय प्रयोजनों के लिए अनिवार्य आवश्यकता का धर्मसंकट सामने खड़ा होने पर ही किया जाएगा। हाथ-पैर मानवोचित कर्तव्यपालन के अतिरिक्त ऐसा कुछ न करेंगे, जो ईश्वरीय सत्ता को कलंकित करता हो। मस्तिष्क ऐसा कुछ न सोचेगा, जिसे उच्च आदर्शों के प्रतिकूल ठहराया जा सके। बुद्धि कोई अनुचित न्याय विरुद्ध एवं अदूरदर्शी अविवेक भरा निर्णय न करेगी। चित्त में अवांछनीय एवं निकृष्टस्तरीय आकांक्षाएं न जमने पाएंगी। अहंता का स्तर नरपशुओं जैसा नहीं, नरनारायण जैसा होगा।

यहीं हैं वो भावनाएं जो शरीर और मन पर भगवान के शासन स्थापित होने के तथ्य को यथार्थ सिद्ध कर सकती हैं। यह सब उथली कल्पनाओं की तरह मनोविनोद भर नहीं रह जाना चाहिए, वरन् उसकी आस्था इतनी प्रगाढ़ होनी चाहिए कि इस भाव परिवर्तन को क्रिया रूप में परिणत हुए बिना चैन ही न पड़े। सार्थकता उन्हीं विचारों की है जो क्रिया रूप में परिणत होने की प्रखरता से भरे हों।

सोऽहम् साधना के पूर्वार्द्ध में अपने कायकलेवर पर श्वसन-क्रिया के साथ प्रविष्ट हुए महाप्राण की, परब्रह्म की सत्ता स्थापना का इतना गहन चिंतन करना पड़ता है कि यह कल्पना स्तर की बात न रहकर, एक व्यावहारिक यथार्थता के, प्रत्यक्ष तथ्य के रूप में दृष्टिगोचर होने लगे। इस साधना का उत्तरार्द्ध पाप निष्कासन का है। गायत्री की उच्चस्तरीय सोऽहम् साधना के पूर्व भाग में श्वास लेते समय सो ध्वनि के साथ जीवनसत्ता पर उस परब्रह्म परमात्मा का शासन आधिपत्य स्थापित होने की स्वीकृति है। इस स्थिति को प्राप्त होते ही साधक में देवत्व का उदय होता है और तब ईश्वरीय अनुभूतियां चिंतन में उत्कृष्टता और व्यवहार में आदर्शवादिता भर देती हैं। इसे महान परिवर्तन की आंतरिक कायाकल्प की संज्ञा दी जा सकती है। यही है सोऽहम् साधना का भावनात्मक और व्यावहारिक स्वरूप ! ईश्वर साक्षात्कार की यह सबसे सरल, सहज एवं सर्वोपयोगी साधना है, जिसे अपनाकर हर कोई लाभान्वित हो सकता है।





सिद्धियों की प्राप्ति की साधानाएं

हनुमानजी की साधना

हनुमानजी त्रेता, द्वापर और कलियुग में सदैव श्रद्धा और सम्मान के पात्र रहे हैं। कलियुग में तो उन्हें सर्वसमर्थ, प्रत्यक्ष और आशुतोष देवता के रूप में स्मरण किया जाता है। हनुमानजी शक्ति के आगार हैं, भक्ति के भंडार हैं। धैर्य के हिमालय हैं, सहनशीलता के समुद्र हैं, विद्वता में अद्वितीय हैं और राजनीति, कूटनीति एवं दूतकला के विशेषज्ञ हैं। हनुमानजी की साधना करने से वो स्वयं आकर साधक का कष्ट निवारण कर देते हैं तथा उनकी सिद्धि-प्राप्ति से साधक दूसरों के कष्टों को दूर करने में भी सक्षम हो जाता है। इनको साधना में मंत्र जप से पूर्व कुछ विशेष क्रियाएं करनी पड़ती हैं, जो निम्न हैं—

विनियोग

ओम् हनुमत् मंत्रस्य, रामचंद्र ऋषिः, जगतीछंदः हनुमानदेवता, ह्सौं बीजम्, ह्स्फ्रैं शक्तिः, सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति

मनोजवं मारुत् तुल्य वेगं,
जितेंद्रिय बुद्धिमतां वरिष्ठाम्।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं,
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।

जप-मूलमंत्र

ओम् पूर्व कपिमुखाय पंचमुख हनुमते
टं टं टं टं टं सकल शत्रु संहारणाय स्वाहा।

मूलमंत्र का प्रतिदिन ३ हजार की संख्या में जप करना चाहिए। ११ दिनों तक संयम-नियम के साथ रहकर



जपक्रिया में संलग्न रहें और समाप्ति पर दशांश (३३००) हवन करें। साधक को इन दिनों में क्रोध, द्वेष, वैर, हिंसा, अपवित्रता, कुत्सितविचार, स्वार्थ, छल, चालाकी, अंधविश्वास, शंका, भ्रम, अस्वच्छता और मानसिक चंचलता का सर्वथा दमन कर देना चाहिए। श्रद्धा, प्रेम, भक्ति, विश्वास, सहिष्णुता, प्रभु के प्रति समर्पण भावना और दासभाव जैसी मनोस्थिति में की गई साधना शीघ्र फलदायी होती है।

ओम् हनुमानः हनुमंतः राम भक्ता
ह्रां ह्रां ह्रूं ह्रूं हा हा स्वाहा।

किसी भी मंगलवार को किसी दरिया के किनारे जाकर, वहां की साफ मिट्टी से हनुमानजी की मूर्ति बनाकर उनकी विधिवत् पूजा-अर्चना करके उक्त मंत्र का जाप करना चाहिए। इस मंत्र का पुरश्चरण बारह लाख मंत्र जप से होता है। मंत्र सिद्ध होने के पश्चात् हनुमानजी साधक के वशीभूत होकर उसकी हरेक इच्छा पूरी करते हैं। यदि साधक किसी कठिन समय में सच्चे मन से इस मंत्र का १५ बार उच्चारण करता है, तो हनुमानजी तत्काल प्रकट होकर उसकी सहायता करते हैं।

श्रीकाली साधना

हमारे आध्यात्मिक जीवन में जिन दस महाविद्याओं को विशिष्ट स्थान प्राप्त है, उनमें काली का महत्त्व बहुत अधिक है। ये दसों देवियां सरलता से सिद्ध हो जाती हैं और तब साधक का मनोरथ शीघ्र ही पूर्ण हो जाता है। इन सिद्धियों के बल पर ये लोगों के अनेकों प्रकार के उलझे हुए कार्य को संपूर्ण करके सिद्ध पुरुषों की श्रेणी में आ जाते हैं।



कालीजी की साधना-सिद्धि रक्षा, शत्रुदमन, विजयप्राप्ति, भयनिवारण और समृद्धिप्राप्ति के उद्देश्य से की जाती है। ये ओज, तेज, पराक्रम और विजयभैरव की अधिष्ठात्री देवी हैं। समय-समय पर इन्होंने अनेक अवतार धारण किए हैं। "महाविद्या" के नाम से विख्यात देवी-अवतारों में कालीजी का प्रमुख स्थान है। पुराण व तांत्रिक ग्रंथों में काली के आठ प्रकार के स्वरूपों का वर्णन है—दक्षिणकाली, भद्रकाली, गुह्यकाली तथा महाकाली आदि। दैत्यों का वध करने के लिए देवताओं की प्रार्थना पर महामाया आद्यशक्ति के शरीरकोष से कृष्णवर्ण कालिका

या काली का आविर्भाव हुआ था। जो काल के ऊपर प्रतिष्ठित हैं, वो ही काली हैं। श्मशान जिनका निवास-स्थल है। इनकी पूजा मुख्यतः तीन प्रकार से की जाती है— १. षोड्शोपचार, २. पंचोपचार और, ३. मानसोपचार। मानसोपचार पूजा में किसी बाहरी सामान की आवश्यकता नहीं है। सब कुछ मन के अंदर, ध्यान में मां का स्वरूप रखकर, सब पूजा के अंग ध्यान में ही किए जाते हैं और इसकी संपूर्णता को तभी पहुंचा जा सकता है, जब ध्यान में मां का स्वरूप आ जाए और ध्यान जमकर धारणा बन जाए। मां की सर्वोत्कृष्ट पूजा यही है।

काली साधना के लिए सबसे उपयुक्त स्थान तो श्मशान ही है। किन्तु जो साधक अधिक समय तक श्मशान में सा .ना न करना चाहें, वो पहले दिन की साधना श्मशान में, शिव या शक्ति के मंदिर में आरंभ करके, बाद की साधनाएं अपने घर में रहकर भी कर सकते हैं। साधना के लिए अलग कक्ष होना चाहिए, जहां किसी दूसरे का प्रवेश वर्जित हो। साधना की क्रिया रात में ही करें, तो अच्छा है। साधना का श्रेष्ठ समय रात्रि का तीसरा पहर १२ से ३ बजे तक है। साधनाकाल में लाल रंग के शुद्ध आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके बैठें, देवी का कोई चित्र भी दक्षिण दिशा की ओर मुख करके रखें, तत्पश्चात् अगली प्रक्रियाएं करें।

वि-ि.योग

अस्य श्री दक्षिण कालिका मंत्रस्य भैरव ऋषिः, उष्णिक छंदः, दक्षिण कालिका देवता, ह्रीं बीजं, हुं शक्ति, क्रीं कीलकं, मम अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

इसके पश्चात् न्यास के द्वारा विनियोग के अंगों को शरीर में स्थापित करें।

ऋष्यादिं ास

ओम् भैरव ऋष्ये नमः शिरसि।
उष्णिक छंदसे नमः मुखे।
दक्षिणकालिका देवतायै नमः हृदि।
ह्रीं वीजाय नमः गुह्ये।
हुं शक्तये नमः पादयोः।
क्रीं कीलकाय नमः नाभौ।
विनियोभास नमः सर्वाङ्गे।।

करंयास

ओम् क्रां अगुष्ठाभ्यां नमः।
ओम् क्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ओम् क्रूं मध्यमाभ्यां नमः।
ओम् क्रैं अनामिकाभ्यां नमः
ओम् कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ओम् करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

साधकों को यह बात ध्यान में रखनी होगी कि मंत्र का जप हाथ की उंगलियों से किया जाता है। अतः मंत्र के मुख्याक्षर को प्रत्येक उंगली व समस्त हाथ में प्रतिष्ठित करने के लिए उसमें सभी मात्राएं लगाकर करंयास किया जाता है।

हृदयादिंयास

ओम् हृदयाय नमः। ओम क्रीं शिरसे स्वाहा।
ओम् क्रूं शिखायै वषट्। ओम् क्रैं कवचाय हुम्।
ओम् क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। आम् अस्त्राय नम्।

मंत्र के मुख्याक्षर में प्रत्येक मात्रा लगाकर बने स्वरूपों द्वारा हृदयादि शरीर के मुख्य अंगों को तथा समस्त शरीर को मंत्रमय किया जाता है। उपर्युक्त न्यास चाहे तो पाठ से पूर्व नित्य करें अथवा प्रथम दिन आरंभ करने से पहले करें और न कर सकें, तो न करें। मुख्य भाग श्रद्धापूर्वक मंत्र जाप का है। इसके बाद मंत्र बोलें और यदि न बोल सकें, तो सामने चित्र का अंतर में ध्यान करें।

ध्यानमंत्र

शवारूढ़ा महाभीमां घोरदृंष्ट्रां हसंमुखीम्।
चतुर्भुजा खंग मुंडवराभयकरां शिवाम्।।
मुंडमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगंबराम्।
एवं संचिंतयेत् कालीं श्मशानाय वासिनीम्।।

मूलमंत्र

ओम् क्रीं क्रां क्रीं हुं हुं हुं दक्षिण कालिके
क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

मंत्र को पुरश्चरण विधि से सिद्ध करना होता है, फिर समय पड़ने पर, अवसर के अनुसार इसका कुछ देर जाप करके उसका तुरंत प्रभाव देखा जाता है। पुरश्चरण में इसका सवा लाख मंत्र-जप का विधान है। दशांश हवन १२५००, दशांश तर्पण १२५०, दशांश मार्जन १२५ तथा दशांश ब्राह्मण कन्या को भोजन कराएं। यदि कोई साधक यह सब न कर सके, तो उसे इसके स्थान पर दो गुना अधिक जपकार्य करना चाहिए। इससे देवी की सिद्धि शीघ्र मिलती है।

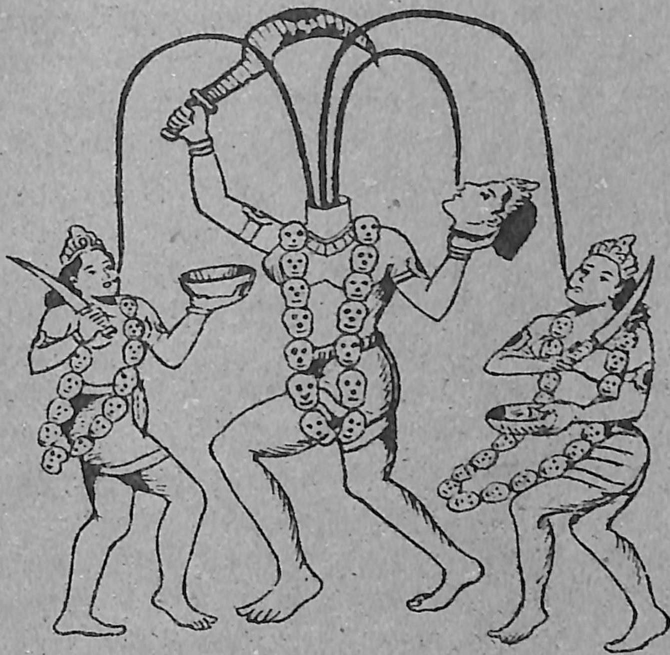
विशेष—यदि आप काली की साधना श्मशान में ही पूर्ण करना चाहते हैं (श्मशान में काली की सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है), तो भय को अपने से दूर हटा दें। श्मशान

में जाने से वैराग्य उत्पन्न होता है। श्मशान में प्रवेश करने से पूर्व ही मंत्र जप शुरू कर दें और जिस स्थान पर बैठकर साधना करनी हो, वहां अपने चारों ओर सिंदूर में घी मिलाकर एक घेरा बना लें, ताकि श्मशान की कोई दुष्टात्मा आपकी साधना में कोई विघ्न न डालने पाए। घेरे में बैठने के बाद भी जप बंद न करें। इस प्रकार साधना पथ पर अग्रसर होने से साधना सफल होती है और सिद्धि की प्राप्ति भी शीघ्र हो जाती है।

छिन्नमस्ता देवी की साधना

दस महाविद्याओं में देवी छिन्नमस्ता का भी अपना एक प्रमुख स्थान है। इनकी साधना विशेष रूप--से संतान--प्राप्ति, पुत्र-प्राप्ति, दरिद्रता का नाश करने के लिए, कवित्व शक्ति प्राप्त करने के लिए, लेखन एवं वाक्शक्ति प्राप्त करने के लिए की जाती है। इनके मंत्र का पुरश्चरण सवा लाख मंत्र का है। अधिकाधिक ४१ दिनों में पूर्ण पुरश्चरण नियोजित किया जा सकता है।

देवी छिन्नमस्ता को पायस खीर, लाल रंग के सूखे मेवे, किशमिश, खजूर, बादाम आदि का नेवैद्य विशेष प्रिय है। इनकी पूजा में लाल रंग का आसन, लाल चंदन की माला, कुंकुम, लाल बत्ती का घी या तेल का दीपक, लाल रंग के पुष्प प्रयुक्त होते हैं। हवन में अन्य वस्तुओं के साथ लाल चंदन का प्रयोग मुख्य रूप से किया जाता है। मिष्ठान और फल आदि भी लाल रंग के ही प्रयोग में लाएं। साधक के पहनने के वस्त्र भी लाल हों। सूखे नारियल के गोले में लाल चंदन मिला घी भरकर पूर्णाहुति के समय बलिक्रम करना चाहिए। यहां हम केवल विनियोग, ध्यान-स्तुति और मूलमंत्र दे रहे हैं। शेष क्रियाएं पूर्ववत् हैं।



विनियोग

ओम् अस्य शिरच्छिन्नमंत्रस्य, भैरव ऋषिः, सम्राट् छंदः, छिन्नमस्ता देवता, हुं हुं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति

भास्वंमंडल मध्यगां निज शिरच्छिन्नं विकीर्णालकम्।
स्फारास्यं प्रपिवट्गलात्स्वरुधिरं वामेकरे विभ्रमीम्।।
यामासक्त रतिस्मरा परिगतां सख्यौ निजे डाकिनी।
वर्णिन्यौ परिदृश्य मोदकलितां श्रीछिन्नमस्तां भजे।।

मूलमंत्र

ओम् क्लीं ह्रीं ऐं वज्र वैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा।

यदि दीपावली की रात्रि से प्रारंभ करके मंत्र जप की संख्या चार लाख पूर्ण कर ली जाए, तो देवी साधक को समाधि-अवस्था में प्रत्यक्ष दर्शन देती हैं और साधक के सभी कार्यों को पूर्ण करती हैं। तथा अपने भक्त पर सदा कृपादृष्टि रखती हैं।

त्रिपुरसुन्दरी साधना

दश महाविद्याओं के क्रम में तीसरी महाविद्या "षोडशी" हैं, जिन्हें तंत्र में त्रिपुरसुन्दरी भी कहा गया है। शिव-शक्ति का नाम ही षोडशी है। पंचकला, पंचअक्षर, पंचआत्माक्षर और परातत्पर शिव की समष्टि सोलह होने से ही इनका नाम षोडशी पड़ा। ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र, अग्नि और सोम इन पांचों में इद्रंरूप सूर्य में ही षोडशी देवी का प्रधान निवास है। भूः, भुवः और स्वः तीनों लोक इसी शक्ति से उत्पन्न हुए हैं। शरीर में मन, प्राण और वाक्शक्ति, तीनों की स्वामिनी है, इसलिए इनका नाम त्रिपुरसुंदरी भी पड़ा। इनकी साधना से कर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पदार्थों की प्राप्ति होती हैं।

साधना के प्रारंभिककाल में प्रातः स्नानादि करके सफेद रंग के साफ नये धुले वस्त्र पहनें। देवी की पूजा में सभी वस्तुएं सफेद रंग की प्रयुक्त होती हैं। सफेद रंग का आसन, सफेद पुष्प, सफेद रंग का ही नेवैद्य फल, मिष्ठान, बर्फी, बताशे, सफेद रंग की बत्ती का घी का दीपक, सफेद मोतियों की माला, सफेद चंदन ही मुख्य प्रयोजनीय हैं।

देवी षोडशी का चित्र पूर्वाभिमुख करके रखें और स्वयं उत्तर की ओर मुंह करके बैठें। षोडशोपचार पूजन, "ओम् ह्रीं षोडश्यैनमः।", मंत्र के साथ करें और प्रत्येक



प्रक्रिया से पूर्व, "ओम् ह्रीं षोडश्यैनमः आवाहनं समर्पयामि" पढ़े। वशीकरण की शक्ति प्राप्त करने के लिए षोडशी देवी की साधना सर्वश्रेष्ठ है।

विनियोग

ओम् अस्य त्रिपुरसुंदरी मंत्रस्य दक्षिणामूर्त्ति ऋषिः, पंक्तिश्छंदः, श्रीमहात्रिपुरसुंदरी देवता, ऐं बीजम्, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

विनियोग के पश्चात् न्यासादि की क्रियाएं कर, ध्यानमंत्र का जप करें।

ध्यानमंत्र

बालार्क युत तैजसं त्रिनयनां रक्तांबरोल्लासिनीं।
नानालंकृति राजमानवपुषं बालेंदु युक शेखराम्।।
हस्तैरिक्षु धनुःसृणिं सुमशरं पाशं मुदा विभ्रतीं।
श्रीचक्र स्थितसुंदरीं त्रिजगतामाधार भूतां भजे।।

मूलमंत्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ह्रीं क ऐं ई ल ह्रीं।
ह स क ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।।

इस मंत्र के पुरश्चरण में दस लाख जप करके, पलाशपुष्पों द्वारा बारह हजार की संख्या में होम करना चाहिए।

बगलामुखी साधना

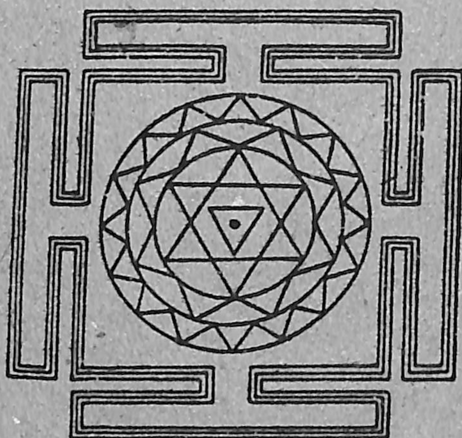
बगलामुखी का दूसरा नाम पीतांबरा भी है। इसे अग्निपुराण में दस महाविद्याओं में सिद्धविद्या कहा गया है। कहीं-कहीं देवी को बल्गा मुखि नाम से भी जाना गया है। शास्त्रानुसार इस देवी की साधना से शत्रुओं का स्तंभन हो जाता है। यह साधक को भोग और मोक्ष दोनों ही प्रदान करती है। वैसे तो बगलामुखी की साधना से साधक की प्रत्येक कामना पूर्ण होती है, किन्तु विशेष रूप-से शत्रुदमन, विवाद, विजय, विरोधनाश आदि के लिए इसकी सेवा लेने का विधान है।

साधक को चाहिए कि वो देवी के चित्र को एक चौकी पर पूर्व की ओर मुख करके स्थापित करे। षोडशोपचार विधि से पूजन करे। शुद्ध जल से स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहने। वस्त्र, आसन, माला, गंध, पुष्प, फल और मिष्ठान्नादि सभी पीले रंग के होने चाहिए। बगलामुखी की सिद्धि पा लेने के बाद छोटी-छोटी सिद्धियां तो स्वयं



ही प्राप्त हो जाती हैं। इस देवी को सिद्ध कर लेने वाला व्यक्ति कभी किसी के आगे हारता नहीं है और सर्वत्र विजयी रहता है। साधनाकाल में देवी के चित्र के साथ-साथ यंत्र की स्थापना भी अवश्य करनी चाहिए।

साधक को हल्दी या चंदन का तिलक लगाकर आसन पर बैठना चाहिए। शांतिकर्मों के लिए ईशान कोण की ओर, वशीकरण के लिए उत्तर की ओर, स्तभंन के लिए पूर्व की ओर, विद्वेषण के लिए नैऋत्य कोण, उच्चाटन में वायव्य कोण, मारण में अग्नि कोण, धन प्राप्ति के लिए पश्चिम दिशा की ओर मुख करके जप करना चाहिए।



पुरश्चरणकाल में भोजन भी पीले रंग का करें। केसर मिला दूध और खीर, पीले रंग के फल, बेसन के लड्डू, बूंदी, पूरी और हल्दी वाली शाक-सब्जी ग्रहण करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें, भूमि पर शयन करें, मौन व्रत रखें तथा साधना का शुभ मुहूर्त पर्वकाल में करें।

विनियोग

ओम् अस्य श्रीबगलामुखी मंत्रस्य, नारद ऋषिः, वृहतीछंदः, बगला-मुखीदेवता ह्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, मम अखिल वाप्यते जपे विनियोगः।

ध्यानमंत्र

मध्ये सुधाब्धि मणि मंडप रत्न वेद्यां,
सिंहासनो परिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीतांबरा भरण माल्य विभूषितांगीं,

देवीं नमामि धृत मुद्गर वैरिजिह्वाम्।।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं,
वामेन शत्रून् परिपीडयंतीम्।
गदाभि घातेन न दक्षिणेन,
पीतांबराढ्यां द्विभुजां नमामि।

मूलमंत्र

ओम् ह्रीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्रीं ओम् स्वाहा।

बगलामुखी देवी का मंत्र बहुत प्रभावशाली है। साधक को जप में शुचिता, शुद्धि और अटूट श्रद्धा रखनी चाहिए, अन्यथा साधक को असफलता की पीड़ा सहन करनी पड़ सकती है।

मंत्र का सवा लाख जप करने से धन-संपत्ति और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। चार लाख जप करके दशांश हवनादि करने से संतान का सुख मिलता है। सवा लाख जप करने के बाद कुम्हार के चाक की मिट्टी, चार अंगुल की एरंड की लकड़ी और मीठा लाजा द्वारा हवनक्रिया करने से शरीर के सभी रोग दूर हो जाते हैं। मंत्र का चार लाख जप करके घी शहद मिलाकर, तिल या सरसों से दशांश हवन करने से साधक में अलौकिक शक्तियों का समावेश हो जाता है।

तारादेवी साधना

रात्रि बारह बजे से सूर्योदय तक महाकाली की सत्ता रहती है, इसके पश्चात् तारा का साम्राज्य है। महाकाली महाप्रलय की अधिष्ठात्री देवी है और तारा सूर्यप्रलय की ! प्रलय करना दोनों ही का समान धर्म है। देवी को तारिणी, तरला, त्रिरूपा, तरणी, रजोरूपा, परानंदा, कालस्वरूपा और महामाया आदि नामों से भी जाना जाता है। होली या दीवाली आदि पर्वकालों

में देवी की साधना आरंभ की जाती है। साधना के लिए उपयुक्त स्थान देवी-स्थल अथवा श्मशान है। देवी स्वयं भी शव के ऊपर आसीन है। उनकी जिह्वा निकली हुई और तीनों नेत्र खुले हैं। उनके दर्शन मात्र से काली के दर्शनों का आभास होता है। ऊनी अथवा व्याघ्रचर्म का आसन साधना के लिए श्रेष्ठ है। देवी को लाल रंग विशेष प्रिय है।

विनियोग

ओम् अस्य श्रीमहोग्रतारा मंत्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, वृहती छंदः, श्रीमहकेग्रतारा देवता, हुं बीजम्, फट् शक्तिः, ह्रीं कीलकं, श्रीतारा देवी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

विनियोग के पश्चात् न्यासादि कर, निम्न मंत्र से देवी का ध्यान करें—

ध्यानमंत्र

प्रत्यालीढपदार्पिताङ्घ्रिशवहृद् घोराट्टहासापरा खड्गेंदीवरकर्त्रिखर्पर भुजा हुंकार बीजोद्भवा खर्वानील विशाल पिंगल जटा जूटैक नागैर्युता जाड्यंन्यस्य कपालके त्रिजगतां हंत्युग्रतारा स्वयं।

मूलमंत्र

ओम् ह्रीं स्त्रीं हुं फट्।

मूलमंत्र का जप चालीस दिनों में तीन लाख की संख्या में करना चाहिए।

धूमावती साधना

धूमावती देवी का स्वरूप एक विधवा स्त्री जैसा है। देवी की साधना रात्रि में की जाती है। साधनाकाल में धूमावती का चित्र अपने सामने प्रतिष्ठित करें, फिर उसकी



षोडशोपचार, पंचोपचार से पूजा करें। विनियोग, न्यास और ध्यान करके मंत्र का जाप करें। मंत्र का पुरश्चरण आठ लाख जप का है। देवी की साधना में सफेद रंग प्रयुक्त होता है। धूमावती देवी दस महाविद्याओं में से एक हैं और इनकी साधना से साधक मनोवांछित लक्ष्य की प्राप्ति करता है।

विनियोग

ओम् अस्य धूमावती महामंत्रस्य पिप्पलाद ऋषि, निवृतछंदः, ज्येष्ठादेवता, धूं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, धूमावती कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

अब न्यासादि करके देवी के ध्यान का मंत्र जपें।

ध्यानमंत्र

विवर्णा चंचला कृष्णा दीर्घा च मलिनांबरा।
विमुक्त कुंतला रूक्षा विधवा विरल द्विजा।।
काकध्वजरथारूढ़ा विलंबित पयोधरा।
शूर्पहस्तातिरूक्षाक्षी धूमहस्ता वरांविता।।
प्रवद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा।।

मूलमंत्र

धूं धूं धूमावती ठः ठः।

मूलमंत्र का उच्चारण करने के पश्चात—

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पण तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

यह पढ़कर पुष्पांजलि प्रदान करते हुए, "पूजिता स्तर्पितास्संतु", कहें। इसके पश्चात् भूपुर में पूर्वादि क्रम से इंद्र आदि दश दिक्पालों तथा उनके वज्र आदि आयुधों का पूजन करके पुष्पांजलि प्रदान करें। मूलमंत्र का जप श्मशान में सर्वथा नग्न होकर करना चाहिए।

काम्य प्रयोग—मंत्र के सिद्ध हो जाने पर तांत्रिक क्रियाओं को करना चाहिए। ध्यानोपरांत श्मशान में पहुंचकर एकदम नग्न होकर, केवल रात्रि के समय भोजन करने वाला साधक जप के दशांश संख्यानुसार तिल से होम करे। इस प्रकार ज्येष्ठा की पूजा करने के बाद, मंत्र सिद्ध हो जाने पर तथा देवी की कृपा प्राप्त होने पर, निम्न रूप से काम्य प्रयोग करने चाहिए—

१. कृष्ण चतुर्दशी के दिन उपवास करके, सिर के बाल खुले रखकर तथा नग्न होकर शून्य घर में, श्मशान में, वन में अथवा गुफा में, गड्ढे में अथवा

पर्वत पर, शव के ऊपर बैठकर देवी का ध्यान करते हुए एक लाख की संख्या में मंत्र जप करें। तत्पश्चात् राई में नमक मिलाकर होम करें। इससे साधक के शत्रुओं का अन्त हो जाता है।

२. "फेत्कारिणी तंत्र" के अनुसार साधक हड्डी के ऊपर मंत्र लिखकर, उसमें शिवलिंग स्थापित कर मंत्र जप करें। तत्पश्चात् शिव को "अवष्टभ्य" करके शत्रु के नाम से मंत्र जप करना चाहिए।

३. इस मंत्र का ५०० की संख्या में जप करने से शत्रु ज्वरपीड़ित होता है। ज्वर की शांति पंचगव्य अथवा जल से होती है।

४. मंत्र में शत्रु का नाम लेते हुए, वन में आधी रात के समय एक लाख की संख्या में मंत्र जप करने से साधक के मन में उत्साह उत्पन्न होता है। फिर श्मशान की अग्नि में कौए को जलाकर अभिमंत्रित करें तथा उसकी भस्म को लेकर शत्रु के सिर पर फेंके तो तत्काल उच्चाटन होता है।

५. कृष्णपक्ष में श्मशान की भस्म द्वारा शिवलिंग निर्मित कर, उसके ऊपर शत्रु के नाम से युक्त न्यास करके उसकी पूजा करें। इससे स्वप्न में भैंसे का रूप धारण करके, देवी का मूलमंत्र शत्रु का विनाश कर देता है।

६. मंत्र के द्वारा अभिमंत्रित भस्म को शत्रु के घर में गाढ़ देने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

७. श्मशान की भस्म से शिवलिंग निर्मित कर, मन से कर्मचिंतन करते हुए, निवेदन करके पुष्पादि से पूजन करें, तो शत्रु परास्त होता है।

८. नीम की पत्ती तथा कौए के पंख एकत्र कर १०८ की संख्या में मंत्र जप करें। फिर देवता के नाम से धूप दें, तो शत्रु में परस्पर विद्वेष हो जाता है। इसकी शांति चिता की लकड़ी को अग्नि में दूध का होम करने से होती है।

९. स्त्रीरज का धूप प्रदान करने से कालिका गृधृ के रूप में आकर शत्रु को मारती है। इसकी शांति निर्माल्य से होती है।

१०. वाराहकर्ण जड़ी को धूप देकर १००८ बार मंत्र जप करने से भगवती शूकर का रूप धारण कर शत्रु को मार डालती है। इसकी शांति पीपल के पत्तों की धूप से होती है।

११. हल्दी के पत्ते पर शत्रु का नाम लिखकर, उसे किसी वन के मध्य डालकर, उसके ऊपर पूर्वोक्त मंत्र का १०००० की संख्या में जप करने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

१२. श्मशान की अग्नि में कौए को जलाकर, उसकी भस्म को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर, शत्रु के नाम का उच्चारण करते हुए, आठों दिशाओं में फेंकने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

१३. कृष्णपक्ष में श्मशान की भस्म से शिवलिंग बनाकर, उस पर शत्रु के नाम सहित देवी का मूलमंत्र लिखकर पूजा करें तथा भैंस के दूध द्वारा धूप देकर, जो पदार्थ शत्रु के अमंगल सूचक हैं, उन्हें प्रदान करते हुए पूजन करने से देवी धूमावती महिषी का रूप धारण कर, साधक

के शत्रु का अथवा साधक जिसे चाहे, उसका विनाश कर देती है।

१४. श्मशान की किसी चिता की भस्म से शिवलिंग बनाकर, पुष्पादि से उसका पूजन करें और कौए के पंख और नीम की पत्तियों पर १०८ बार देवी के मूलमंत्र का जप करें, फिर "अमुकं द्वेषय द्वेषय", कहकर धूप प्रदान करें। इस क्रिया से शत्रुवर्ग में द्वेष उत्पन्न हो जाता है। "अमुकं द्वेषय द्वेषय" के स्थान पर शत्रुओं का नाम लेना चाहिए।

१५. अश्वस्थ पत्र (पीपल के पत्ते) की धूप देकर, पंचगव्य अथवा केवल दूध अथवा घी, शहद और शर्करा मिश्रित त्रिमधु द्वारा होम करने से सभी प्रकार के अभिचार कृत्यों की शांति होती है।

१६. यज्ञोडुंबर आदि क्षीरिवृक्ष की कील बनाकर, उसके ऊपर शत्रु के नाम सहित धूमावती का मंत्र लिखें और कील के ऊपर मंत्र का जप करके शत्रु के घर के आगे गाढ़ देने मात्र से उसका उच्चाटन हो जाता है।

कमला साधना

धूमावती व देवी कमला में प्रतिस्पर्धा है। धूमावती दरिद्रता की देवी है, कमला लक्ष्मी की। धूमावती अवरोहिणी है और कमला रोहिणी। धूमावती ज्येष्ठा है और कमला कनिष्ठा है। धूमावती आसुरी है और कमला दिव्या है। दस महाविद्याओं में कमला एक श्रेष्ठ महाविद्या है और सदाशिव पुरुष की शक्ति है। देवी की साधना-सिद्धि से सभी प्रकार के वैभव, संपत्ति, धन- धान्य, यश व कीर्ति की प्राप्ति होती है।



कमला देवी की साधना घर में ही की जा सकती है। किसी शुभयोग में ही देवी की साधना प्रारम्भ करनी चाहिए और साधनाकाल में देवी के चित्र को प्रतिष्ठित कर, विधि-विधान से उनकी पूजा-अर्चना करने के पश्चात् ही आगे विनियोग आदि की प्रक्रियाएं करनी चाहिए। देवी की साधना में माला, आसन, वस्त्र व पूजा आदि की सभी सामग्री लाल रंग की होनी चाहिए। साधक को स्वयं भी लाल वस्त्र धारण करना चाहिए।

सबसे पहले देवी का चित्र किसी चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर सम्मान और श्रद्धापूर्वक रखें। देवी के चित्र का मुख पूर्व या उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए और स्वयं भी उत्तर की ओर मुंह करके बैठें। घी का

दीपक जलाएं। कमल के पुष्पों से पूजा करें। मिष्ठान का नैवेद्य अर्पण करें। लाल चंदन की माला का प्रयोग करें। इस काल में पूर्णतया ब्रह्मचर्य का पालन करें। मौन व्रत रखें और भूमि पर शयन करें।

विनियोग

ओम् अस्य श्रीमहालक्ष्मी मंत्रस्य भृगुऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीदेवता, श्री बीजम्, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकं, श्रीलक्ष्मीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

विनियोग के पश्चात् पूर्वोक्त प्रकार से न्यासादि करें और फिर ध्यानमंत्र को पढ़ें।

ध्यानमंत्र

कांत्या कांचनसंनिभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै
हंस्तोत्क्षिप्तहिरंमया मृतघटै रासिच्यमानां श्रियम्
विभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।

मूलमंत्र

ओम् ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसौः जगत्प्रसूत्यै नमः।

देवी के मूलमंत्र की जप-संख्या सात लाख है। ७० हजार हवन, ७ हजार तर्पण, ७०० मार्जन तथा ७० ब्राह्मणों को भोजन कराने से पूर्ण पुरश्चरण होता है।

भुवनेश्वरी साधना

८४ लाख योनियों में जितनी भी प्रजा है, सबका भरण-पोषण देवी भुवनेश्वरी करती हैं। देवी की साधना से शक्ति, बल, सामर्थ्य, संपदा, वैभव और सब प्रकार की उत्तम विद्याएं, भक्ति, ज्ञान व वैराग्य प्राप्त होता है। मन्त्र सिद्धि करने पर सफलता और इष्ट की प्राप्ति होती है और साधक देवी की सिद्धि का कृपा पात्र बनता है।

सिद्ध पुरुषों को तो देवी के साक्षात दर्शन हो जाते हैं,

किन्तु साधकों को अन्तर में, ध्यान में अथवा स्वप्न में भी देवी के दर्शन हो जाएं, तो उनका जीवन सफल हो जाता है। यदि किसी अत्याचारी द्वारा अत्याचार किया जा रहा हो, तो देवी से प्रार्थना करनी चाहिए। अपने आर्तसाधक की पुकार दयामयी देवी अतिशीघ्र सुनती है। निष्काम भाव से साधना करने पर साधक को स्वयं मां भुवनेश्वरी की कृपा से अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, ऋद्धि सिद्धि, सुख-सम्पत्ति आदि सभी वैभव प्राप्त होते हैं।



साधक को शुभ मुहूर्त्त, पर्वकाल, कालरात्रि, मोहरात्रि, महारात्रि, ग्रहणकाल, होली, दीवाली अथवा कृष्णपक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी से साधना का प्रारंभ करना चाहिए।

देवी की साधना में प्रत्येक वस्तु लाल रंग की ही प्रयुक्त होती है।

स्नानादि से पवित्र होकर, स्वच्छासन पर बैठें। किसी लाल रंग की काष्ठ की चौकी पर देवी के चित्र की स्थापना करें। षोडशोपचार या मानसोपचार से देवी की पूजा-अर्चना प्रारम्भ करें। यदि विनियोग के पश्चात् न्यासादि न कर सकें तो चिन्ता न करें। देवी का अन्तर में ध्यान करते हुए साधनारत रहें।

विनियोग

ओम् अस्य श्रीभुवनेश्वरी, महामंत्रस्य सदाशिव ऋषिः, त्रिष्टुप् छंदः, श्रीभुवनेश्वरी देवता, ह्रीं बीजम्, ऐं शक्तिः, श्रीं कीलकं मम अभीष्ट सिद्धयर्थे, श्रीभुवनेश्वरी देवी प्रीत्यार्थे जपे विनियोगः।

ध्यानमंत्र

ओम् बाल रवि द्युति मिंदु किरीटां
तुंग कुचां नयन त्रय युक्ताम्
स्मेर मुखीं वरदांकुश पाशाः
भीति करां प्रभजे भुवने शीम्।

मूलमंत्र

ओम् ऐं ह्रीं श्रीं नमः।

इस मंत्र का पुरश्चरण तीन लाख जप संख्या का है।

मातंगी साधना

तंत्रशास्त्रों में देवी मांतगी को शिवजी की महाशक्ति माना गया है। देवी की साधना से वाक्सिद्धि प्राप्त होती है। देवी की सिद्धि पा लेने पर साधक किसी से भी शास्त्रार्थ में, वादविवाद में हार नहीं सकता। शिक्षा, शास्त्रज्ञान, वेदवेदांग अथवा काव्य रचना की उसमें अद्वितीय शक्ति

आ जाती है। देवी की साधना बुद्धिहीनों को भी विद्वान् बना देती है। देवी मातंगी दस महाविद्याओं में से एक है। मातंगी विद्या की देवी है, तथा इसकी साधना किसी भी शुभ कार्य के लिए की जा सकती है।



ग्रहणकाल में, पर्वकाल में, किसी शुभ मुहूर्त्त में अथवा कृष्णपक्ष की अष्टमी, अमावस्या, होली, दिवाली या शिवचतुर्दशी की रात्रि को साधना का आरंभ करना चाहिए। साधनाकाल में लकड़ी की चौकी पर देवी के चित्र को पूर्वाभिमुख रखें और स्वयं स्वच्छ होकर, साफ कपड़े पहनकर उत्तराभिमुख बैठें और देवी के स्वरूप को अपने अंतर में उतार लें, तब आगे की क्रियाएं करें।

विनियोग

ओम् अस्य श्री मातंगी महामंत्रस्य
दक्षिणमूर्ति ऋषिः, विराट् छंदः,
श्री मातंगी देवता, ह्रीं बीजम्,
हूं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्री मातंगी
पीत्यर्थे जपे विनियोगः।

न्यासादि पूर्वोक्त विधि से कर, ध्यानमंत्र को पढ़ें।

ध्यानमंत्र

श्यामां शुभ्रांशु भालां त्रिनयन
कमलां रत्न सिंहासनस्थां
भक्ता भीष्ट प्रदात्रीं सुरनिकर
करा सेव्य कंजांगि युग्माम्
नीलांभोजांश कांति निशिचर
निकरारण्य दावाग्नि रूपां
पाशं खड्गं चतुर्भिर्वर कमल
करैः खेटकांचां कुशंच
मातंगी भाव हंतो मभिमत
फलवां मोदिनीं चिंतयामि।

अर्थात् मातंगी देवी का श्यामवर्ण है, तीन नेत्र हैं। मस्तिष्क पर अर्ध चंद्र धारण किये हुए हैं। चार भुजाएं हैं, जिनमें खड्ग (तलवार) खेटक, पाश तथा अंकुश धारण किये हुए हैं। रत्न जड़ित सिंहासन पर विराजमान हैं। भक्तों की मनोकामना पूर्ण करती हैं। सुर-असुर सभी उनकी पूजा करते हैं। अग्नि के समान तेजस्वी स्वरूप है। ऐसी श्री भगवती मातंगी देवी का मैं श्रद्धापूर्वक चिंतन, ध्यान, पूजन नमस्कार करता हूं।

मूलमंत्र

ओम् ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।

इस मंत्र का पुरश्चरण सवा लाख जप का है। दशांश हवन पूरा न कर सकें, तो उसके स्थान पर दस गुना जप करें। इस प्रकार यदि ११० माला नित्य जपें, तो २१ दिनों में और ५५ माला से ४१ दिनों में पुरश्चरण हो जाता है तथा साधनाकाल में सभी सफेद वस्तुओं का प्रयोग करें।

त्रिपुरभैरवी साधना

देवी त्रिपुरभैरवी की देहकांति उद्दीयमान सहस्त्र सूर्यों की कांति के समान है। वो रक्तवर्ण के क्षौम वस्त्र धारण किये हुए हैं। उनके गले में मुंडमाला है तथा दोनों स्तन रक्त से लिप्त हैं। अपने चारों हाथों में वो जपमाला, पुस्तक, अभयमुद्रा तथा वरमुद्रा धारण किए हैं। उनके ललाट पर चंद्रमा की कला शोभायमान है। रक्त कमल जैसी शोभा वाले उनके तीन नेत्र हैं। उनके मस्तक पर रत्नजड़ित मुकुट तथा मुख पर मंद मुस्कान है।

देवी का यह स्वरूप प्रबल आकर्षण और सम्मोहन-शक्ति वाला है। इसके साधक को देवी की कृपा से सम्मोहन-शक्ति प्राप्त हो जाती है, जिसके द्वारा वो अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान करने में सक्षम हो जाता है।

देवी त्रिपुरभैरवी महाशिव कालभैरव की शक्ति हैं।

छिन्नमस्ता देवी महाप्रलय से संबंधित हैं, तो त्रिपुरभैरवी नित्य प्रलय से। भुवनेश्वरी देवी जिन भुवनों की रक्षा करती हैं, त्रिपुरभैरवी उनका नाश करती हैं।

छिन्नमस्ता को डाकिनी और त्रिपुरभैरवी देवी को अपराडाकिनी माना गया है।



साधनारंभ से पूर्व साधक को शारीरिक व आत्मशुद्धि करके, स्वच्छ एवं नये वस्त्र धारण करके ही आसन ग्रहण करना चाहिए और उससे पूर्व प्रयोजनीय वस्तुओं को अपने पास रख लेना चाहिए। काष्ठ की चौकी पर देवी त्रिपुरभैरवी का चित्र स्थापित करना चाहिए तथा षोडशोपचार, पंचोपचार या मानसोपचार से देवी की पूजा करनी चाहिए।

इसके बाद शेष क्रियाओं से पहले माला की पूजा करने का विधान है।

देवी त्रिपुरभैरवी की पूजा में लाल रंग की वस्तुएं

प्रयुक्त होती हैं। देवी को कमल के फूल अत्यंत प्रिय हैं। साधक को स्वयं भी लाल वस्त्र धारण किए रहना चाहिए। अन्य कोई रंग देवी को प्रिय नहीं है।

विनियोग

ओम् अस्य श्री त्रिपुरभैरवी मंत्रस्य, दक्षिणमूर्ति ऋषि:, पंक्तित्छंद:, त्रिपुरभैरवी देवता, वाग्भोम बीजम्, शक्ति बीजम्, कामराज कीलकं श्री त्रिपुरभैरवी प्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

ऋष्यादिंयास

ओम् दक्षिण मूर्तये ऋषये नम: शिरसि।
पंक्ति छंद से नम: मुखे।
श्री त्रिपुरभैरवी देवतायै नम: हृदि।
वाग्भोम बीजाय नम: गुह्ये।
शक्ति बीजम शक्तये नम: पादयो:
कामराज कीलकाय नम: नाभौ।
विनियोग नम: सर्वान्गे।

करंयास

हस्त्रां अंगुष्ठाय नम:।
हस्त्रीं तर्जनीभ्यां नम:।
हस्त्रूं मध्यमाभ्यां नम:।
हस्त्रैं अनामिकाभ्यां, नम:।
हस्त्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नम:।
हस्त्र: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

हृदयादिंयास

हस्त्रां हृदयाय नम:। हस्त्रीं शिरसे स्वाहा।

हस्त्रूं शिखाये वषट्। हस्त्रैं कवचाय हुम्।
हस्त्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। हस्त्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानमंत्र

उद्यद् भानु सहस्त्र कांति
मरुण क्षौभां शिरोमालिकां
रक्तालिप्त पयोधरां जप
वटीं विद्यामभीतिं वरां
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र
विलसद वक्त्रार्विन्दश्रियं
देवीं बद्ध हिमांशु रत्न
मुकुटां वंदे सुमंद स्मिताम्।

मूलमंत्र

ओम् हस्त्रीं त्रिपुर भैरव्यै नमः।

इस मंत्र का पुरश्चरण १० लाख मंत्र जप का है। पुरश्चरणकाल में सात्त्विक भोजन, भूमिशायन तथा पूर्ण रूप-से ब्रह्मचर्य का पालन देवी-सिद्धि में अनिवार्य है।

श्रीभैरव साधना

तांत्रिक कर्मों की सिद्धि के लिए श्री भैरवनाथ की कृपा प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि ऐसी बहुत-सी सिद्धियां हैं, जिनकी प्राप्ति भैरवनाथ से विमुख रहकर संभव नहीं है, अतः सभी प्रकार की साधनाओं में भैरवनाथ का स्मरण बहुत आवश्यक है। इनके अनेक रूप हैं—

१. कालभैरव
२. रुद्रभैरव
३. बटुकभैरव



भैरवनाथ भगवान शिव के अतिप्रिय, विश्वासपात्र, निकट और समर्थगण हैं। वे स्वयं में देवताओं की भांति पूज्य हैं। कुछ विद्वान् उन्हें प्रकारांतर से शिव का अवतार मानते हैं। यदि यह सत्य न भी हो, तो भी उन्हें शिवजी के गणों में सर्वोच्च अधिकारी माना गया है। यद्यपि भैरव की रूपाकृति अति भयंकर है, उन्हें देखने मात्र से ही रोमांच हो जाता है। किन्तु अपने भक्तों पर दयालु होकर, उनका संकट निवारण करने में वो सबसे आगे रहते हैं।

विनियोग

ओम् अस्य श्री आपदुद्धारक श्रीबटुकभैरव मंत्रस्य बृहदारण्यको नाम ऋषिः, त्रिष्टुप् छंदः, श्री बटुकभैरवो देवता ह्रीं बीजम स्वाहा शक्तिः भैरवः कीलकं मम कार्यसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

विनियोग के पश्चात् न्यासादि करें और फिर ध्यानमंत्र जपें।

ध्यानमंत्र

शांतं पद्मासनस्थं शशि मुकुटधरं मुंडमालं त्रिनेत्रं,
शूलं खड्गं च वज्रं परशुमुसलके दक्षिणांगे वहंतम्।
नागं घंटां कपालं नलिनकरयुतं सांकुशं पाशमंये,
नानालंकारयुतं स्फटिकमणिनिभं नौमिबालं शिवाख्यम्।।

मूलमंत्र

ओम् हं षं नं कं सं खं महाकाल भैरवाय नमः।

इस मंत्र द्वारा अरिष्ट-निवारण होता है। इसका २१ हजार जप करने का विधान है। रुद्रयामल तंत्र में भैरव मंत्र के जप द्वारा विभिन्न कार्यों की सिद्धि के लिए ६ वारों के विशेष प्रयोग दिए हैं, जो बहुत उपयोगी हैं। नवीन साधक लाभ उठा सकें, इसी उद्देश्य से उन्हें यहां दिए जा रहे हैं—

स्तंभन प्रयोग के लिए

(रविवार)—इस दिन प्रातःकाल श्मशान में जाकर, **"ओम् ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ओम् स्वाहा"**, मंत्र का दस हजार जप करें तथा रात्रि में जायफल, जावित्री और कनेर के फूलों को घी में मिलाकर दशांश हवन करें, तो साधक में शत्रु के स्तंभन करने की शक्ति आ जाती है।

मोहन प्रयोग के लिए

(सोमवार)—इस दिन मध्याह्न में कूपजल से स्नान कर, कुएं के ऊपर पानी खींचने के स्थान पर बैठ कर उपर्युक्त मंत्र का दस हजार जप करें तथा घृत, भैंस के दूध का दही और चीनी, तीनों को मिलाकर दशांश हवन

करें। इस प्रकार किए गए हवन की भस्म का तिलक करने से मोहन प्रयोग करने की शक्ति आ जाती है।

शत्रुनाश, मारण प्रयोग

(मंगलवार)—मंगलवार की अर्द्धरात्रि में किसी चौराहे पर उक्त मंत्र का दस हजार जप करें और घृत, खीर, लाल चंदन व किसी स्त्री के केश मिलाकर दशांश हवन करें, तो मंत्र शत्रुनाश अथवा मारण का कार्य करता है।

आकर्षण प्रयोग

(बुधवार)—इस दिन जब चार घड़ी सूर्य रहे, तब सूने घर में जाकर मूलमंत्र का दस हजार जप करें और घृत, शर्करा, सनेली के पुष्प अथवा कनेर के पुष्प तथा बिल्वफल, इन सबको मिलाकर दशांश: हवन करें।

वशीकरण प्रयोग के लिए

(गुरुवार)—गुरुवार को प्रात:काल सूर्योद्‌य के समय किसी नदी के किनारे जाकर मूलमंत्र का दस हजार जप करें तथा घी, आंवला और बिल्वफल को एक साथ मिलाकर दशांश हवन करें। इससे साधक में वशीकरण की शक्ति आ जाती है।

उच्चाटन के लिए

(शुक्रवार)—इस दिन सायंकाल के समय वटवृक्ष के नीचे बैठकर उक्त मंत्र का दस हजार जप करें तथा घृत, दूध, दही, गन्ने का ताजा रस, गोमूत्र और खीर मिलाकर दशांश हवन करें, तो मंत्र उच्चाटन के लिए सिद्ध हो जाता है।

भगवती दुर्गा की साधना

देवी दुर्गा ने विभिन्न अवसरों पर, अनेक रूपों में अवतरित होकर तत्कालीन समस्याओं का निराकरण किया

था। सृष्टि की उत्पत्ति से समाप्ति तक की समस्त प्रक्रिया में जितना नियंत्रण और प्रभाव शिवजी का है, उतना ही शक्ति का भी है। वस्तुतः शिव और शक्ति की सृष्टि के दो मूल आधार हैं। अखिल सृष्टि में जो भी पुरुष रूप है, वो शिव का अंश है और जितना नारी रूप है, वो शक्ति का अंश है। शिव की इसी परमशक्ति को उमा, पार्वती, दुर्गा, चंडिका, काली और लक्ष्मी आदि विभिन्न रूपों में अवतीर्ण होकर संसार का पालन करना पड़ता है।



किसी भी अष्टमी के दिन अथवा शुक्रवार या किसी शुभ मुहूर्त्त में देवी की साधना प्रारंभ की जानी चाहिए। एकांत पवित्र स्थान में, काष्ठ की चौकी पर देवी के चित्र को स्थापित करें। स्नानोपरांत पवित्र होकर और शुद्ध वस्त्र पहनकर, यथा-शक्ति लाल चंदन, पुष्प, धूप, दीप व नेवैद्य अर्पित करें। फिर पीतल के साफ कलश पर दीपक प्रज्ज्वलित करके उसकी भी पूजा-क्रिया करें।

(इस अवधि के लिए किसी पुरोहित की सहायता भी ली जा सकती है) इस पूरी प्रक्रिया में, "ओम् नमश्चंडिकायै", मंत्र का जप करते रहें।

प्रत्येक साधक को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि देवी दुर्गा की साधना में नियम-पालन की कठोरता है। मंत्र-जप, पूजा-अनुष्ठान में शुद्धता बहुत आवश्यक है। मंत्रोच्चारण में तनिक-सी भी त्रुटि नहीं होनी चाहिए। आस्था, पवित्रता, नियम-पालन, सात्त्विक भोजन, संयम और सद्विचार की ओर सजग रहना चाहिए। काम, क्रोध, हिंसा, अपवित्रता, अपराध, दुष्कर्म, पाखंड और षड़यंत्र के वातावरण में से नितांत अछूता रहने पर ही साधना फलवती होती है, अन्यथा सारा परिश्रम व्यर्थ हो जाता है।

विनियोग

ओम् अस्य श्रीदुर्गा नवश्लोकों मंत्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप छंदः, जपे विनियोगः।

पूर्वोक्त रीति से न्यासादि करके देवी का ध्यान करें।

ध्यान-स्तुति

खड्गं चक्र गदेषु चाप परिघां छूलं भुशुंडीं शिरः,
शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम्।
नीलाश्ममद्युतिमास्य पाददशकां सेवे महाकालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजौ हंतुं मधुकैटभम्।।

अब रुद्राक्ष अथवा लाल चंदन की माला से देवी के मूलमंत्र का जप आरंभ करें।

मूलमंत्र

ओम् ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडा विच्चै।
ओम् ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय-

ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे
ज्वल हं सं लं ह्रां फट स्वाहा।

इस मंत्र का प्रतिदिन कम-से-कम एक माला जप करना चाहिए। यदि निश्चित अवधि (अधिकतम २१ दिन) में इसका ग्यारह हजार जप करके हवन आदि कर लिया जाए, तो साधना सफल होती है और साधक को अलौकिक शक्तियों की प्राप्ति सहज ही होने लगती है।

संजीवनी साधना

जीवन को पूरी तरह से समझने के लिए और जीवन की घटनाओं, सुख-दुःख, बाधाएं, परेशानियां और सभी प्रकार के क्रिया-कलापों को जानने के लिए यह साधना सर्वाधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण है। प्रत्येक साधक को यह साधना सिद्ध करनी चाहिए, तभी वो अपने जीवन को तथा अपने पारिवारिक जीवन को भली प्रकार समझ सकेगा। निम्न रूप से इसकी साधना आरंभ करनी चाहिए।

विनियोग

अस्य संजीवना मंत्रस्य मतंग ऋषि
अनुष्टुप छंद, मातंगी देवता सर्व
पूर्व जीवन दर्शय सिद्ध्यर्थे
जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास

ओम् मतंग ऋषये नम: शिरसि।
अनुष्टुप छंदसे नम: मुखे।
मातंगी देवतायै नम: हृदये।
ह्रीं नम: नाभौ विनियोगाय नम: सर्वांगे।

करंन्यास

ऊँ ह्रीं ऐं हृदयअंगुष्ठाभ्यां नमः।
नमो भगवति तर्जनीभ्यां नमः।
उच्छिष्टचांडालि मध्यमाभ्यां नमः।
श्रीमातंगेश्वरी अनामिकाभ्यां नमः।
पूर्व जीवनदर्शय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिंन्यास—

ऊँ ह्रीं ऐं श्री हृदयाय नमः।
नमो भगवति शिरसे स्वाहा।
उच्छिष्टचांडाल शिखायै वौष्ट्।
श्रीमातंगेश्वरी कवचाय हुं।
पूर्व जीवनदर्शय नेत्रत्रयाय वौषट्।
स्वाहा अस्त्रात फट्!

साधक प्रथम दिन स्नान कर शुद्ध और नवीन लाल वस्त्र पहनकर, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर लाल आसन पर बैठ जाए। सामने तेल का दीपक जलाकर रखे। मातंगी देवी के चित्र को स्थापित करे, फिर संजीवनी माला से मंत्र-जप प्रारंभ करें।

मूलमंत्र—

ओम् ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्ट चांडालि
श्री मातंगेश्वरि पूर्वजीवन दर्शय स्वाहा।

पांच लाख मंत्र-जप ३१ दिन में होने अत्यावश्यक हैं। पूरे साधनाकाल में एक समय भोजन करें, भूमि पर शयन करें तथा ब्रह्मचर्य का पालन करें।

मंत्र-जप समाप्त होने पर २१०० गुलाब के पुष्पों से इसी मंत्र के द्वारा आहुति दें और ११ कन्याओं को भोजन कराकर दान, दक्षिणा दें।

संजीवनी साधना जीवनदर्शन की एक ऐसी साधना है, जिससे साधक की एकाग्रशक्ति और आत्म-नियंत्रण की शक्ति का विकास होता है। तथा उसका सीधा प्रभाव कुंडलिनी पर पड़ता है, जिस कारण वो पूर्णता की ओर अग्रसर होता है।

महाविजय सुंदरी साधना

यह मूल रूप-से काली तंत्र की साधना है और इसे होली पर्व पर संपन्न किया जाता है। रात्रि को साधक इस साधना का प्रारंभ करें और पूरी रात्रि इसे संपन्न करके ही उठे। सर्वप्रथम अपने सामने काष्ठ की चौकी पर सफेद कोरा और साफ कपड़ा बिछाएं। सबसे ऊपर "क्लीं", उसके ठीक नीचे "ह्रीं", और उसके नीचे "ऐं", तीनों शक्तियों के बीजमंत्र, चांदी की सलाका से कुंकुम या केसर से लिखें।

अब अपने सामने चावलों की तीन ढेरियां बनाकर उस पर तीन दीपक रखें, जिनका मुंह आपकी ओर रहना चाहिए तथा साधनाकाल में दीपक बराबर जलते रहने चाहिए। तत्पश्चात् तांबे का एक पात्र अपने सामने रखें और उसमें भी कुंकुम या केसर से तीनों बीजमंत्र लिखकर तांत्रोक्त रूप में प्राण-प्रतिष्ठा किए हुए महाविजय सुंदरी महायंत्र को स्थापित करें।

यंत्र का पूजन केसर की बिंदी लगाकर अक्षत और पुष्प समर्पण से करना होता है। इसके पश्चात् साधक शांत अवस्था में बैठकर, यंत्र पर नौ पुष्पों को चढ़ाएं और समर्पित करते समय निम्न मंत्र को जपें।

पहले तीन पुष्प समर्पण मंत्रः "ओम् श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रियै नमः।"

दूसरे तीन पुष्प समर्पण मंत्रः "ओम् हं खं रं यं फां श्रीं भूं में कत्यै नमः।"

तीसरे तीन पुष्प समर्पण मंत्रः "ओम् नित्यायै जं भं मं वं सं वरदायै सरस्वत्यै नमः।"

इस प्रकार नौ पुष्पों के समर्पण के पश्चात् मूंगे की माला से निम्न स्रोत का १०८ बार उच्चारण करें—

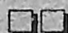
ओम् श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो विष्णुवल्लभायै
महाकामायै कं खं गं घं ङ़ं नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष धनं धांयं श्रियम्
समृद्धि देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।।

हं हं हं हंस हंसी स्मित कहकहामुक्त घोराट्टहासा।
खं खं खं खंगं हस्ते त्रिभुवन निलये कालिकाकालधारी।।

रं रं रं रंगरंगी प्रमुदित वदने पिंगकेशी श्मशाने यं रं।
लं घं तापनीये भ्रकुटि घट घटाटोप कंकार जं पे।।

ओम् श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो जगज्जनंयै
वात्सल्य निधये चं छं जं झं ञं नमोऽस्तु नमोऽस्तु
मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष श्रियं नमः प्रतिष्ठां
वाक्सिद्धि मे देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

मूंगे की माला से रात्रि में इसे १०८ बार जपने मात्र से ही साधना पूर्ण हो जाती है।



१५

तांत्रिक क्रियाएं

तांत्रिक क्रियाएं लाभ के लिए भी की जाती हैं और हानि के लिए भी। किन्तु मुख्यत: यह देखने में आता है कि आजकल के छोटे-मोटे तांत्रिक धन बटोरने के लालच में दूसरों का बुरा करने में कोई संकोच नहीं करते हैं। कोई तांत्रिक किसी का मार्ग अवरुद्ध कर देता है, तो कोई किसी का रोजगार बंद कर देता है। आज के जमाने में पैसे की खातिर किसी की जान लेना भी नामुमकिन बात नहीं रह गई है। मृत्युतुल्य कष्ट पहुंचाना, तो बहुत ही मामूली बात है। जिन लोगों में इस विषय की गहरी सूझबूझ नहीं होती है, वो दु:ख झेलते रहते हैं, कष्ट उठाते रहते हैं। किन्तु उन पर किसी तांत्रिक के द्वारा कुछ कराया गया है, यह समझ पाने में वो सर्वथा असमर्थ होते हैं। जब जीवनधारा को अनायास रूप-से दूसरी धारा की तरफ मोड़ दिया जाए, तो यह अवश्य टोना-टोटका या तांत्रिक प्रयोग का प्रभाव होता है।

यद्यपि तांत्रिक क्रिया का प्रयोग कोई सरल कार्य नहीं है, किन्तु आजकल के लोभी और टुच्चे किस्म के तांत्रिक, जो सौभाग्य से तांत्रिक बन गये हैं, किसी को बचाना तो जानते नहीं हैं, किन्तु उसे तकलीफ दे सकते हैं। हित नहीं कर पाते, किन्तु हानि पहुंचा सकते हैं।

इसके लिए अपने ग्राहकों (अनुयायिओं) से वो मनवांछित धन प्राप्त कर लेते हैं।

तांत्रिक प्रयोग तो कोई टुच्चा तांत्रिक भी कर सकता है, किन्तु उसके परिणाम व्यक्ति को गहराई के साथ भोगने पड़ते हैं और इस प्रकार से देखा जाए, तो उसका पूरा जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है।

तंत्र की कोई छोटी-मोटी विद्या सीखने में बहुत अधिक या जटिल साधना की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु यदि तांत्रिक प्रयोग हो गया और निशाने पर सटीक बैठ गया, तो फिर उसका निपटारा करने के लिए (तांत्रिक प्रभाव को दूर करने के लिए) कठिन साधना, सिद्धि या अनुभवी तांत्रिक की आवश्यकता होती है।

यकायक जीवन में कुछ ऐसी घटनाएं हो जाती हैं, जिनसे यह सहज ही अनुमान कर लिया जा सकता है कि कोई तांत्रिक क्रिया की गई है। यहां हम कुछ ऐसे तथ्य दे रहे हैं, जिनसे यह जाना जा सकता है कि व्यक्ति पर तांत्रिक प्रयोग हुआ है।

यदि आप लगातार दुर्बलता का अनुभव करते जा रहे हैं और आपका मनोबल भी समाप्त होता जा रहा है। जीवन जीने का उत्साह समाप्त प्रायः हो गया है, उन्नति करने की चाह ही मन में न रही है, तो इसे तांत्रिक क्रिया का प्रकोप समझना चाहिए।

यदि आप हर क्षण चिंताग्रस्त रहते हैं या बार-बार आत्महत्या करने की भावना आप में जाग्रत होने लगती है अथवा घर-परिवार छोड़कर कहीं भाग जाने को आपका मन करता है, तो समझना चाहिए कि आप पर किसी ने तांत्रिक प्रयोग करवाया है।

यदि आपके जीवन में अकारण शत्रु बनते जा रहे हों, आप जिसकी भी भलाई करें, वो ही आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करे, तो इसे भी स्वयं पर किया गया तांत्रिक प्रयोग समझना चाहिए।

यह भी तांत्रिक क्रिया का ही कमाल होगा कि यदि प्रयत्न करने के पश्चात् भी आपके कार्य सफल नहीं हो पा रहे हैं, जो कार्य दूसरों के लिए सरलता से हो जाते हैं और सरलता से आप वो कार्य स्वयं के लिए नहीं कर पाते हैं।

यदि आपके साधन कमजोर हो गए हों, प्रयत्न और परिश्रम करने के बावजूद भी श्रीलक्ष्मी का आगमन नहीं हो रहा हो, दुकानादि पर ग्राहक न आने के कारण लक्ष्मी की वृद्धि न हो रही हो अथवा व्यापार में लगातार गिरावट आ रही हो, तो संभव है कि किसी ईर्ष्यालु ने तांत्रिक क्रिया द्वारा आपको हानि पहुंचाने का प्रयास किया हो।

आप लंबे समय से रोगी हों, उचित उपचार कराने पर भी स्वास्थ्य लाभ न हो रहा हो, तो समझ लेना चाहिए कि यह सब किसी तांत्रिक का किया धरा है।

आप चाहे जितना धन कमाएं पर घर में एक पैसा न बचे; धन-संचय न हो और यह पता न चले कि जो धन आता है, वो कहां चला जाता है ? हर समय धन का अभाव बना रहता है, तो समझ लेना चाहिए कि किसी ईर्ष्यालु ने अवश्य ही कुछ कराया है।

यदि भाई-बहन में अकारण शत्रुता बढ़ गई हो और लाख प्रयत्न करने पर भी समझौता न हो रहा हो अथवा एक-दूसरे के प्रति व्यर्थ के मतभेद बढ़ते जा रहे हों, तो यह भी तांत्रिक क्रिया का प्रभाव हो सकता है। किसी योग्य तांत्रिक से इस बात का पता चलाया जा सकता है।

यदि पति-पत्नी में मतभेद हो और पति के लाख समझाने पर भी पत्नी सही रास्ते पर चलने को तैयार न हो, तो कलह उत्पन्न करने वाले तंत्र का प्रयोग किया गया है, यह सोचकर इस बात की तह तक जाने का प्रयास करना चाहिए।

यदि जीवन का बहुत बड़ा भाग व्यतीत करने के पश्चात् भी आपका मकान नहीं बन पा रहा है या आपकी जमीन नहीं बिक रही है, किसी कीमत पर नहीं बिक रही है अथवा मकान अधूरा बन कर छूट गया है, तो संभव है, गृहबंधन तंत्र का प्रयोग किसी के द्वारा करा दिया गया हो।

आपके मकानादि बनवाने से किसी को कोई परेशानी हो रही हो और उसी समय से आप पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ रहा हो, तो इसका कारण भी तांत्रिक क्रिया है। यदि आपने व्यापार की दृष्टि-से जमीन खरीदी हो या बिक्री हेतु मकान बनवाएं हों और उन्हें बेचने में अड़चनें आ रही हों, तो यह भी तांत्रिक क्रिया द्वारा संभव है।

यदि एकाएक आपके भाग्योद्‌य में बाधा उत्पन्न हो गई हो। इसका कारण आपकी समझ में न आ रहा हो, जबकि बाधाएं हरेक क्षण बढ़ती ही जा रही हों, तो संभव है, किसी के द्वारा भाग्यबाधा का प्रयोग किया गया हो।

एकाएक परिवार में कोई रोगी हो गया हो और रोग भी ऐसा जिसके बारे में कुछ पता ही न चल पा रहा हो। कोई उपचार न हो पा रहा हो, तथा औषधियां भी कोई प्रभाव न डाल रही हों, तो इसे निश्चय ही तांत्रिक प्रयोग समझना चाहिए।

यदि राज्य की ओर-से बराबर अड़चनें आती हों,

प्रयत्न करने पर उच्चाधिकारियों से मतभेद बना रहता हो, तो भी "यह तांत्रिक प्रयोग है" इस पर विचार करना चाहिए। स्थानांतरण तथा प्रमोशन के संबंध में भी यह विचार किया जा सकता है।

संतान का न होना, संतान का पैदा होते ही मर जाना या गर्भ गिरना, यह सब भी तांत्रिक क्रिया का कारण हो सकता है।

किसी के अचानक बैठे-बैठे नाक या मुंह से रक्त जाने लगे। अथवा उस पर दौरा-सा पड़ जाए और उसी दशा में मृत्यु हो जाए, तो यह किसी तांत्रिक द्वारा किया गया मारण प्रयोग हो सकता है।

विशेष—तांत्रिक प्रयोग से अनेक कष्ट दिए जा सकते हैं और उन कष्टों का निवारण भी तांत्रिक प्रयोग के द्वारा किया जा सकता है। ईर्ष्या, द्वेष के कारण अथवा शत्रुतावश ही तांत्रिक प्रयोग अधिक किये जाते हैं। अतः शत्रु के हाथ से कुछ भी खाना या पीना नहीं चाहिए। यदि कोई पड़ौसी या रिश्तेदार आपसे जलता हो तो उसके यहां का भी कुछ न खाना-पीना चाहिए। संभव है, उन वस्तुओं में ही हानि पहुंचाने वाली किसी तांत्रिक सामग्री का समावेश हो। बे-वजह किसी तांत्रिक, मौलवी-मुल्ला या योगी, अघोरी के यहां नहीं जाना चाहिए और न ही उनसे दोस्ती या दुश्मनी करनी चाहिए। किसी बात का समाधान करना हो, तो किसी योग्य अथवा हितैषी तांत्रिक के पास जाना चाहिए। जो तांत्रिक रकम ऐंठने वाले हों, उनसे तो सदा बचकर रहना चाहिए।

लाभहेतु की जाने वाली तांत्रिक क्रियाएं

१. यदि आपका व्यापारिक कार्य उचित रूप से न

चल रहा हो और उसमें बाधाएं आ रही हों या आपके व्यापारिक कार्य को किसी ने बांध दिया हो, जिस कारण आर्थिक संकट सामने आ गया हो, तो लाभ हेतु निम्न प्रयोग करें—

एक हाथ लंबा सूती कपड़ा (जो लाल रंग का हो) अपने सामने बिछाएं। उस पार काले तिल की ढेरी बना दें। उस पर एक दीपक टिकाएं और उसमें तिल का तेल भरें। तत्पश्चात् दीपक के सामने सात लौंग (जिनका फूल झड़ा हुआ न हो), सात छोटी इलायची तथा सात लाल मिर्च रख दें। अब दीपक को जलाकर उसमें एक सियारसिंगी डाल दें, जो कि तेल में पूरी तरह से डूबी हुई रहे। इसके बाद साधक दीपक के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना करे, "यदि किसी ने मेरा व्यापार बांध दिया हो, या व्यापार में कोई बाधा आ रही हो, तो वो दूर हो जाए तथा व्यापारिक कार्य दिन दूना रात चौगुना फैलने लगे।" इस प्रार्थना के पश्चात् साधक वहीं पर बैठे-बैठे निम्न मंत्र का जप करे—

ओम् हनुमंत वीर, रखो हद धीर,
करो यह काम, वैपार बढ़े, तंतर
दूर हो, टूणा टूट, ग्रहक बढ़े,
कारज सिद्ध होय, न होय
तो अंजनी की दुहाई।

एक घंटे का मंत्रजप हो जाए, तब दीपक बुझा दें और दीपक, सियारसिंगी तथा अन्य सभी वस्तुओं के साथ लाल कपड़े की पोटली बांध दें। फिर उस पोटली को सड़क के चौराहे पर जाकर रख आएं। पोटली रखने के बाद पलट कर न देखें। कोई परिचित भी पुकारे, तो भी

घूम कर न देखें। घर लौटकर साफ पानी से हाथ-पैर और मुंह धोएं। इस क्रिया से व्यापारिक कार्य से संबंधित सभी दोष और सभी बाधाएं दूर हो जाती हैं। किन्तु सियारसिंगी असली होनी चाहिए। यह नर सियार अथवा श्रृंगाल के मस्तक पर प्रौढ़ावस्था में एक गांठ के रूप में उभर आती है, जिसमें गेहूं के दाने जैसी नोंक भी निकली रहती है। इसी को सियारसिंगी कहते हैं।

गांठ उभरने पर सियार पीड़ा से व्याकुल होकर अस्वाभाविक रूप-से चिल्लाने लगता है। शिकारी लोग इसकी खोज में रहते हैं। चिल्ला रहे सियार को यह मार डालते हैं और उसके माथे से उस गांठ को काट लेते हैं। मृगनाभि की आकृति से मिलती-जुलती सियारसिंगी की गांठ तंत्रशास्त्र में अद्‌भुत शक्ति रखती है। इसमें सुरक्षा, सम्मोहन, वशीकरण और संपत्तिवर्द्धन की शक्ति समाहित रहती है।

२. उच्छिष्ट गणपति की आराधना के लिए तिथि या वार का कोई नियम नहीं है। साधक जिस कामना से इस देवता की आराधना करता है, वो कामना अवश्य ही पूर्ण होती है। साधक निम्न मंत्र में से किसी भी एक मंत्र की साधना कर सकता है। मंत्र का पुरश्चरण सवा लाख जप का होता है। कृष्णपक्ष की चतुर्थी से लेकर शुक्लपक्ष की चतुर्थी तक का समय साधना के लिए विशेष रूप-से उत्तम होता है।

(१)

ओम् हस्ति पिशाचिनी खे ठः ठः।

(२)

गं हस्ति पिशाचिनि खे स्वाहा।

ओम् हस्ति पिशाचिनी खे स्वाहा।

सफेद आक या लाल चंदन की अंगुष्ठ प्रमाण मूर्ति बनवाकर (या बनाकर) उसकी प्राण-प्रतिष्ठा कर, देवता को नित्य मधु से स्नान कराकर गुड़ पायस का नेवैद्य प्रदान करें। भोजन के पश्चात् जूठे मुख जपने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। तंत्र-ग्रंथों में उच्छिष्ट गणपति के विशेष प्रयोगों का वर्णन निम्न है—

१. मूलमंत्र से अपामार्ग की समिधाओं को एक सौ आठ बार अभिमंत्रित करके हवन करने से साधक को सौभाग्य की प्राप्ति होती है।
२. जिस लड़की या लड़के का विवाह न होता हो, वो यदि मंत्र का पांच हजार जप कर ले, तो पति या पत्नी की प्राप्ति होती है।
३. किसी भी एक मंत्र को भोजपत्र पर लाल चंदन से लिखकर, किसी ताबीज में बंद करके गले में डाल दिया जाए, तो सौभाग्य की वृद्धि एवं सर्वत्र रक्षा होती है।

महामृत्युंजय साधना

शारीरिक रोग, दुर्घटना, मानसिक चिंता, मृत्युतुल्य कष्ट, मृत्यु की आशंका आदि का निराकरण एवं पूर्णायु प्राप्त करने का अद्वितीय साधन है, महामृत्युंजय साधना। यह मृत्यु तक को जीतने की सामर्थ्य रखती है। महामृत्युंजय मंत्र और यंत्र की साधना करने वाले को आरोग्य, स्वास्थ्य एवं दीर्घजीवन की प्राप्ति होती है।

यदि किसी शत्रु ने मारण प्रयोग कराया हो और मृत्यु निकट जान पड़ती हो, तो यह साधना काल पर भी विजय

प्राप्त करने में सक्षम है। अकालमृत्यु का भय भी इससे दूर हो जाता है। आज इस बात को सभी ने मुक्तकंठ से माना है कि संसार में मनुष्य के लिए बड़े से बड़ा सुख-सौभाग्य उसका रोगरहित शरीर है, क्योंकि रोगी शरीर न खाने-पीने का सुख पाता है, न ओढ़ने-पहनने का; रोगशैय्या पर पड़ा, तन-मन की व्यथा से वो जर्जर होता रहता है। ऐसी स्थिति में उसके पास चाहे जितनी संपदा हो, व्यर्थ ही प्रतीत होती है।

अतः श्रीसंपदा का सुखोपभोग करने के लिए स्वस्थ व नीरोग शरीर का होना आवश्यक है। जटिलतम रोगों के आक्रमण से जब प्राण-संकट उत्पन्न हो जाता है, तब उससे त्राण पाने के लिए आस्थावान ज्ञानीजन महामृत्युंजय साधना की शरण लेते हैं। इससे संबंधित अनुष्ठान की विधि को समझना साधकों के लिए बहुत आवश्यक है।

अनुष्ठान एक ऐसी साधना-प्रक्रिया है, जो कठिन कार्यों को सहज बनाने के साथ-साथ शक्ति का उपार्जन भी करती है। मुख्यतः अनुष्ठान तीन प्रकार के होते हैं--

१. लघु अनुष्ठान— यह २४ हजार मंत्र का होता है। तत्पश्चात् २४० आहुतियों का पुरश्चरण किया जाता है।
२. मध्यम अनुष्ठान— यह १, २५००० मंत्रजप का होता है। तत्पश्चात् १२५० आहुतियों का पुरश्चरण का विधान है।
३. महाअनुष्ठान-- २४ लाख मंत्र का होता है। तत्पश्चात् २४००० आहुतियों का पुरश्चरण होता है।

लघु अनुष्ठान को ९ दिन में २७ माला प्रतिदिन, मध्यम

अनुष्ठान ४० दिन में ३३ माला प्रतिदिन और महाअनुष्ठान ६६ माला प्रतिदिन के हिसाब से जप संपन्न किया जाता है। जप के लिए रुद्राक्ष की माला श्रेष्ठ मानी गई है। साधनाकाल में निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए—

१. अनुष्ठान का प्रारंभ करते समय अपने सामने भगवान शिव का चित्र स्थापित करना चाहिए और साथ ही शक्ति की भावना भी रखनी चाहिए। साथ ही अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहूर्त्त में देखकर करना चाहिए। तीसरी बात यह कि जहां, जिस स्थान पर जप प्रारंभ करना हो, वहां का वातावरण पूर्णतया सात्त्विक होना चाहिए, साधक को पूर्वाभिमुख होकर जप-क्रिया करनी चाहिए।
२. अनुष्ठान को करने से पूर्व मूलमंत्र को संस्कारित करके ही पुरश्चरण करना चाहिए।
३. साधनाकाल में शुद्ध गाय के घी का दीपक जलता रहना चाहिए। किसी भी स्थिति में वो बुझना नहीं चाहिए, तथा साधक को ऊनी आसन का प्रयोग करना चाहिए।
४. नित्य निश्चित संख्या में मंत्र-जप करना चाहिए। संख्या में कमी या बढ़ोतरी नहीं होनी चाहिए।
५. पूरे साधनाकाल में चेहरे या सिर के बाल नहीं कटाने चाहिए। भोजन केवल एक समय करना चाहिए और इस कालावधि में पूर्णतया ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।
६. भय से छुटकारा पाने के लिए, मंत्र जप ११०० की संख्या में करना चाहिए।

रोगों से छुटकारा पाने के लिए, मंत्र का जप

११००० संख्या में करना चाहिए।

पुत्र-प्राप्ति, उन्नति एवं अकालमृत्यु से छुटकारा पाने के लिए—१ लाख मंत्र का जाप करना चाहिए। अपनी ओर-से संख्या में कोई हेरफेर नहीं करना चाहिए।

साधक को शुभ मुहूर्त में प्रातःकाल उठकर शिव की पूजादि के पश्चात् संकल्प करना चाहिए।

संकल्प

ओम् मम आत्मनः श्रुति स्मुतिपुराणोक्त। फलप्राप्तयर्थे। अमुक यजमानस्य वा शरीरे अमुकपीड़ा सद्यः आरोग्यप्राप्तयर्थे श्रीमहामृत्युंजय देवता प्रीयते अमुकसंख्या परिमितं श्रीमहामृत्युंजयमंत्रजपमहं करष्ये।

विनियोग

ओम् अस्य श्रीमहामृत्युंजयमंत्रस्य वामदेव-कहोलवशिष्ठ ऋषिः, पंक्तिगायत्रयुष्णिनुष्टुप छंदांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युंजय प्रीतये ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

उच्चारण से पूर्व हाथ में जल लें और उच्चारण के पश्चात् हाथ से जल छोड़ दें।

ऋष्यादिंयास

वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः मूर्ध्नि। पंक्तिगायत्रयुनुप्छंदेभ्यो नमः मुखेः, सदाशिव महामृत्युंजयरुद्रदेवतायै नमः हृदि, ह्रीं शक्त्यै नमः लिंगे, श्रीं बीजाय नमः पादयोः।

करंयास

ओम् ह्रीं ओम् जूं सः भूर्भुव स्वः त्रयंबकं ओम् नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा -अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ओम् ह्रीं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगंधियुष्टिवर्धनम ओम् नमो भगवते रुद्राय चंद्रशिरसे जटिने स्वाहा -मध्यमाभ्यां नमः।

ओम् ह्रीं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबंधयात् ओम् नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाह ह्रीं हौं ह्रौं -अनामिकाभ्यां नमः।

ओम् ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ओम् नमो भगवते रुद्राय विलोचनाय ऋग्यजुस्साममंत्राय -कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ओम् ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृताम् ओम् नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय -करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयदिंयास

ओम् ह्रीं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्रयंबकं ओम् नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा -हृदयाय नमः।

ओम् ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगंधिपुष्टिवर्धनम् ओम् नमो भगवते रुद्राय चंद्रशिरसे जटिने स्वाहा -शिखाये वषट्।

ओम् ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बंधनात्

ओम् नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय ह्रीं ह्रीं
-कवचाय हुं।
ओम् ह्रीं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय
ओम् नमो भगवते रुद्राय
त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साममंत्राय
-नेत्रत्रयाय वौषट्।
ओम् ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात्
ओम् नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय
ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय
-अस्त्राय फट्।

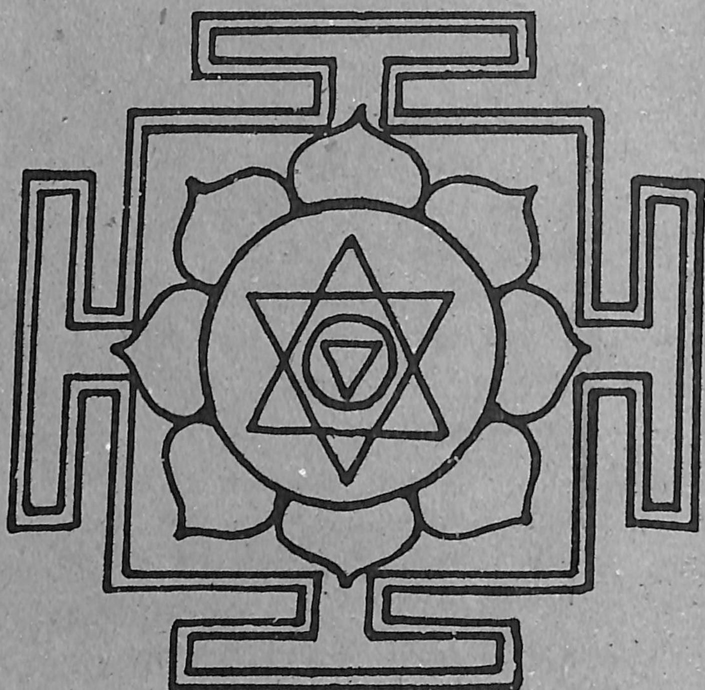
ध्यान—

हस्तांभोजयुगस्थकुंभयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः;
सिंचन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुंभौ करौ।
अक्षस्रगमृगहस्तमंबुजगतं मूर्द्धस्थचंद्रस्रवत्
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं यक्षं च मृत्युंजयम्।।

ध्यान के बाद महामृत्युंजय का जप करना चाहिए।

ओम् ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं यजामहे
सुगंधिपुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनामृत्यो-
र्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ओम् सः जूः ह्रौं ओम्।

साधकों को अब महामृत्युंजय यंत्र के बारे में भी जान लेना चाहिए। यंत्र के देवता भगवान शिव हैं, जो संसार की समस्त औषधियों के स्वामी, मृत्यु के नियंत्रक और आरोग्य तथा स्वास्थ्य के प्रदाता हैं। अपनी इसी महान क्षमता के कारण ये देवाधिदेव, महादेव कहे जाते हैं। अतः किसी भी शारीरिक क्लेश, रोग और भय से मुक्ति के लिए भगवान शिव के साकार रूप इस मृत्युंजय यंत्र की साधना की जाती है।



शिवरात्रि के दिन अथवा किसी भी शुभ सोमवार को (यदि उस दिन शुभ मुहूर्त्त हो) चांदी, तांबे अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से यंत्र की रचना करें अथवा बना-बनाया बाजार से खरीदें। आवश्यकता होती है, प्राण-प्रतिष्ठा की, जो पूर्वोक्त ढंग-से की जा सकती है। इसके लिए किसी प्रकांड पुरोहित की सेवा भी ली जा सकती है।

अब यंत्र को श्वेत चंदन से स्नान कराकर उसे श्वेत आसन पर प्रतिष्ठित करें। तद्नंतर निम्न स्तुति द्वारा भगवान शिव का ध्यान करते हुए यंत्र को प्रणाम करें—

चंद्रार्काग्नि विलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वायांता स्थितम्,

मुद्रा पाश मृणाल सूत्र विलसत्पाणिं हिमांशु प्रभम्।
कोटींदु प्रगलत् सुधाप्लुत तनुं हारादिभूषोज्ज्वलम्;
कांतं विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युंजयं भावये।।

प्रणामोपरांत चंदन, बेलपत्र, मदारपुष्प, धतूरपुष्प-फल, गुग्गुल और दीप आदि से यंत्र की पूजा करके "मृत्युंजय मंत्र" का जप प्रारंभ करें। जप संख्या सवा लाख है। जप-समाप्ति पर हवन-दान करना आवश्यक है। सामान्य रूप-से यदि दैनिक-पूजा में भी इस मंत्र का पांच माला जप किया जाए, तो बहुत लाभ होता है। पूर्ण आस्था, संयम और शुद्धता के साथ की गई साधना कभी व्यर्थ नहीं होती, यह एक अनुभूत और अकाट्य सत्य है।

ओम् ह्रौं जूं सः अमुकस्य जीवय जीवय
पालय पालय सः जूं ह्रौं ओम्।

अमुकस्य के स्थान पर उसका नाम लें, जिसके लिए कार्य किया जा रहा हो। यंत्र की साधना के समय साधक को परम सात्त्विक जीवन व्यतीत करना चाहिए। काम-क्रोधादि से मुक्त परमशुचिता के साथ फलाहार अथवा अल्पाहार पर निर्वाह करते हुए, निरंतर शिव के चिंतन में लीन रहना चाहिए। जप-क्रिया पूर्ण होने के पश्चात् यंत्र को निम्न रूप-से नमस्कार करें—

अघोरेभ्यो अथ अघोरभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वतः सर्व सर्वेभ्यो नमोस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।
मृत्युंजय त्र्यंबक सदाशिव नमस्ते नमस्ते।।

आकर्षण, सम्मोहन व वशीकरण के तांत्रिक प्रयोग

ओम् नमो आदि पुरुषाय अमुकस्य
आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।

शुभ दिन और शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुंह करके सूर्योदय के समय मूंगे की माला से जाप प्रारंभ करें। १२५०० जाप (जप) होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर जिसको भी अपनी ओर आकर्षित करना हो, अमुकस्य के स्थान पर उसका नाम बोलें तथा नाम के अंत में "स्य" लगाएं, जैसे "हेमंतस्य"। अनामिका उंगली के रक्त से भोजपत्र पर सफेद कनेर की कलम से उक्त मंत्र को व्यक्ति के नाम सहित लिखकर मधु में छोड़ देना चाहिए। इससे वो व्यक्ति साधक के पास आने को आतुर हो उठेगा और अवश्य आएगा।

रविवार पुष्य नक्षत्र के दिन ब्रह्मदंडी लाकर उसका चूर्ण करें। उस चूर्ण को पूर्वोक्त मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर जिस स्त्री के मस्तक पर डाला जाएगा, वो स्त्री कामपीड़ा से अधीर होकर उद्योग करने वाले पुरुष के पास चली आएगी।

ओम् उड्डामरेश्वराय सर्वं जगंमोहनाय अं आं इं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं फट् स्वाहा।

इस मंत्र को भी पूर्वोक्त ढंग-से सिद्ध करें और फिर जब भी किसी तंत्र का प्रयोग करना हो, तो पहले उस पर मंत्र की एक माला फेरकर फिर प्रयोग में लाएं। श्वेत गुंजा के पत्ते के रस में ब्रह्मदंडी की जड़ घिसकर और मंत्र से अभिमंत्रित कर, अपने शरीर पर लेप करें। फिर जिसके पास जाएंगे, वो ही सम्मोहित हो जाएगा।

मनुष्य की खोपड़ी में धतूरा, शहद व कपूर मिलाकर

उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करें, तो सब मोहित हों।

खंज पक्षी की बीट और मरा हुआ जुगनू, इन दोनों को पीसकर टिकिया बनाएं, फिर उसे जमीन पर रखकर आग में जलाएं। जल जाने पर उसकी भस्म को पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर माथे पर तिलक लगाएं और जिसके पास भी जाएं, वो ही मोहित हो जाएगा।

रविवार के दिन पान का एक बीड़ा लाकर धोबी के कपड़े धोने की शिला पर जाएं। वहां पूरी तरह से नग्न होकर उस बीड़े को खोलें और फिर लपेटकर बंद कर लें और वस्त्र पहनकर लौट आएं। किसी भी प्रकार की आवाज़ आने पर पीछे मुड़कर न देखें। पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर वह बीड़ा जिस स्त्री को खिलाया जाएगा, वो लंबे समय तक के लिए मोहित रहेगी।

ओम् नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहय मोहय मिली मिली ठः ठः स्वाहा।

शुभ दिन, शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुंह करके सूर्योदय के समय मूंगे की माला से ३० हजार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। अब जिस वस्तु का प्रयोग करना हो, तो पहले उसे सात बार मंत्र से अभिमंत्रित करें, तब प्रयोग में लाएं। ब्रह्मदंडी, बच व इपलेट के चूर्ण को इस मंत्र से अभिमंत्रित कर, पान में डालकर रविवार के दिन जिस व्यक्ति को खिलाएं, वो ही वश में हो जाएगा।

रविवार के दिन मनुष्य की खोपड़ी लाकर, उसमें चावल भरें और अग्नि पर पका लें और पक जाने पर सुखाकर रख लें। एक रत्ती चावल उपरोक्त मंत्र से पढ़कर जिसे भी खिलाएंगे, वो सदा के लिए वशीभूत हो जाएगा।

तगर, कूट और तालीशपत्र को पीसकर रेशमी कपड़े में लपेटकर बत्ती बनाएं। फिर उस बत्ती को सरसों के तेल के दीपक में डालकर जलाएं और मनुष्य की खोपड़ी के ऊपर काजल पारें। यह क्रिया तब करनी चाहिए, जब रविवार के दिन शुभ नक्षत्र और अमावस्या तिथि हो। आधी रात में श्मशान में यह क्रिया की जानी चाहिए। आवश्यकता के समय उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर काजल को आंखों में लगाने के बाद जिसे भी देखा जाएगा, वो वशीभूत हो जाएगा।

मेंढ़ासिंगी, बच, राल, खस, लाल चंदन और छोटी इलायची, सबको समभाग लेकर और कूट-पीसकर छान लें और उक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर, पहनने का कोई वस्त्र रखकर धूनी दें, तो स्त्री वश में होती है, अधिकारी देखते ही प्रसन्न होता है तथा क्रय-विक्रय में आशातीत लाभ होता है।

ओम् नमो महायक्षिण्ये मम-
पतिं में वश्य कुरु कुरु स्वाहा।

शुभ दिन और शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुंह करके सूर्योद्य के समय मूंगे की माला से १०,००० की संख्या

में जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। जिस वस्तु को प्रयोग करना हो, उसे पहले इस मंत्र से सात बार अभिमंत्रित अवश्य कर लेना चाहिए। यह तांत्रिक क्रिया केवल स्त्रियों के प्रयोग करने के लिए है। गोरोचन, योनि का प्रथम दिन का प्रथम रक्त और केले का रस एक साथ घिसकर, उसका तिलक करके जो स्त्री अपने पति से मिलेगी, वो सदा के लिए उसका दास हो जाएगा।

मालती के पुष्पों को सरसों के तेल में पकाकर, पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर, अपने गुप्तांग में लगाकर जो स्त्री अपने पति के साथ मैथुन करती है, वो पति को वशीभूत कर लेती है। पति किसी दूसरी स्त्री की बात सोच तक न पाता है।

स्त्री जब रजःस्वला हो, उस समय वो अपने गुप्तांग में चार लौंग रखकर भिगोए। फिर उन लौंगों को पीसकर, पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर, पति या अन्य जिस पुरुष के मस्तक पर डालेगी, वो उसके वश में हो जाएगा।

ओम् ऐं पूरं क्षोभय भगवती गंभीरा ब्लं स्वाहा।

पुष्यनक्षत्र में पुनर्नवा तथा रुद्रवंती की जड़ उखाड़कर लाएं। उन दोनों जड़ों के साथ थोड़े से जौ मिलाकर मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करें। फिर उन्हें किसी पीले कपड़े में लपेटकर और धूप-दीप देकर पुरुष अपनी दायीं भुजा में बांध लें। इसके बाद सूर्योदय के समय मूंगे की माला से मंत्र का २० हजार जाप करके मंत्र सिद्ध कर लें। अब

जिस वस्तु का भी प्रयोग करना हो, उसे मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करें। लाजवंती, मुलैठी और कमलगट्टे को पीसकर अपने वीर्य के साथ मिलाकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करके तिलक करें, तो जो भी स्त्री देखेगी वो वशीभूत हो जाएगी तथा किसी दूसरे पुरुष की कल्पना तक भी न करेगी।

रति के अंत में पुरुष अपने बाएं हाथ में अपना वीर्य लेकर, पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर, स्त्री के दाएं पैर के तलुवे में लगा दे, तो वो स्त्री कभी किसी दूसरे पुरुष की चाहना नहीं करेगी।

तांत्रिक प्रयोगात्मक क्रियाएं

आधा शीशी का दर्द निवारक तंत्र—जिस स्त्री या पुरुष को आधा शीशी (आधे सिर का) के दर्द का रोग हो, वो प्रातःकाल दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके, अपने हाथ में गुड़ की एक डली लेकर, उसे दांतों से काटकर, चौराहे पर फेंक दे, तो आधा शीशी का रोग दूर हो जाता है।

ज्वरनाशक तंत्र—सफेद अपामार्ग की जड़ रविवार को लाकर, लाल कपड़े में लपेटकर, उसी दिन तिजारी ज्वर तथा चौथिया ज्वर वाले रोगी के बाएं बाजू में बांध दें। फिर कभी ज्वर नहीं चढ़ने पाएगा।

मकोय की जड़ को कान से बांधने से रात्रि में आने वाला ज्वर शीघ्र दूर हो जाता है।

रविवार अथवा मंगलवार के दिन लहसुन की सात गांठ पीसकर, काले कपड़े में रखकर रोगी के बाएं पैर के अंगूठे से बांध दें। तीन घंटे बाद उसे अंगूठे से खोलकर,

किसी भी चौराहे पर फेंक देने से शीत ज्वर की पारी रुक जाती है।

संग्रहणी दूर करने का तंत्र—गेहुंजन सर्प की केंचुली को कपड़े की थैली में सीकर पेड़ के ऊपर बांधने से संग्रहणी का रोग समाप्त हो जाता है।

सुखप्रसव तंत्र—हुलहुल की जड़ को गर्भिणी स्त्री के हाथ में बांध देने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।

प्रसवकाल में कलिहारी की जड़ को रेशम के धागे में लपेटकर गर्भिणी स्त्री के बाएं हाथ में बांध देने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।

ऊंटकटाला की जड़ को गर्भिणी की चोटी में रख देने मात्र से बिना कष्ट के तुरंत प्रसव हो जाता है। नीम की जड़ को कमर से बांध देने से भी शीघ्र प्रसव हो जाता है।

नोट—प्रसव के पश्चात् जड़ को शरीर से हटाकर तुरंत दूर फेंक देनी चाहिए।

अतिसारनाशक तंत्र—सहदेई की जड़ के सात टुकड़े करके, लाल डोरे में लपेटकर कमर में बांधने से अतिसार का रोग दूर हो जाता है।

खांसी निवारण तंत्र—रविवार के अलावा किसी भी दिन कौऐ की बीट को कपड़े की एक थैली में बांधकर बच्चे के गले में लटका देने से खांसी दूर हो जाती है।

मासिकधर्म-संबंधी तंत्र—किसी भी रविवार के दिन कौऐ की चोंच लाएं और धूप देकर उसे योनि में रखें। शीघ्र रक्त आरंभ हो जाएगा। फिर योनि से निकालकर और धोकर चोंच को मुंह में रख लें। इस क्रिया से रक्त बंद हो जाएगा।

स्वप्नदोष निवारण तंत्र—जिसे स्वप्नदोष का रोग हो जाए, वो एक कोरे कागज के टुकड़े पर अपनी माता का नाम लिखकर, उस कागज को अपने सिर के नीचे रखकर सो जाए, तो फिर उसे स्वप्नदोष नहीं होगा।

स्तंभन पर तंत्र—किसी भी सोमवार की संध्या में स्नानादि करके, साफ वस्त्र पहनकर अपामार्ग (सफेद ओंगा) की जड़ के पास जाकर उसे नमस्कार करें और कहें कि मैं कल तुम्हें लेने आऊंगा। इस प्रकार मंगलवार को प्रातःकाल जाकर उस जड़ को उखाड़ लाएं। उस जड़ को कमर में बांधकर संभोग करने से स्तंभन अधिक समय तक होता है।

ऊंट के बालों की रस्सी बनाकर अपनी जांघ में बांधकर संभोग करने से, जब तक रस्सी को खोला नहीं जाएगा, तब तक स्खलन नहीं होगा।

शत्रु भय निवारण तंत्र—काले घोड़े व काले बकरे के पांव के बाल और रविवार या मंगलवार को काले मुर्गे व कौऐ के चार पंख लें। सबको जलाकर राख कर लें और उस राख को किसी शीशी में भर लें। प्रयोग के समय पानी मिलाकर मस्तक पर तिलक करें। गिनती में चाहे जितने भी शत्रु होंगे, मारे भय के सामने न आएंगे।

भय निवारण तंत्र—रविवार के दिन काले धतूरे की जड़ बांह में बांध दें, तो भूत-प्रेतादि की बाधा दूर हो जाएगी।

रोगी की नाक में, हींग को लहसुन के रस में रखकर या मस्तक पर धारण कर न्यायालय में जाएं, तो विजय की प्राप्ति होगी।

अठारा रोग निवारण तंत्र—यह रोग ज़िन स्त्रियों

को होता है, उसके गर्भस्थ शिशु या तो गर्भ में ही ऐंठ कर मर जाते हैं या फिर पैदा होते ही मर जाते हैं। इसके निवारण हेतु बेरी, आक, बबूल, नीम, पीपल और अरंड के पत्ते, सात कुओं का जल, सात चौराहे की मिट्टी लेकर किसी भी रविवार को एक कोरे बर्तन में डालकर, किसी बेरी के पेड़ के नीचे जाकर स्नान करें। अधिक अच्छा रहे कि यह प्रयोग शुक्लपक्ष के रविवार को किया जाए। इससे अठारा रोग दूर हो जाता है और दीर्घायु बच्चे पैदा होते हैं।

किसी कुआरी कन्या के हाथ का कता हुआ सूत लेकर एक हाथ लंबा धागा बना लें तथा रविवार के दिन अठारा रोगी स्त्री की दाहिनी पिंडली में बांध दें, तो भी यह रोग दूर हो जाता है।

विद्वेषण पर तंत्र

बारह सरसों तेरह राई,
यार की मारी मसाण की छाई,
पढ़ कर मारूं कर दलवार,
अमुका कुढ़े न देखे अमुक का द्वार,
मेरी भक्ति गुरू की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा
सत्यनाम आदेश गुरू का।

विद्वेषण का अर्थ है, दो व्यक्तियों के बीच अलगाव या बैर भाव उत्पन्न होना। यदि आप किन्हीं दो मित्रों के बीच बैर उत्पन्न करना चाहते हैं, तो पूर्वोक्त ढंग से पहले इस मंत्र को सिद्ध कर लें। जब प्रयोग करना हो, तो राई, सरसों और चिता की राख लेकर १०८ बार अभिमंत्रित करें। अब इस राख को उस मकान के द्वार पर डाल आएं,

जहां दो मित्र रहते हों। मंत्र में जिस स्थान पर अमुका और अमुक दिया गया है, वहां उन दोनों का नाम लें, जिनमें बैर उत्पन्न करना है।

अग्निस्तंभन तंत्र

ओम् ख्रीं नमो अग्निरूपाय मम
शरीरस्तंभनम् कुरु कुरु स्वाहा।

किसी पर्वकाल में इस मंत्र को दस हजार बार जप कर पुरश्चरण से सिद्ध कर लें, फिर यह प्रयोग करें। घी, शक्कर मिलाकर पी लिया जाए तथा बाद में मुख में तगर रखकर चबाकर यदि कोई दहकता अंगारा मुख में रख लें, तो मुख नहीं जलेगा।

मारण तंत्र क्रिया

काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाल भैरव, मेरे हुक्म हाजिर रहे, मेरा भेजा रक्षा करे, आन बांधूं, बान बांधूं, चलते फिरते के औसान बांधूं, दशासुर बांधूं, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बांधूं, फूल में भेजूं फूल में जाय, कोठे जो पड़े थरथर कांपे, हल हल हलै, गिर गिर पड़ै, उठ उठ भगै, बक बक करै, मेरा भेजा सवा घड़ी सवा पहर, सवा दिन, सवा मास, सवा वर्ष को बावला न करै तो धोबी की नांद, चमार के कुंडे में पड़े, रुद्र के नेत्र से आग की ज्वाला कढ़ै, शिव के सिर की जटा टूट के भूमि पै परे, माता पार्वती के चीर पै चोट पड़े, बिना हुक्म नहीं मारना हो कंकाल भैरव, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

मारण का अर्थ है, किसी को मार देना, खत्म कर देना। यह अभिचार कृत्य है। डामर तंत्रों में इसे "मूठ

चलाना" या "चौकी बिठाना" भी कहा गया है। किसी कालरात्रि में तीन कोनों वाला चौका लगाकर उपर्युक्त मंत्र का अनुष्ठान प्रारंभ करना चाहिए। लाल आसन बिछाकर साधक को दक्षिणाभिमुख बैठना चाहिए। पूजा-सामग्री में कनेर के फूल, सिंदूर, बेसन के लड्डू और लौंग का जोड़ा होना चाहिए।

तत्पश्चात् चार बत्तियों वाला चौमुखा दीपक लेकर, उसमें तिल का तेल भरें और जलाएं। फूलों का ग़ज़रा पास में रखें। अब साधक को अविचल भाव से मंत्र का जप करना चाहिए। जप करते समय साधक को भयंकर दर्शन हो सकते हैं, अतः मन को दृढ़ बनाकर, जप करते रहना चाहिए। उसमें कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए। साधक को भयभीत भी नहीं होना चाहिए।

जप की समाप्ति पर दशांश हवन तिल, चीनी और शुद्ध घी से करना चाहिए। हवन करते समय बीच में या हवन की समाप्ति पर यदि साक्षात् भैरव के दर्शन हों जाएं, तो भयभीत नहीं होना चाहिए, क्योंकि कालभैरव का रूप बहुत ही भयंकर होता है। कमजोर दिल वालों की इहलीला भी समाप्त हो सकती है, इसलिए यदि इस भयंकरता को झेलने की शक्ति हो, तभी यह क्रिया करने का प्रयास करें, अन्यथा नहीं !

जब भैरव साक्षात् दर्शन दें, तो ग़ज़रा उनके गले में डाल दें। इससे भैरव प्रसन्न होकर उससे वर मांगने के लिए कहेंगे, तब उनसे बड़े विनीत भाव से मारण प्रयोग की शक्ति मांग लें। इस प्रकार इस सिद्धि की प्राप्ति हो जाती है। अब यदि कोई शत्रु आप पर या आपके किसी अनुयायी पर मूठ या कृत्या भेजेगा, तो आप उसे वापस

भेज सकते हैं और कालभैरव की यह शक्ति मूठ या कृत्या भेजने वाले से ही अपनी बलि मांग लेगी। बलि न देने पर मृत्यु अवश्यसंभावी है।

विशेष—कोई भी अभिचार कर्म व्यर्थ ही किसी पर नहीं कर देखना चाहिए, बल्कि किसी के कहने पर भी नहीं करना चाहिए: इस कृत्य को करने वाला साधक पाप का भागी होता है। क्योंकि बुरे कार्य का बुरा ही फल मिलता है। बुद्धिमान और आत्मकल्याणी साधक अपने प्राण संकट में देखकर भी कभी किसी पर मारण क्रिया नहीं करता है। जबकि मूर्ख द्वारा किया गया प्रयोग स्वयं उसी के लिए मृत्युदाता बन जाता है। अतः किसी योग्य गुरु से दीक्षा लेकर, उसके सानिध्य में ही ऐसे प्रयोग करने चाहिए। साथ ही यह क्रिया आत्मरक्षार्थ ही सिद्ध करनी चाहिए, किसी को मारने के लिए कभी सिद्ध नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उलटा पड़ जाने पर स्वयं जान का खतरा हो जाता है। दूसरी विशेष बात यह है। कि इसक प्रयोग करने वाला साधक, इसके परिणामों की स्वयं जिम्मेदार होगा। लेखक या प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं होंगे, क्योंकि सिद्धि का यह साधन केवल रक्षा करने के लिए बताया गया है न कि किसी की जान लेने के लिए।



१६

चमत्कारी टोने-टोटके

आज के आधुनिक युग में भी जितने लोग टोने-टोटकों पर अविश्वास करते हैं, उससे कहीं अधिक उन पर विश्वास करते हैं। टोना-टोटका विज्ञान अपने आप में जितना परिपूर्ण है, उससे कहीं अधिक प्रभावशाली भी है। अनेक विद्वानों का मत है कि टोने-टोटकों द्वारा आपकी अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति हो सकती है। मानव-जीवन के विविध कष्टों के निवारण के लिए टोने-टोटके अद्वितीय हैं। व्यक्ति कभी-कभी ऐसी व्याधियों से ग्रस्त हो जाता है, जिनका निवारण औषधि-उपचार से नहीं होता, तब टोटकों आदि का आश्रय लिया जाता है। टोटके दिखाई न देने वाली एक ऐसी शक्ति है, जिसका प्रभाव व्यक्ति पर अतिशीघ्र पड़ता है। आयुर्वेद के प्रमाणिक आर्ष ग्रंथों में भी टोने-टोटकों द्वारा चिकित्सा को प्रश्रय दिया गया है। तंत्र में प्रयोग की जाने वाली बहुत-सी वनस्पतियों का प्रयोग टोटकों में भी किया जाता है, इस पर भी तंत्र और टोटका; दोनों का विज्ञान अलग-अलग है, यद्यपि दोनों ही मानव-शरीर पर प्रभाव डालने वाली अदृश्य शक्तियां हैं।

टोटका करने या कराने का कुछ-न-कुछ प्रयोजन अवश्य होता है। स्वास्थय-लाभ, रोग-मुक्ति, जन-कल्याण

या शत्रुओं का दमन आदि, उसी के अनुरूप टोटके में प्रयोज्य वस्तु, समय और दिशा आदि का निर्धारण होता है, जिससे टोटका पूर्ण रूप से सक्षम होकर संबंधित व्यक्ति को प्रभावित कर सके। कुछ टोटके केवल वस्तु के प्रयोग से ही सफल हो जाते हैं, जबकि कुछ टोटकों के प्रयोग में एक विशेष प्रकार की ध्वनि या मंत्र का भी उच्चारित करना आवश्यक होता है। देखने या सुनने में उनका कुछ अभिप्राय: अर्थ समझ में नहीं आता, किन्तु वो गहरा और गूढ़ अर्थ अपने में निहित रखते हैं।

हमारे देश में शहरों की अपेक्षा गांवों में टोटकों का प्रयोग अधिक किया जाता है। शहरों में अत्यधिक सभ्य कहे जाने वाले नवीन शिक्षा से प्रभावित व्यक्ति अधिकांश अतिभौतिकवादी होते हैं, इस कारण उन्हें अप्रत्यक्ष होने वाली क्रियाओं के ऊपर विशेष श्रद्धा व आस्था नहीं होती, तथापि संकट के उपस्थित हो जाने पर, व्याधि आदि के समय चिकित्सकों द्वारा जवाब मिल जाने की स्थिति में नवशिक्षित व्यक्ति भी इच्छा अथवा अनिच्छा से टोटकों का आश्रय लेते दिखाई पड़ जाते हैं। ये बात और है कि वो सही व्यक्ति के पास न पहुँचकर, पाखंडी मौलवी और ओझाओं के फेर में पड़ जाते हैं।

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को टोने-टोटकों पर अधिक विश्वास करते देखा जाता है। बहुत-सी शिक्षित स्त्रियों का तो इस ओर इतना अधिक विश्वास होता है कि वो इस दिशा में, श्रद्धा एवं विश्वास से ओतप्रोत देहाती स्त्रियों की श्रेणी में आ जाती हैं। शहरों की अपेक्षा गांव, देहातों (गांवों) में टोटकों के अधिक प्रचार का एक कारण यह भी है कि वो लोग प्रकृति के अधिक सन्निकट रहते हैं।

शहरों का रहन-सहन, आहार-व्यवहार अथवा कार्यक्षेत्र ऐसा होता है कि वहाँ के लोग वनस्पति, पेड़-पौधे, कीट-पतंगा और पशु-पक्षियों के लाभ से प्रायः अछूते ही रहते हैं, जबकि ग्रामीणों को अपने जीवन का अधिकांश भाग इन्हीं सब के बीच व्यतीत करना पड़ता है। इस कारण वंश-परंपरा से उन्हें वनस्पतियों के गुण, प्रभाव एवं उनके विशेष चमत्कारों का परिचय मिलता रहा है। भांति-भांति की व्याधियां उत्पन्न होने पर कोई देहाती घर के समीप ही उत्पन्न किसी झाड़ी, पौधा, बेल या पेड़ की पत्ती, छाल या जड़ ले आता है और रोगी के किसी अंग में ताबीज या गंडा बांधकर रोग दूर करने में समर्थ हो जाता है।

टोने-टोटके

कुछ टोटके ऐसे हैं जिन्हें करने में कोई मुश्किल पेश नहीं आती, किन्तु कुछ टोटके ऐसे हैं जिन्हें पूरी श्रद्धा के साथ प्रयोग किया जाता है तथा कुछ टोटके ऐसे भी हैं, जिनको प्रयोग करने से पूर्व कुछ मंत्र-जप की क्रिया भी करनी पड़ती है। टोटकों का प्रयोग किसी भी प्रकार से किया जाए, उनका प्रभाव अचूक होता है।

कान का दर्द

अपने इष्ट के समक्ष १०१ बार निम्न मंत्र को पढ़कर किसी कागज पर लिखें और कान दर्द के रोगी के गले में ताबीज बनाकर लटका दें। एक दर्द ही क्या, कान का जो भी विकार होगा, दूर हो जाएगा।

ओम् द्वां द्वांरवासिर्नाभ्याम नमः।

यदि इस मंत्र का जप रोगी स्वयं करे, तो लाभ और भी जल्दी होता है।

आँख की गुहेरी

प्रातः शौचक्रिया से निवृत्त होने के उपरांत और गुदा को धो लेने के पश्चात, दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली को गुहेरी की ओर करके तीन बार यह कहें—"मैं तुझे छू रहा हूं, मैं तुझे छू रहा हूं, मैं तुझे छू रहा हूं," ऐसा कहते हुए उंगली को गुहेरी के काफी समीप ले जाएं किन्तु छुआएं नहीं, गुहेरी समाप्त हो जाएगी।

दाँत का दर्द

किसी भी छोटे बच्चे का जब दूध का दाँत गिरे, तो उसे तांबे के ताबीज में डालकर अपने पास रखने, गले में पहनने या भुजा में बांधने से दाँतों में किसी भी प्रकार का होने वाला दर्द दूर हो जाता है। किन्तु दाँत लड़की का नहीं, बल्कि लड़के का होना चाहिए।

सिर का दर्द

मजीठ के पौधे की जड़, काकजंघा के पौधे की जड़ या द्रोणपुष्पी की जड़—इनमें से किसी भी एक की जड़ को मादलिए में डालकर या काले धागे में बांधकर अथवा लाल या सफेद सूती कपड़े में लपेटकर माथे पर बांधने से हर प्रकार का सिर का दर्द दूर हो जाता है।

किसी भी रविवार के दिन कच्चे नारियल का ताजा पानी निकालकर, खड़े-खड़े केवल चार घूंट पिएं। चुल्लू में लेकर थोड़ा-सा अपने सिर पर डालें और शेष पानी को नाक के दोनों नथुनों से ऊपर की ओर खींचें। यह क्रिया खड़े रहकर और पूर्व दिशा की ओर मुंह करके करें। सिर का कैसा भी दर्द होगा, दूर होगा। आधासीसी का दर्द दूर करने में भी यह क्रिया अद्वितीय है।

मिरगी का दौरा

शनिवार के दिन घोड़बच के सात या ग्यारह टुकड़ों में काले सूत से गांठ देकर एक माला-सी तैयार करें और इस माला को मिरगी के रोगी के गले में डाल दें। यदि मिरगी का दौरा आने वाला होगा तो रुक जाएगा और यदि आया हुआ होगा, तो शीघ्र उससे मुक्ति मिल जाएगी। तत्पश्चात् माला को बिना किसी के टोका लगाए (जब आप माला को घर से लेकर चलें, तो मार्ग में आपको कोई रोके या टोके नहीं) किसी चौराहे पर डाल आएं और पलट कर एक बार भी देखने का प्रयास न करें।

गधे के अगले दाएं पैर के नाखून की अंगूठी (अंगूठी में नग के स्थान पर नाखून लगवाना चाहिए) बाएं हाथ में पहनने से मिरगी का दौरा शांत होता है।

भेड़िए के दांत को मादलिए में डालकर, गले में लटका देने से कुछ ही दिनों में मिरगी के रोग से मुक्ति मिल जाती है।

उल्लू के ११ पंख लें। फिर उन पंखों को एक-एक करके जलाएं। जलाते समय जो धुआं उठे, उसे एक सफेद कपड़े पर लेते रहें। तत्पश्चात् उस कपड़े को तह देकर, शनिवार के दिन प्रातः काल रोगी के हाथ में बांध दें। मिरगी का दौरा रुक जाएगा। यह कपड़ा पुरुष के दाएं हाथ में और स्त्री के बाएं हाथ में बांधना चाहिए।

मटर के दाने के बराबर खूनखराबा के ११ टुकड़ों को सफेद रंग के सूती, पतले कपड़े में बांधकर और छोटी-छोटी पोटलियां बनाकर, उन सभी को एक छोटी-सी थैली में रखकर, थैली को सूत से बांधें और रोगी के गले में डाल दें। मिरगी का रोग दूर हो जाएगा। यह बड़ा ही करामाती टोटका है।

जंगली सुअर के नाखून को अंगूठी की भांति गोल बनवाकर, मंगलवार के दिन प्रातःकाल रोगी के दाहिने हाथ की छोटी उंगली में धारण कराएं। निश्चित रूप से लाभ होगा।

मिरगी के रोगी को (वो स्त्री हो या पुरुष) रजःस्वला स्त्री के हाथों से स्पर्श करवा दें। उस पर आया दौरा शांत हो जाएगा।

किसी भी नदी के किनारे जाकर उसकी बालू से मृगचना नामक दो कीड़े निकालकर घर ले आएं। ये कीड़े बालू के अंदर छिपे रहते हैं। कपड़े की पट्टी में एक कीड़े को बांधकर गले में तथा दूसरे कीड़े को भुजा पर बांध दें। मिरगी का कैसा भी भयंकर दौरा होगा, शांत हो जाएगा।

ज्वर-नाशक टोटके

तिजारी ज्वर—रोगी स्त्री हो या पुरुष, उसके पैर के नाखून से सिर की शिखा तक लंबाई में सूती लाल धागा नापकर उसमें नील की जड़ लपेटकर, रोगी की कमर में बांध दें, तिजारी ज्वर (पारी का बुखार) उतर जाएगा।

रोगी की कमर में काले सर्प की केंचुली बांध देने से तीसरे दिन आता रहने वाला बुखार हमेशा के लिए दूर हो जाता है।

सफेद ओंगा के पौधे की जड़ लाल कपड़े में लपेटकर, रोगी की भुजा में बांध देने से ज्वर शीघ्र उतर जाता है।

चौथैया ज्वर—रविवार के दिन जिंदा करकैटा (गिरगिट) की पूंछ काटकर रोगी की चोटी (यदि वो स्त्री हो, तो) या भुजा में बांध देने से चौथैया ज्वर उतर जाता है और फिर नहीं चढ़ता है। यह ज्वर प्रत्येक चार दिन बाद आता रहता है।

जिस दिन रोगी को ज्वर आना हो, उस दिन प्रातःकाल अगस्त्य के ११ फूलों की माला बनाकर रोगी के गले में पहना दें। संध्याकाल में जब फूल मुरझा जाएं, तब उस माला को किसी चौराहे पर डाल आएं या डलवा दें। यह प्रयोग तीन दिन तक करें। इससे चौथे दिन चढ़ने वाला ज्वर सदा के लिए चला जाएगा।

संक्रामक ज्वर—हंसराज की जड़ के रस में दो कपड़े भिगोकर छाया में सुखाएं। ज्वरग्रस्त व्यक्ति की चारपाई पर एक कपड़ा बिछा दें और दूसरा उसे ओढ़ाएं। तीन दिन तक यह क्रिया करें। जब व्यक्ति रोगमुक्त हो जाए, तो घर से दूर एक गड्ढा खोदकर उसमें दोनों कपड़ों को जलाकर गड्ढा ढांप दें या फिर योंही कपड़ों को गाड़ दें।

पारी का ज्वर—किसी भी रविवार या मंगलवार के दिन रोगी के पूरे शरीर से पोठी नामक मछली को स्पर्श कराकर, किसी चौराहे पर फेंक दें। इससे पारी का ज्वर शांत हो जाता है और रोगी को फिर कभी दोबारा इस ज्वर से सामना नहीं करना पड़ता है।

महाज्वर—भटकटैया (बड़ी कटेरी) की जड़ को सिर से बांध देने से अत्यंत तीव्र ज्वर भी शांत हो जाता है।

संनिपात ज्वर—निर्गुण्डी पौधे के पुष्प तथा छाल को अश्विनी नक्षत्र में लाकर बारीक पीस लें तथा बकरे के बालों में लपेटकर, लाल कपड़े की पट्टी द्वारा रोगी के बांध दें। संनिपात ज्वर दूर हो जाएगा। स्त्री की बायीं और पुरुष की दाहिनी भुजा में इसे बांधना चाहिए।

पुष्य नक्षत्र के अवधिकाल में पीपल की टहनी से दातुन करने से कभी न उतरने वाला ज्वर भी उतर जाता है।

मलेरिया ज्वर—रविवार की संध्या को एक मिट्टी

के घड़े में जल भरकर और उसमें सोने की एक अंगूठी डालकर, एक घंटे के बाद रोगी को किसी चौराहे पर बिठाकर, उस घड़े के पानी से स्नान करा दें और सोने की अंगूठी निकालकर रख लें। मलेरिया बुखार ठीक हो जाएगा।

रविवार या मंगलवार को मलेरिया ज्वर से पीड़ित व्यक्ति दाएं हाथ से अपना कलेजा पकड़कर कहे—"जब मेरे ज्वर (या बुखार) में आराम हो जाएगा, तब मैं मछली चढ़ाऊंगा।" यह कहने के उपरांत जब ज्वर उतरना प्रारंभ हो जाए अथवा ज्वर पूरी तरह से उतर जाए, तो फिर रविवार या मंगलवार के दिन एक लकड़ी में दो मछलियां बांधकर चौराहे पर रख आएं। मलेरिया ज्वर से छुटकारा पाने का यह एक उत्तम टोटका है।

सामान्य ज्वर—सफेद जयंती की जड़ को सिर पर धारण करने से सभी प्रकार के ज्वरों का नाश हो जाता है।

सोंठ को धागे में पिरोकर, उसकी माला-सी बनाकर गले में धारण करें, इस क्रिया से सामान्य ज्वर दूर हो जाता है।

एकाहिक ज्वर—शनिवार के दिन सूखे हुए ताड़ के वृक्ष की जड़ के नीचे की मिट्टी लाकर रविवार को प्रातः या संध्या के समय उस मिट्टी को थोड़े पानी में भिगोकर माथे पर लेप करें। ज्वर उतरने पर फिर नहीं चढ़ेगा।

जिस दिन ज्वर आने वाला हो, उस दिन सूर्य निकलने से पूर्व जलाशय आदि के समीप केकड़ा के बिल की गीली मिट्टी लाकर, एकाहिक ज्वर के रोगी के सिर पर उस मिट्टी का लेप-सा चढ़ा दें। ज्वर का क्रम टूट जाएगा और फिर नहीं आएगा।

विषम ज्वर—एक सप्ताह तक काली तुलसी की

पत्तियों की माला गले में पहनने से विषम ज्वर शांत हो जाता है।

सफेद कनेर की जड़ को सिर पर धारण करने से भी विषम ज्वर से मुक्ति मिल जाती है।

चिड़चिड़ा पौधे की जड़ को उखाड़कर, उसमें सूती धागे की सात लपेट देकर, किसी भी रविवार के दिन हाथ में बांध देने से विषम ज्वर का नाश होता है।

शिवलिंगी बूटी के १०८ बीजों को किसी पीले सूती कपड़े में लपेटकर रोगी के गले में डाल दें। इस क्रिया से पुराने से पुराना विषम ज्वर भी शरीर छोड़कर भाग जाता है।

सात कटोरी जल में सात तोले मजीठ के टुकड़े और जीर्ण ज्वर के रोगी का कोई कपड़ा (कमीज या बनियान आदि) उस जल में डालकर उबालें और निकालकर छाया में सुखाएं और रोगी को पन्द्रह दिनों तक पहनाएं; इससे ज्वर उतर जाएगा।

शीत ज्वर—लहसुन की छोटी-छोटी सात गांठें लेकर उसकी लुगदी बना लें। इस लुगदी को काले सूती कपड़े में लपेटकर, शीत ज्वर से पीड़ित व्यक्ति के दाहिने पैर के अंगूठे से तीन घंटे के लिए बांध दें। फिर खोलकर किसी चौराहे के बीचोंबीच फिकवा दें, रोगी ज्वर से मुक्त हो जाएगा। इस क्रिया में इस बात का ध्यान रहना चाहिए कि लहसुन की लुगदी का स्पर्श अंगूठे से नहीं होना चाहिए। वो कपड़े में ही लिपटी रहे और तभी बांधा जाए।

किसी भी स्त्री के मासिक धर्म से (रक्त से) भीगे हुए कपड़े की धूनी रोगी को देने से शीत ज्वर उतर जाता है।

रविवार को सफेद धतूरे की जड़ लाकर स्त्री के

बाएं और पुरुष के दाएं हाथ में बांधने से भी शीघ्र लाभ हो जाता है।

लाल सूती कपड़े में मकड़ी का जाला लपेटकर बत्ती बनाएं और सरसों के शुद्ध तेल में डालकर काजल तैयार कर लें। मंगल व रविवार के दिन, दिन में सात बार शीत ज्वर से पीड़ित रोगी की आंखों में यह काजल लगा देने से ज्वर का क्रम रुक जाता है।

अन्य ज्वरों में—बबूल की सफेद जड़ सफेद धागे में लपेटकर भुजा पर बांध लें। इस टोटके को केवल शनिवार के दिन प्रातः करना चाहिए।

जिस व्यक्ति को केवल रात्रि में ही ज्वर चढ़ता हो, उसके सिर पर कमल की जड़ रख देनी चाहिए। इस टोटके का प्रभाव अतिशीघ्र पड़ता है। यदि किसी कारणवश कमल की जड़ (विस) न मिल पाए, तो फिर काकजंघा की जड़ को रोगी के सिर पर धारण करा देना चाहिए।

मकोय की जड़ को कान से बांधने से भी ज्वर में आराम हो जाता है। ज्वर चाहे जिस प्रकार का हो, यह ज्वर की तेजी रोकने के लिए है।

एक दिन छोड़कर दूसरे दिन ज्वर आता हो और किसी भी प्रकार से जाने का नाम न ले रहा हो, तो शनिवार या रविवार की शाम को, जब सूर्यास्त हो रहा हो और आधा सूर्य डूब गया हो, तब मकान की छत पर या जहां से सूर्य दिखाई दे रहा हो, वहां से सूर्य को देखते हुए अपने बाएं पैर के जूते को उल्टा करके जमीन पर सात बार मारें और कहें कि ज्वर छूट जाओ और फिर कभी मत आना। एक या दो बार यह क्रिया करने से ही ज्वर आना बंद हो जाएगा और फिर कभी नहीं चढ़ेगा।

भूत ज्वर—कभी-कभी भूतादि के प्रकोप से अथवा भयभीत हो जाने से ज्वर चढ़ आता है, जो सरलता से नहीं उतरता है। इस प्रकार के ज्वर में पीले धागे में लहसुन की कलियां छीलकर पिरों दें और गले में धारण कर लें या रोगी को कराएं। इस क्रिया से भूत के डर या प्रकोप से चढ़ने वाला ज्वर प्रभावहीन हो जाता है।

रविवार के दिन हुड़हुड़ पौधे की जड़ कान पर रखने मात्र से ज्वर उतर जाता है।

शनिवार की संध्या को भिलावे के एक फल को काले सूत से काले रंग के कपड़े में बांधने भूतबाधा और भूतभय से उत्पन्न ज्वर से ग्रसित व्यक्ति के दाहिने हाथ में बांध देने से उसका ज्वर ठीक हो जाता है। जब एक सप्ताह तक पुनः ज्वर न आए, तो धागे को खोलकर किसी चौराहे पर बिना टोक लगाए रख आएं और फिर पीछे मुड़कर न देखें।

उस कन्या के हाथों से जो अभी ऋतुमयी न हुई हो अर्थात् जिसे माहवारी प्रारंभ न हुई हो, रोगी के दाहिनी भुजा में सफेद सूत में लिपटी हुई सहदेवी की जड़ बंधवा देने से भूत के भय से उत्पन्न ज्वर शीघ्र उतर जाता है।

रोगी व्यक्ति को एक बालिश्त नापकर, उस पर सोमवार के दिन प्रातःकाल अनार की लेखनी बनाकर रक्त चंदन की स्याही से ग्यारह स्थानों पर "ओम् नमः शिवाय" लिखकर, दाहिने हाथ में बांध देने मात्र से ही प्रेतादि के प्रकोप पर चढ़ा हुआ ज्वर समाप्त हो जाता है। रोगमुक्त हो जाने पर धागा खोलकर किसी चलते पानी में छोड़ देना चाहिए।

अपामार्ग की जड़ को सूती धागे में लपेटकर, भुजा पर बांध देने से भूतादि ज्वर की तीव्रता में कमी आ जाती है।

चमत्कारी मंत्र और सिद्धियां

मंत्र एवं तांत्रिक क्रियाओं में छोटी-बड़ी, सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति सुलभ है। श्रद्धा और विश्वास के संबल पर लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला तांत्रिक एवं मंत्र साधक अतिशीघ्र लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

गुप्त तांत्रिकों, महात्माओं तथा सिद्ध पुरुषों के अनुभवों तथा प्राचीन ग्रन्थों के मंथन स्वरूप जो नवनीत उपलब्ध हुआ, पुस्तक में उसका वृतांत प्रस्तुत है।

A.H.W. CHUNNU SERIES



चुन्नू पॉकेट बुक्स